NATIONAL EDUCATION POLICY

BRILLIANT BOOKS

व्याकरण सुमन

6

नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुरूप

व्याकरण सुमन

6

अशोक कुमार गुप्ता
एम० ए०

BRILLIANT

BRILLIANT BOOKS®
A-9, झिलमिल इण्डस्ट्रियल एरिया,
दिलशाद गार्डन मेट्रो स्टेशन के पीछे,
दिल्ली–110 095
email : info@brilliantbooks.co.in
www.brilliantbooks.co.in
Tollfree : 1800 270 1317

इस पुस्तक को यथासम्भव शुद्ध एवं त्रुटिरहित रूप में प्रस्तुत करने का प्रत्येक सम्भव प्रयास किया गया है। फिर भी इसमें कोई कमी अथवा त्रुटि रह गयी हो तो उससे कारित क्षति अथवा सन्ताप के लिए लेखक, सम्पादक, प्रकाशक एवं मुद्रक का कोई दायित्व नहीं होगा। प्राप्त सुझावों अथवा त्रुटियों का समायोजन आगामी संस्करण में कर लिया जायेगा।

© प्रकाशकाधीन

कला कार्य
मलय चक्रवर्ती

प्रकाशक एवं मुद्रक
विद्या प्रकाशन मन्दिर प्रा० लि०

प्रस्तावना

भाषा ही मानव को अन्य प्राणियों से श्रेष्ठ बनाती है। बच्चा परिवार से भाषा सीखना आरम्भ करता है और विद्यालय में उसका उचित प्रयोग करना सीखता है। हमें भाषा शुद्ध ढंग से बोलना और लिखना आना चाहिए। इसके लिए विद्वानों ने कुछ नियम बनाए हैं। हमें इन्हीं नियमों की सही जानकारी के लिए उसके व्याकरण को जानना आवश्यक है। इससे भाषा का उचित प्रयोग करना आ जाता है।

छात्र प्रारम्भ से ही व्याकरण को कठिन विषय के रूप में देखने लगते हैं। अतः आवश्यक है कि विद्यार्थियों को व्याकरण का ज्ञान अति सरस और सरल ढंग से कराया जाए। इसी बात को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत पुस्तक-शृंखला **व्याकरण-सुमन** की रचना की गई है।

इस शृंखला की मुख्य विशेषताएँ हैं—

- सरल भाषा और रोचक रचनात्मक गतिविधियाँ।
- आकर्षक चित्र तथा दैनिक जीवन से जुड़े उद्धरण।
- खेल-खेल में व्यावहारिक भाषा के माध्यम से व्याकरण के नियमों का सहज ज्ञान।
- रटने की जगह स्वयं प्रयोग से सीखने पर बल।
- स्तरानुकूल सरल से कठिन की ओर बढ़ता ज्ञान।

हमारा प्रयास रहा है कि हम व्याकरण को बोझिल न होने दें और उसे कुछ इस तरह से प्रस्तुत करें जिससे विद्यार्थी व्याकरण को रुचि से आत्मसात् कर सकें। यही अभिरुचि पैदा करना हमारा ध्येय है। नये पाठ्यक्रम को ध्यान में रखते हुए इस शृंखला में वस्तुनिष्ठ प्रश्नों का अधिकाधिक समावेश किया गया है।

आशा है, यह पुस्तक-शृंखला विद्यार्थियों के लिए रुचिकर और उपयोगी सिद्ध होगी। शिक्षकों और विद्वानों के सुझावों का सदैव स्वागत है।

—लेखक

विषय-सूची

1. भाषा, लिपि और व्याकरण (Language, Script and Grammar) ... 05
2. वर्ण-विचार (Phonology) ... 08
3. शब्द-विचार (Morphology) ... 13
4. संज्ञा (Noun) ... 17
5. संज्ञा : लिंग (Noun : Gender) ... 20
6. संज्ञा : वचन (Noun : Number) ... 25
7. कारक (Case) ... 29
8. सर्वनाम (Pronoun) ... 32
9. विशेषण (Adjective) ... 36
10. क्रिया (Verb) ... 40
11. क्रिया : काल और वाच्य (Verb : Tense and Voice) ... 43
12. अव्यय/अविकारी शब्द (Indeclinable Words) ... 49
13. शब्द-रचना : उपसर्ग और प्रत्यय (Word Formation : Prefix and Suffix) ... 54
14. समास (Compound) ... 59
15. सन्धि (Joining) ... 63
16. वर्तनी (Spelling) ... 67
17. वाक्य-विचार (Syntax) ... 68
18. विराम-चिह्न (Punctuation Marks) ... 71
19. शब्द-भण्डार (Glossary) ... 74
20. मुहावरे और लोकोक्तियाँ (Idioms and Proverbs) ... 81
21. संवाद-लेखन (Dialogue Writing) ... 87
22. अनुच्छेद-लेखन (Paragraph Writing) ... 90
23. कहानी-लेखन (Story Writing) ... 92
24. पत्र-लेखन (Letter Writing) ... 94
25. निबन्ध-लेखन (Essay Writing) ... 98
26. अपठित बोध (Unseen Passages) ... 103

- Periodic Test : Term-1 ... 107
- Half-Yearly Test Paper ... 108
- Periodic Test : Term-2 ... 110
- Annual Test Paper ... 111

1 भाषा, लिपि और व्याकरण
Language, Script and Grammar

भाषा

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज में रहकर मनुष्य अपने मन में उठने वाले विचारों और भावों को दूसरों के सामने प्रकट करना चाहता है। इस कार्य के लिए वह भाषा का प्रयोग करता है। भाषा न हो तो सामाजिक कार्य ठीक ढंग से सम्पन्न नहीं किए जा सकते। इस प्रकार, सामाजिक व्यवहार और सामाजिक विकास में भावों तथा विचारों के आदान-प्रदान का प्रमुख साधन भाषा है। भाषा के अन्तर्गत वाणी और अर्थ दोनों आते हैं। इसलिए हम कह सकते हैं कि भाषा सार्थक होती है।

संसार में अंग्रेज़ी, हिन्दी, चीनी, उर्दू आदि अनेक भाषाएँ बोली जाती हैं।

भाषा के रूप

प्रयोग के आधार पर भाषा के दो रूप दिखाई देते हैं—

1. मौखिक भाषा—भाषा का ऐसा रूप जिसमें मन के भाव बोलकर प्रकट किए जाते हैं तथा सुनकर समझे जाते हैं, मौखिक भाषा कहलाती है; जैसे—ईशान निक्की को कॉलेज के विषय में बता रहा है।

ईशान अपने मन के भाव बोलकर प्रकट कर रहा है। निक्की उसके मन के भाव सुनकर समझ रही है। यह भाषा का मौखिक रूप है।

2. लिखित भाषा—भाषा का ऐसा रूप जिसमें मन के भाव लिखकर प्रकट किए जाते हैं तथा पढ़कर समझे जाते हैं, लिखित भाषा कहलाती है; जैसे—गरिमा समाचार-पत्र पढ़ रही है।

गरिमा समाचार-पत्र को पढ़कर लिखने वाले के मन के भावों को समझ रही है। समाचार-पत्र में लिखने वाले ने अपने मन के भाव प्रकट किए हैं। यह भाषा का लिखित रूप है।

भाषा का लिखित रूप बहुत महत्त्वपूर्ण है क्योंकि—

- यह ज्ञान-विज्ञान को अगली पीढ़ी के लिए सुरक्षित रखता है।
- भाषा को मानकता तथा स्थायी रूप प्रदान करता है।

भाषा का तीसरा रूप भी माना गया है। क्रिकेट समेत विभिन्न खेलों में निर्णायक संकेतों के माध्यम से अपने निर्णयों को व्यक्त करते हैं और सब खिलाड़ी उनके संकेतों को समझते भी हैं। यह भाषा का सांकेतिक रूप है।

बोली—भाषा का मौखिक रूप बोली कहलाता है। यह सीमित अथवा बहुत कम क्षेत्रों में बोली जाती है। इसमें साहित्य की रचना नहीं की जाती है। मैथिली, राजस्थानी, बुन्देलखण्डी आदि कई बोलियाँ हैं, जिनका प्रयोग भारत के भिन्न-भिन्न भागों में किया जाता है।

अब भारत में 22 (बाईस) भाषाएँ प्रचलित हैं।

बाईस भाषाएँ—1. असमिया, 2. बांग्ला, 3. बोड़ो, 4. डोगरी, 5. गुजराती, 6. हिन्दी, 7. कन्नड़, 8. कश्मीरी, 9. कोंकणी, 10. मैथिली, 11. मलयालम, 12. मणिपुरी, 13. मराठी, 14. नेपाली, 15. ओड़िया, 16. पंजाबी, 17. संस्कृत, 18. सन्थाली, 19. सिन्धी, 20. तमिल, 21. तेलुगू तथा 22. उर्दू।

राजभाषा—भारत की संविधान सभा ने 14 सितम्बर, 1949 को हिन्दी को भारत की राजभाषा घोषित किया था। इसीलिए प्रतिवर्ष 14 सितम्बर को पूरे देश में हिन्दी-दिवस मनाया जाता है।

हिन्दी की उपयोगिता—संस्कृत भाषा से लेकर पालि, प्राकृत, अपभ्रंश आदि सोपानों से गुज़रती हुई हिन्दी आज समूचे भारत की सम्पर्क भाषा बन गई है। हिन्दी का विकास अनेक रूपों में हो रहा है। यह सामान्य प्रयोग की भाषा, राष्ट्रभाषा, राजभाषा, साहित्यिक भाषा और अन्तर्राष्ट्रीय भाषा के रूप में प्रयुक्त हो रही है। हिन्दी अपने देश में प्रथम भाषा और द्वितीय भाषा के रूप में पढ़ाई जा रही है।

हिन्दी भाषा का क्षेत्र उत्तर प्रदेश, हिमाचल प्रदेश, हरियाणा, राजस्थान, मध्य प्रदेश, बिहार, उत्तराखण्ड, झारखण्ड, छत्तीसगढ़ राज्यों तथा दिल्ली एवं अण्डमान-निकोबार द्वीप-समूह तक फैला हुआ है। पंजाब, महाराष्ट्र, गुजरात, पश्चिम बंगाल आदि राज्यों में यह सम्पर्क भाषा के रूप में प्रयुक्त की जाती है।

हिन्दी को विश्व की वैज्ञानिक भाषाओं में से एक माना जाता है। यही नहीं, हिन्दी सीखना भी बहुत आसान है। हिन्दी के केवल 50-55 वर्णों से संसार की प्रत्येक भाषा को बोला और लिखा जा सकता है।

लिपि

लिखित भाषा में प्रत्येक ध्वनि को व्यक्त करने के लिए कोई-न-कोई चिह्न होता है, जिसे वर्ण कहा जाता है। भाषा में वर्णों की जो बनावट होती है अर्थात् इनको लिखने का जो ढंग है, उसे लिपि कहते हैं। हिन्दी भाषा की लिपि 'देवनागरी लिपि' है। उर्दू भाषा की लिपि 'फ़ारसी' और अंग्रेज़ी की 'रोमन लिपि' है। देवनागरी लिपि का विकास 'ब्राह्मी लिपि' से हुआ है। यह बाईं से दाईं ओर लिखी जाती है जबकि फ़ारसी लिपि दाईं से बाईं ओर लिखी जाती है।

व्याकरण

व्याकरण द्वारा भाषा के शुद्ध रूप का ज्ञान होता है। व्याकरण के नियम भाषा को शुद्ध रूप से बोलना और लिखना सिखाते हैं। भाषा के शुद्ध रूप और उसके शुद्ध प्रयोग का ज्ञान कराने वाला शास्त्र व्याकरण कहलाता है।

अत: भाषा के सही प्रयोग के लिए व्याकरण का अच्छा ज्ञान आवश्यक है। सामान्यत: हिन्दी व्याकरण में भाषा का अध्ययन तीन स्तरों पर किया जाता है—

1. **वर्ण-विचार**—व्याकरण के इस विभाग में वर्णों के स्वरूप, उनके भेद आदि के बारे में विचार किया जाता है।
2. **शब्द-विचार**—व्याकरण के इस विभाग में शब्दों के स्वरूप, भेद, प्रकार, लिंग, वचन आदि पर विचार किया जाता है।
3. **वाक्य-विचार**—व्याकरण के इस विभाग में वाक्य रचना, विराम-चिह्न आदि की चर्चा की जाती है।

1. दिए गए उत्तरों में से सही विकल्प पर सही (✓) का चिह्न लगाइए—

(क) भावों तथा विचारों के आदान-प्रदान के साधन को क्या कहते हैं?

(i) व्याकरण (ii) भाषा (iii) लिपि

(ख) संविधान में हिन्दी को किस रूप में मान्यता दी गई है?

(i) सम्पर्क भाषा (ii) राजभाषा (iii) राष्ट्रभाषा

(ग) इनमें से कौन-सी लिपि दाईं से बाईं ओर लिखी जाती है?

(i) देवनागरी (ii) रोमन (iii) फ़ारसी

(घ) व्याकरण के जिस विभाग में विराम-चिह्नों की जानकारी दी जाती है, उसे क्या कहते हैं?

(i) वाक्य-विचार (ii) वर्ण-विचार (iii) शब्द-विचार

2. दिए गए वाक्यों को पूरा कीजिए—

(क) भाषा के दो रूप होते हैं— ..... और ..... ।

(ख) हम कई भाषाओं को एक ..... में लिख सकते हैं।

(ग) 14 सितम्बर को ..... के रूप में मनाया जाता है।

(घ) शुद्ध बोलना और लिखना सीखने में ..... हमारी सहायता करता है।

3. सही वाक्य के सामने सही (✓) का तथा गलत वाक्य के सामने गलत (✗) का चिह्न लगाइए—

(क) मन के भावों को बोलकर प्रकट करना मौखिक भाषा है। ☐

(ख) भारत की राजभाषा अंग्रेज़ी है। ☐

(ग) भाषा को लिखने का ढंग लिपि कहलाता है। ☐

(घ) अंग्रेज़ी भाषा की लिपि फ़ारसी है। ☐

4. लिपि से आप क्या समझते हैं ? निम्नलिखित भाषाओं की लिपियों के नाम लिखिए—

हिन्दी ..... अंग्रेज़ी ..... उर्दू .....

5. निम्नलिखित में भाषा का कौन-सा रूप प्रयोग होता है?

(क) वाद-विवाद प्रतियोगिता में ..... (ख) प्रार्थना-पत्र में .....

(ग) टी०वी० समाचार में ..... (घ) ट्रैफ़िक संचालन में .....

6. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए—

(क) भाषा किसे कहते हैं? इसके कितने रूप होते हैं?

(ख) भारत की राजभाषा का नाम बताइए। इसे राजभाषा कब घोषित किया गया?

(ग) लिपि किसे कहते हैं? उर्दू की लिपि 'फ़ारसी' अन्य लिपियों से किस प्रकार भिन्न है?

(घ) व्याकरण के कितने विभाग होते हैं? इनमें किन-किन बातों पर विचार किया जाता है?

(ङ) व्याकरण हमें क्या सिखाता है?

रचनात्मक गतिविधियाँ

1. दस रुपये के नोट पर अनेक भाषाओं में 'दस रुपये' लिखा होता है। आप उनमें से कितनी भाषाएँ पढ़ या समझ सकते हैं? कक्षा में इस विषय पर चर्चा कीजिए।

2. दो ऐसी गतिविधियाँ लिखिए, जो आप अपने विद्यालय में हिन्दी-दिवस के अवसर पर आयोजित कर सकते हैं।

2

वर्ण-विचार
Phonology

भाषा का उच्चारण ध्वनियों से होता है। ध्वनियाँ असंख्य हैं किन्तु भाषा के अन्तर्गत कुछ ध्वनियों को ही स्वीकार किय गया है। प्रत्येक स्वीकृत ध्वनि को लिखने के लिए एक विशेष चिह्न निर्धारित किया गया है। यह विशेष चिह्न वर्ण कहलाता है वर्ण भाषा की सबसे छोटी इकाई है। इस प्रकार, वर्ण वह छोटी-से-छोटी स्वीकृत ध्वनि है जिसके और टुकड़े नहीं किए ज सकते; जैसे—अ, इ, व, ह आदि।

वर्णमाला

किसी भाषा में जितने वर्णों का प्रयोग होता है, उन वर्णों के क्रमसमूह को वर्णमाला कहते हैं।

मानक हिंदी की वर्णमाला इस प्रकार है—

स्वर— अ आ इ ई उ ऊ ऋ ए ऐ ओ औ

अनुस्वार ⟵ अं
विसर्ग ⟵ अः
} ये स्वर नहीं हैं। इन्हें अयोगवाह कहते हैं।
अनुनासिक ⟵ अँ

व्यंजन—

क	ख	ग	घ	ङ	कवर्ग
च	छ	ज	झ	ञ	चवर्ग
ट	ठ	ड	ढ	ण	टवर्ग
त	थ	द	ध	न	तवर्ग
प	फ	ब	भ	म	पवर्ग
य	र	ल	व		अंत:स्थ
श	ष	स	ह		ऊष्म
क्ष	त्र	ज्ञ	श्र		संयुक्त व्यंजन
ड़	ढ़				उत्क्षिप्त व्यंजन
ऑ	ज़	फ़			आगत/गृहीत ध्वनियाँ

पंचम वर्ण

स्पर्श

- सामान्यत: सभी व्यंजन वर्णों में 'अ' स्वर मिला होता है।
  जैसे— क् + अ + क; त् + अ = त
- 'अ' रहित व्यंजन को हल् (्) लगाकर लिखते हैं; जैसे—क्, ख्, ग् आदि।
- स्वरों की सहायता के बिना व्यंजनों का उच्चारण नहीं हो सकता है।

वर्ण-भेद

हिन्दी में वर्ण के दो भेद होते हैं—(क) स्वर तथा (ख) व्यंजन।

(क) स्वर

जिन वर्णों का उच्चारण करते समय मुख से निकलने वाली वायु बिना रुकावट के बाहर आ जाती है, उन्हें स्वर कहते हैं। ये बारह (11) स्वर हैं।

स्वर दो प्रकार के होते हैं—

1. **ह्रस्व स्वर**—जिन स्वरों का उच्चारण सबसे कम समय में होता है, उन्हें ह्रस्व स्वर कहते हैं। ये चार वर्ण ह्रस्व स्वर हैं—अ इ उ ऋ।

2. **दीर्घ स्वर**—जिन स्वरों का उच्चारण करने में ह्रस्व स्वरों से लगभग दो-गुना समय लगता हो, उन्हें दीर्घ स्वर कहते हैं। ये सात वर्ण दीर्घ स्वर हैं—आ ई ऊ ए ऐ ओ औ।

स्वरों के मात्रा-चिह्न

स्वरों के मात्रा-चिह्न निश्चित हैं। इन चिह्नों का प्रयोग व्यंजनों के साथ किया जाता है। व्यंजन स्वयं में आधे होते हैं। इनके साथ स्वर लगाने पर ये पूर्ण हो जाते हैं। इनका उच्चारण स्वरों की सहायता से ही किया जा सकता है। इनके साथ स्वर मात्राओं के रूप में प्रयुक्त होते हैं।

(ख) व्यंजन

जिन वर्णों का उच्चारण करते समय हवा रुकावट के साथ मुँह से बाहर निकलती है और उनके उच्चारण में स्वरों की सहायता लेनी पड़ती है, उन्हें व्यंजन कहते हैं। व्यंजन निम्नलिखित चार प्रकार के होते हैं—

1. **स्पर्श व्यंजन**—जिन व्यंजनों का उच्चारण करते समय वायु कण्ठ, तालु, मूर्धा या ओठों का स्पर्श करके बाहर आती है, उन्हें स्पर्श व्यंजन कहते हैं। 'क' से लेकर 'म' तक के 25 वर्ण स्पर्श व्यंजन हैं।

क्रम	व्यंजन	वर्ग	उच्चारण-स्थान
1.	क्, ख्, ग्, घ्, ङ्	कवर्ग	कण्ठ
2.	च्, छ्, ज्, झ्, ञ्	चवर्ग	तालु
3.	ट्, ठ्, ड्, ढ्, ण्	टवर्ग	मूर्धा
4.	त्, थ्, द्, ध्, न्	तवर्ग	दाँत
5.	प्, फ्, ब्, भ्, म्	पवर्ग	ओठ

2. अन्तःस्थ व्यंजन—इन व्यंजनों का उच्चारण स्वरों और व्यंजनों के मध्य का है। इनका उच्चारण जी दाँत और ओठों के स्पर्श से होता है। ये अर्द्ध-स्वर भी कहलाते हैं। य्, र्, ल्, व् अन्तःस्थ व्यंजन हैं।

3. ऊष्म व्यंजन—इन व्यंजनों का उच्चारण करते समय मुख में ऊष्मा (गर्मी-सी) उत्पन्न होती है। ऐसा वायु के टकराने से होता है। श्, ष्, स्, ह् ऊष्म व्यंजन हैं।

4. उत्क्षिप्त व्यंजन—इन व्यंजनों का उच्चारण करने में वायु जीभ से टकराकर वापस आती है और फि निकलती है। इनका उच्चारण-स्थान मूर्धा है। 'ड़' और 'ढ़' उत्क्षिप्त व्यंजन हैं।

अन्य प्रमुख ध्वनियाँ (वर्ण/चिह्न)

अयोगवाह

'अं', 'अः' और 'अँ' ऐसी ध्वनियाँ हैं जो न तो स्वर हैं और न ही व्यंजन। इन्हें अयोगवाह कहते हैं। अयो अर्थ है—जो योग न होने पर भी साथ रहें। 'अं', 'अः' और 'अँ' स्वरों और व्यंजनों में न रहने पर भी इनके सा होते हैं। आइए, इनके बारे में और जानें—

अनुस्वार—'अं' या इसका चिह्न (ं) अनुस्वार कहलाता है। इसका उच्चारण नाक से होता है। इसका प्र के ऊपर बिन्दु के रूप में किया जाता है; जैसे—हंस, वंश आदि।

विसर्ग—'अः' या इसका चिह्न (ः) विसर्ग भी कहलाता है। इसका प्रयोग व्यंजन के बाद किया जाता है उच्चारण व्यंजन के बाद 'ह्' की तरह करते हैं; जैसे—प्रातः, अतः आदि।

अनुनासिक—'अँ' या इसका चिह्न (ँ) अनुनासिक कहलाता है। इसे चन्द्रबिन्दु भी कहते हैं। इसका नाक और मुँह से होता है; जैसे—मुँह, आँगन आदि।

'र' के प्रचलित रूप (र्‍ , ्र , ्र)

संयुक्त 'र्' के तीन प्रचलित रूप होते हैं— र्‍ , ्र और ्र।

जब स्वररहित 'र्' किसी स्वरयुक्त व्यंजन से मिलता है तो उसका रूप (र्‍) होता है और वह अपने साथ जु अगले वर्ण के ऊपर लगता है; जैसे—

र् + म = र्म (क र् म) कर्म

र् + य = र्य (का र् य) कार्य

जब स्वररहित व्यंजन किसी स्वरयुक्त 'र' से मिलता है तो उसके दो रूप ्र और ्र होते हैं और वे अपने स वाले वर्ण के नीचे लगते हैं; जैसे—

क् + र = क्र (क् र म) क्रम

ट् + र = ट्र (रा ष ट् र) राष्ट्र

संयुक्त व्यंजन

ऐसे व्यंजन जो दो भिन्न व्यंजनों के योग से बनते हैं, संयुक्त व्यंजन कहलाते हैं। आपस में मिल जाने से उ ही बदल जाता है; जैसे—

क् + ष = क्ष	— क्षमा, कक्षा	ज् + ञ = ज्ञ	— ज्ञान, संज्ञा
त् + र = त्र	— पत्र, त्रिशूल	श् + र = श्र	— श्रम, विश्राम
द् + य = द्य	— विद्या, उद्योग	क् + त = क्त	— भक्त, युक्ति

द्वित्व व्यंजन

जब कोई व्यंजन अपने जैसे समरूप व्यंजन से मिलता है तो ऐसे संयोग को द्वित्व व्यंजन के नाम से जाना जाता है; जैसे—

क् + क = क्क — पक्का, मक्का
च् + च = च्च — बच्चा, सच्चा
ट् + ट = ट्ट — लट्टू, मिट्टी
प् + प = प्प — चप्पल, थप्पड़
ल् + ल = ल्ल — लल्लू, पल्लवी
ज् + ज = ज्ज — सज्जा, लज्जा

संयोग

दो व्यंजनों के मिलने पर जहाँ द्वित्व नहीं होता, वहाँ संयोग होता है; जैसे—

क् + ख = क्ख — मक्खी, मक्खन
च् + छ = च्छ — लच्छा, अच्छाई
ट् + ठ = ट्ठ — लट्ठ, मट्ठा
त् + थ = त्थ — कत्था, मत्था

वर्ण-विच्छेद

किसी शब्द में प्रयुक्त वर्णों को अलग-अलग किया जाता है तो उसे वर्ण-विच्छेद कहते हैं; जैसे—

भारत = भ् + आ + र् + अ + त् + अ
विद्यालय = व् + इ + द् + य् + आ + ल् + अ + य् + अ
ईशान = ई + श् + आ + न् + अ
व्योम = व् + य् + ओ + म् + अ

1. दिए गए उत्तरों में से सही विकल्प पर सही (✓) का चिह्न लगाइए—

(क) निम्नलिखित में से कौन-सा स्वर नहीं है?
(i) अ (ii) औ (iii) क्ष

(ख) निम्नलिखित में से कौन-सा व्यंजन नहीं है?
(i) ढ़ (ii) ऋ (iii) ञ

(ग) भाषा की सबसे छोटी इकाई है—
(i) वर्ण (ii) व्यंजन (iii) शब्द

(घ) 'अं' की ध्वनि है—
(i) अनुनासिक (ii) निरनुनासिक (iii) अनुस्वार

(ङ) 'ज्ञ' संयुक्त वर्ण में मिले हैं—
(i) ग् + य (ii) ज् + य (iii) ज् + ञ

2. कोष्ठक से उचित शब्द चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—

(क) दीर्घ स्वर ..... हैं। (आठ, सात)

(ख) पल्लवी शब्द ..... व्यंजन को दर्शाता है। (संयुक्त, द्वित्व)

(ग) ..... का उच्चारण नाक से होता है। (अनुस्वार, अनुनासिक)

(घ) श, ष, स, ह ..... व्यंजन हैं। (स्पर्श, ऊष्म)

(ङ) विसर्ग ..... के आगे लगता है। (स्वर, व्यंजन)

3. निम्नलिखित शब्दों को वर्ण-विच्छेद करके लिखिए—

(क) प्रभात .....

(ख) वैशाली .....

(ग) शिवानी .....

(घ) चेन्नई .....

4. दिए गए वर्णों से बनने वाले शब्द लिखिए—

(क) न् + आ + म् + अ ..... नाम

(ख) म् + ओ + ल् + अ .....

(ग) भ् + अ + क् + त् + अ .....

(घ) ऊ + प् + अ + र् + अ .....

5. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए—

(क) वर्ण किसे कहते हैं ? इसके कितने भेद हैं ?

(ख) ह्रस्व स्वर कौन-कौन से हैं ?

(ग) व्यंजनों के भेद स्पष्ट कीजिए।

(घ) अयोगवाह किन्हें कहते हैं ?

(ङ) संयुक्त व्यंजन और द्वित्व व्यंजन में सोदाहरण अन्तर बताइए।

रचनात्मक गतिविधियाँ

1. आपकी पाठ्य-पुस्तक में 'र' के कई रूपों का प्रयोग किया गया है। इन सभी रूपों के शब्द बनाइए। कक्षा में सहपाठियों के बीच इनके कई अलग-अलग रूपों की चर्चा कीजिए।

2. अनुस्वार का प्रयोग न करने पर शब्दों के अर्थ बदल जाते हैं; जैसे—चिंता—चिता, कंस—कस, घंटी—घटी। आप भी इसी प्रकार के दस शब्दों की सूची बनाइए और उनके अनुस्वार हटाकर एक और सूची बनाइए। अब दोनों सूचि के शब्दों के उच्चारण और अर्थ में अन्तर जानिए।

शब्द-विचार
Morphology

वर्णों का एक क्रमबद्ध समूह, जिसका कोई निश्चित अर्थ हो, शब्द कहलाता है।

कमीज़

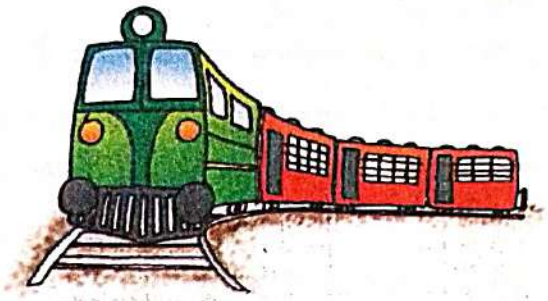

रेलगाड़ी

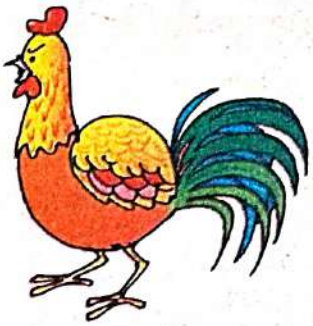

मुर्गा

ऊपर दिए गए चित्रों के नीचे लिखे शब्द कई वर्णों से मिलकर बने हैं और उनसे कुछ-न-कुछ अर्थ निकल रहा है; अत: ये शब्द हैं। शब्दों से हम अपने भावों और विचारों को प्रकट करते हैं। जब कोई शब्द व्याकरण के नियमों के अनुसार वाक्य में एक निश्चित स्थान पर प्रयुक्त होता है, तो वह पद कहलाता है। जिस व्यक्ति को जितने अधिक शब्दों का ज्ञान होता है, उसका भाषा पर उतना ही अच्छा अधिकार होता है। हिन्दी भाषा में हज़ारों शब्द हैं। ये शब्द हिन्दी भाषा में किस प्रकार आए इसके लिए शब्दों के भेद जानना आवश्यक है।

शब्द-भेद

शब्द के भेद निम्नलिखित आधारों पर होते हैं—

1. अर्थ के आधार पर
2. स्रोत (उत्पत्ति) के आधार पर
3. रचना (बनावट) के आधार पर
4. प्रयोग के आधार पर

1. अर्थ के आधार पर शब्द-भेद

अर्थ के आधार पर शब्दों के निम्नलिखित चार भेद होते हैं—

(क) पर्यायवाची (समानार्थी) शब्द—जिन शब्दों के अर्थ समान होते हैं, उन्हें पर्यायवाची शब्द कहते हैं; जैसे—पहाड़ = पर्वत, गिरि, नग, शैल, अचल। फूल = कुसुम, सुमन, पुष्प, प्रसून।

(ख) विलोम शब्द—किसी शब्द का विपरीत अर्थ बताने वाले शब्द विलोम शब्द कहलाते हैं। इन्हें विपरीतार्थक शब्द भी कहते हैं; जैसे—मान-अपमान, एक-अनेक, स्वदेश-विदेश।

(ग) समरूप-भिन्नार्थक शब्द—कुछ शब्द देखने-सुनने में समान लगते हैं, परन्तु उनके अर्थ भिन्न होते हैं। ऐसे शब्दों को समरूप-भिन्नार्थक शब्द या एकार्थक प्रतीत होने वाले शब्द कहते हैं; जैसे—

अन्न = अनाज
अन्य = दूसरा
कुल = वंश, सब
कूल = किनारा, तट

(घ) अनेकार्थी शब्द—जिन शब्दों के एक से अधिक अर्थ होते हैं, उन्हें अनेकार्थी शब्द कहते हैं; जैसे—

तीर = किनारा, बाण　　उत्तर = एक दिशा, जवाब

(ङ) अनेक शब्दों के लिए एक शब्द—अनेक शब्दों के लिए एक शब्द का प्रयोग करना भाषा पर अधिक जाता है। इससे कम-से-कम शब्दों में अपनी बात कहने का गुण प्रकट होता है; जैसे—

काम से जी चुराने वाला = कामचोर　　प्रतिदिन होने वाला = दैनिक

2. स्रोत (उत्पत्ति) के आधार पर शब्द-भेद

उत्पत्ति या स्रोत के आधार पर शब्द के निम्नलिखित चार भेद होते हैं—

(क) तत्सम शब्द—हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओं का जन्म संस्कृत से हुआ है। हिन्दी भाषा में ऐसे अने हैं जो संस्कृत के हैं। ऐसे शब्दों को तत्सम शब्द कहते हैं; जैसे—मयूर, अग्नि, सूर्य, दुग्ध, दन्त, गौ, अंगुली आदि।

(ख) तद्भव शब्द—ऐसे शब्द जो मूल रूप में संस्कृत के हैं परन्तु जिनका रूप हिन्दी में बदल गया है, तद्भ कहलाते हैं; जैसे—मोर, आग, सूरज, दूध, दाँत, गाय, उँगली आदि।

(ग) देशज शब्द—ये हिन्दी भाषा के अपने शब्द हैं; जैसे—पेट, रोटी, चिड़िया, खिचड़ी, पगड़ी आदि। इन्हें या किसी अन्य भाषा से नहीं लिया गया है।

(घ) विदेशी शब्द (आगत)—भारत में विदेशी आक्रमणकारी और व्यापारी भी आए। उनकी भाषा के कुछ को हमारी भाषा हिन्दी ने अपना लिया। इस प्रकार, हिन्दी में अनेक विदेशी शब्द आ गए। अंग्रेज़ी, फ़ारसी, अरबी, फ्र और पुर्तगाली आदि विदेशी भाषाओं के अनेक शब्द हिन्दी में प्रयोग में लाए जाते हैं।

फ़ारसी शब्द—आतिशबाज़ी, आवारा, सौदागर, ज़हर, तीर, तनख्वाह, मलाई, मुफ़्त, पलंग आदि।

अरबी शब्द—अमीर, आदमी, औरत, किला, ग़रीब, तमाशा, दुनिया, दौलत, हमला, मुसाफ़िर आदि।

अंग्रेज़ी शब्द—स्कूल, क्लास, मॉनीटर, डेस्क, बल्ब, ट्यूशन, थर्मामीटर, क्रिकेट, पेंसिल, पेन आदि।

पुर्तगाली शब्द—अलमारी, बाल्टी, चाबी, तम्बाकू, कमीज, कमरा, गमला, मेज, तौलिया, पादरी आदि।

फ्रांसीसी शब्द—अंग्रेज़, कूपन, कारतूस आदि।

3. रचना (बनावट) के आधार पर शब्द-भेद

रचना (बनावट) के आधार पर शब्दों के तीन भेद होते हैं—

(क) रूढ़ शब्द—जो शब्द अपने आप में पूर्ण हों और दूसरे शब्दों के योग से न बने हों, रूढ़ शब्द कहलाते हैं मूल शब्द भी कहा जाता है। ऐसे शब्द जो किसी स्थान, व्यक्ति, वस्तु, प्राणी आदि के लिए वर्षों से प्रयुक्त होते चले आ हैं, रूढ़ शब्द कहलाते हैं। इन शब्दों के टुकड़े किए जाएँ तो इनका कोई अर्थ नहीं निकलता; जैसे—दीवार। इस शब टुकड़े करने पर दी + वा + र का कोई अर्थ नहीं निकलता, परन्तु 'दीवार' रूप में इसका अर्थ है। कुछ अन्य रूढ़ हैं—मेज, कुर्सी, चादर, लकड़ी, चाचा, भाई, झूठ, अनार, आम आदि।

(ख) यौगिक शब्द—दो या दो से अधिक शब्दों/शब्दांशों के मेल से बने शब्द यौगिक शब्द कहलाते हैं; जैसे विद्यालय, मनमोहक, सुकर्म, अधपका, निडर, भरपेट, खुशबू, बेईमान, उपमन्त्री, मिलनसार। इनके भिन्न-भिन्न अर्थ हैं

अन्य उदाहरण— सेनापति = सेना + पति = (शब्द + शब्द)
अपमान = अप + मान = (शब्दांश + शब्द)
सुन्दरता = सुन्दर + ता = (शब्द + शब्दांश)
पुस्तकालय = पुस्तक + आलय = (शब्द + शब्द)

उपर्युक्त उदाहरणों से स्पष्ट है कि यौगिक शब्दों में प्रयुक्त शब्दों-शब्दांशों को अलग-अलग किया जा सकता है। खण्ड करने पर यौगिक शब्दों का अर्थ यथावत् बना रहता है। हिन्दी में कुछ यौगिक शब्द ऐसे भी हैं जो दो भिन्न भाषाओं के योग से बने हैं। ये शब्द संकर शब्द कहलाते हैं; जैसे—जिलाधीश, टिकटघर, रेलगाड़ी, सिनेमाघर आदि।

(ग) योगरूढ़ शब्द—ऐसे शब्द जो यौगिक तो हैं परन्तु उनका अपना विशेष अर्थ होता है, योगरूढ़ शब्द कहलाते हैं। योगरूढ़ शब्द यौगिक होते हुए भी किसी एक ही अर्थ में रूढ़ हो गए हैं।

योगरूढ़ शब्द	सामान्य अर्थ	विशेष अर्थ
लम्बोदर	लम्बा उदर (पेट)	गणेश
हिमालय	हिम (बर्फ़) + आलय (घर)	एक पर्वत
त्रिलोचन	त्रि (तीन) + लोचन (आँखें)	शिव
जलज	जल + ज (उत्पन्न)	कमल
चतुर्भुज	चार भुजाओं वाला	विष्णु
नीलकण्ठ	नीला + कण्ठ (गला)	शिव

4. प्रयोग के आधार पर शब्द-भेद

हिन्दी में कई ऐसे शब्द हैं जिनका रूप प्रयोग के आधार पर परिवर्तित हो जाता है, जबकि कई ऐसे शब्द हैं जिनका रूप परिवर्तित नहीं होता। प्रयोग के आधार पर शब्दों के दो भेद होते हैं—

(क) विकारी शब्द—ऐसे शब्द जिनमें लिंग, वचन, कारक आदि के कारण विकार (परिवर्तन) आ जाता है, विकारी शब्द कहलाते हैं। संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया विकारी शब्द हैं।

संज्ञा — लड़की, लड़कियाँ, लड़कियों, लड़का, लड़के, लड़कों।
सर्वनाम — मैं, मैंने, हम, हमारा, हमने, हमको।
विशेषण — पीला, पीली, पीले।
क्रिया — जाता, जाती, जाना, जाएगा, जाऊँगा, जाओगे।

(ख) अविकारी शब्द—ऐसे शब्द जिनमें विकार (परिवर्तन) नहीं आता, अविकारी शब्द कहलाते हैं। क्रिया-विशेषण, सम्बन्धबोधक, समुच्चयबोधक और विस्मयादिबोधक अविकारी शब्द हैं।

क्रियाविशेषण — धीरे-धीरे, कम, अधिक, आज, कल, इधर, उधर आदि।
सम्बन्धबोधक — के बिना, के साथ, आगे, बराबर, अतिरिक्त आदि।
समुच्चयबोधक — और, तथा, परन्तु, क्योंकि, अथवा, बल्कि आदि।
विस्मयादिबोधक — आह!, वाह-वाह!, अरे!, हाय!, ओह! आदि।

उपर्युक्त शब्द अपने मूल रूप में रहते हैं। इनमें परिवर्तन नहीं होता इसलिए ये अविकारी शब्द हैं। इन्हें अव्यय भी कहा जाता है।

कुछ करके सीखें

1. दिए गए उत्तरों में से सही विकल्प पर सही (✓) का चिह्न लगाइए—

(क) रचना के आधार पर शब्दों के भेद हैं—

(i) शब्द, पद, पदबन्ध (ii) रूढ़, यौगिक, योगरूढ़

(iii) देशज, विदेशी, संकर (iv) एकार्थी, अनेकार्थी, पर्यायवाची

(ख) वाक्य में प्रयुक्त होने पर शब्द कहलाता है—

(i) पर्यायवाची शब्द (ii) पदबन्ध (iii) पद (iv) योगरूढ़

(ग) 'रावण' के लिए पर्यायवाची शब्द है—

(i) देवराज (ii) दशावतार (iii) दशानन (iv) देवर्षि

2. रिक्त स्थानों में उचित शब्द लिखिए—

(क) संस्कृत के वे शब्द जिन्हें हिन्दी में उनके मूल रूप में प्रयोग किया जाता है, ... शब्द कहलाते हैं।

(ख) ऐसे यौगिक शब्द जिनका प्रयोग किसी विशेष अर्थ में ही होता है, उन्हें ..... शब्द कहते हैं।

(ग) जिन शब्दों के एक से अधिक अर्थ होते हैं, उन्हें ..... शब्द कहते हैं।

(घ) प्रयोग के आधार पर शब्दों के ..... भेद होते हैं।

3. निम्नलिखित शब्दों को उनके भेद के अनुसार लिखिए—

नृत्य, कमीज़, मोर, गरीब, हाथ, रोटी, जूता, कटोरा, जन्म, दुग्ध, दाँत, दही, चिड़िया, अँगूठा, साहित्य, गुलाब, चमच, पुस्तक, खिड़की, रात्रि, गाँव, पगड़ी, चाबी।

तत्सम	तद्भव	देशज	विदेशी
.....	.....	.....	.....
.....	.....	.....	.....
.....	.....	.....	.....
.....	.....	.....	.....
.....	.....	.....	.....
.....	.....	.....	.....

4. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए—

(क) शब्द कैसे बनते हैं?

(ख) शब्द किसे कहते हैं? शब्दों को किन-किन आधारों पर बाँटा गया है? उनके नाम लिखिए।

(ग) स्रोत के आधार पर शब्दों के भेदों के नाम लिखिए।

(घ) रचना के आधार पर शब्दों के भेदों के नाम लिखिए।

(ङ) विकारी और अविकारी शब्दों के नाम लिखिए।

संज्ञा
Noun

किसी व्यक्ति/प्राणी, स्थान, वस्तु या भाव के नाम को संज्ञा कहते हैं। उदाहरणार्थ—

व्यक्ति/प्राणी — राम, सरदार पटेल, कामिनी, स्त्री, पशु, बालक, पक्षी आदि।

स्थान — मुम्बई, दिल्ली, मैदान, गाँव, विद्यालय आदि

वस्तु — दूध, पानी, फल, पुस्तक, रेलगाड़ी आदि।

भाव — सच्चाई, चौड़ाई, पशुता, झूठ, प्रेम आदि।

संज्ञा के भेद

संज्ञा के निम्नलिखित तीन भेद होते हैं—

1. व्यक्तिवाचक संज्ञा—जिस संज्ञापद से किसी व्यक्ति विशेष, स्थान विशेष और वस्तु विशेष का बोध हो, उसे व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं; जैसे—श्रीराम, सचिन, चेतक, हिमालय, गंगा आदि।

2. जातिवाचक संज्ञा—जिस संज्ञापद से किसी प्राणी, वस्तु आदि की जाति का बोध होता है, उसे जातिवाचक संज्ञा कहते हैं; जैसे—मनुष्य, घोड़ा, चिड़िया, पर्वत, पुस्तक, मन्दिर, सुनार, फल आदि।

3. भाववाचक संज्ञा—जिन संज्ञापदों से पदार्थों के धर्म, गुण, दोष, अवस्था और विभिन्न व्यापार आदि का बोध होता है, उन्हें भाववाचक संज्ञा कहते हैं। ये गुण, दोष, भाव, धर्म आदि प्रायः अमूर्त होते हैं; जैसे—पढ़ाई, सुन्दरता, बुढ़ापा, कौशल, धैर्य आदि। यहाँ पढ़ाई धर्म है; सुन्दरता, कौशल, धैर्य गुण हैं तथा बुढ़ापा अवस्था है।

विशेष—कुछ विद्वान् अंग्रेज़ी व्याकरण के अनुसार, समुदायवाचक संज्ञा और द्रव्यवाचक संज्ञा—ये दो भेद और मानते हैं। अधिकांश विद्वान् इनका समावेश जातिवाचक संज्ञा के अन्तर्गत ही करते हैं।

इन्हें संक्षेप में निम्न प्रकार समझ सकते हैं—

समुदायवाचक संज्ञा—जो संज्ञा शब्द किसी एक व्यक्ति के वाचक न होकर समूह (समुदाय) के वाचक होते हैं, उन्हें समूह या समुदायवाचक संज्ञा कहते हैं; जैसे—सेना, दल, टोली, कक्षा, सभा, झुण्ड आदि।

द्रव्यवाचक संज्ञा—किसी पदार्थ या द्रव्य का बोध कराने वाले शब्दों को द्रव्यवाचक संज्ञा कहते हैं; जैसे—सोना, चाँदी, लोहा, घी, अन्न आदि।

संज्ञा के कार्य

वाक्य में संज्ञापद कर्ता, कर्म, पूरक, करण, अपादान, अधिकरण आदि कई कार्य करता है; जैसे—

1. सोहन सो रहा है। (कर्ता)
2. वह पानी पी रहा है। (कर्म)
3. रामू विद्यार्थी है। (पूरक)
4. उसने चाकू से सेब काटा। (करण)

भाववाचक संज्ञा की रचना

'भाववाचक' संज्ञाएँ जातिवाचक संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया और अव्ययों से बनाई जाती हैं—

जातिवाचक	भाववाचक
बच्चा	बचपन
पशु	पशुता
देव	देवत्व
नारी	नारीत्व
मनुष्य	मनुष्यता

सर्वनाम	भाववाचक
निज	निजता
मम	ममता
आप	आपा
पराया	परायापन
अहं	अहंकार

विशेषण	भाववाचक
काला	कालापन
ऊँचा	ऊँचाई
गरीब	गरीबी
सुन्दर	सुन्दरता
कुशल	कुशलता

क्रिया	भाववाचक
कहना	कहावत
घबराना	घबराहट
चलना	चाल
उड़ना	उड़ान
बुनना	बुनाई

अव्यय	भाववाचक
शाबाश	शाबाशी
दूर	दूरी
भीतर	भीतरी
ऊपर	ऊपरी
निकट	निकटता

कुछ करके सीखें

1. दिए गए उत्तरों में से सही विकल्प पर सही (✓) का चिह्न लगाइए—

(क) गुण, दोष, भाव, दशा, स्वभाव आदि का बोध कराने वाले शब्द होते हैं—

(i) जातिवाचक संज्ञा ◯ (ii) व्यक्तिवाचक संज्ञा ◯ (iii) भाववाचक संज्ञा ◯ (iv) सर्वनाम ◯

(ख) इनमें से जातिवाचक संज्ञा नहीं है—

(i) नदी ◯ (ii) मुम्बई ◯ (iii) पर्वत ◯ (iv) घर ◯

(ग) इनमें से व्यक्तिवाचक संज्ञा नहीं है—

(i) अध्यापक ◯ (ii) चेतक ◯ (iii) हरभजन ◯ (iv) गंगा ◯

2. निम्नलिखित रिक्त स्थानों में उचित संज्ञा शब्दों का प्रयोग कीजिए व भेद का नाम भी लिखिए—

(क) ..... नदी सबसे पवित्र नदी है। .....

(ख) नींबू के रस में ..... होती है। .....

(ग) ..... प्रयोग की जाने वाली सबसे प्राचीन धातु है। .....

(घ) हाथियों का ..... नदी पर पानी पी रहा था। .....

(ङ) हमारी कक्षा में 20 ..... और 22 लड़कियाँ हैं। .....

3. भाववाचक संज्ञा से रिक्त स्थान भरिए—

(क) गणतन्त्र-दिवस पर वायुयानों की ..... देखने योग्य थी। *(उड़ना)*

(ख) कुतुबमीनार की ..... देखकर आश्चर्य होता है। *(ऊँचा)*

(ग) सुनयना को भीड़ में ..... होने लगती है। *(घबराना)*

(घ) कृष्ण और सुदामा की ..... पर सभी को गर्व है। *(मित्र)*

(ङ) कीमतीलाल की ..... देखकर तरस आ गया। *(गरीब)*

4. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक शब्द में लिखिए—

(क) 'मिलाप' शब्द किस क्रिया शब्द से बना है? .....

(ख) 'पढ़ना' शब्द से बनी भाववाचक संज्ञा क्या है? .....

(ग) 'हिमालय' किस प्रकार की संज्ञा है? .....

(घ) 'स्वास्थ्य' शब्द किस विशेषण शब्द से बना है? .....

(ङ) 'मातृत्व' का मूल शब्द 'माता' किस प्रकार की संज्ञा है? .....

5. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए—

(क) संज्ञा किसे कहते हैं?

(ख) व्यक्तिवाचक संज्ञा किसे कहते हैं?

(ग) जातिवाचक और व्यक्तिवाचक संज्ञा में क्या अन्तर है? उदाहरण देकर बताइए।

(घ) भाववाचक संज्ञा की परिभाषा लिखिए।

रचनात्मक गतिविधियाँ

1. किसी एक दिन विद्यालय आते हुए रास्ते में मिलने वाले/दिखने वाले व्यक्तियों, वस्तुओं और स्थानों के नामों की सूची बनाइए। देखी गई वस्तुओं के बारे में जो भाव उठे, उन्हें भी लिख लीजिए। अब इस सूची में से व्यक्तिवाचक, जातिवाचक और भाववाचक संज्ञाएँ अलग-अलग लिखिए।

2. 'यदि नाम न होते···' विषय पर कक्षा में चर्चा कीजिए।

संज्ञा : लिंग
Noun : Gender

शब्द के जिस रूप से यह बोध हो कि वह पुरुष जाति का है या स्त्री जाति का, लिंग कहलाता है।

पिता–माता

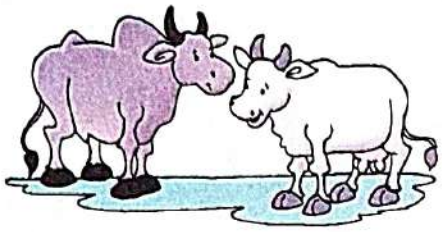

बैल–गाय

छात्र–छात्रा

मोर–मोरनी

इन चित्रों में पिता, बैल, छात्र और मोर पुरुषसूचक शब्द हैं। माता, गाय, छात्रा और मोरनी स्त्रीसूचक शब्द हैं। इ प्रकार, हिन्दी में लिंग दो प्रकार के होते हैं—(क) पुल्लिग और (ख) स्त्रीलिंग।

(क) पुल्लिग

पुरुष जाति का बोध कराने वाले शब्द पुल्लिग कहलाते हैं; जैसे—हाथी, शेर, चूहा, चाचा, दादा आदि।

(ख) स्त्रीलिंग

स्त्री जाति का बोध कराने वाले शब्द स्त्रीलिंग कहलाते हैं; जैसे—शेरनी, गाय, माता, सास आदि।

➡ हिन्दी में कुछ ऐसे शब्द हैं जिनका प्रयोग केवल पुल्लिग में या स्त्रीलिंग में किया जाता है।

केवल पुल्लिगवाची शब्द—खरगोश, खटमल, भेड़िया, कौआ, कीड़ा, बाज, कछुआ, मच्छर आदि।

केवल स्त्रीलिंगवाची शब्द—मक्खी, सती, सुहागिन, सवारी, मैना, कोयल, मछली, सन्तान, मकड़ी, चील, पेंसि आदि।

ऐसे शब्दों का लिंग परिवर्तन करते समय उसके पहले नर या मादा लगा देते हैं; जैसे—नर मक्खी, मादा मक्खी; तोता, मादा तोता आदि।

नीचे लिखे शब्द सदा पुल्लिग/स्त्रीलिंग होते हैं—

1.	देशों के नाम	पुल्लिग	भारत, नेपाल, भूटान, पाकिस्तान आदि।
2.	पर्वतों के नाम	पुल्लिग	हिमालय, मलय, विन्ध्याचल, आल्पस आदि।
3.	महाद्वीपों के नाम	पुल्लिग	एशिया, अफ्रीका आदि।
4.	भारतीय महीनों के नाम	पुल्लिग	चैत्र, बैशाख, ज्येष्ठ आदि।
5.	दिनों के नाम	पुल्लिग	रविवार, सोमवार, मंगलवार आदि।

6.	शरीर के अंगों के नाम	पुल्लिग	हाथ, पाँव, नाखून आदि।
		स्त्रीलिंग	आँख, नाक, जिह्वा, ठोड़ी, कोहनी, कलाई।
7.	अन्न के नाम	पुल्लिग	गेहूँ, चावल, चना, मटर, बाजरा आदि।
		स्त्रीलिंग	मकई, ज्वार आदि।
8.	पेड़ों के नाम	पुल्लिग	आम, नीम, अशोक, पीपल, ताड़, सेब, बरगद आदि।
		स्त्रीलिंग	नाशपाती, नारंगी, लीची आदि।
9.	धातुओं के नाम	पुल्लिग	पीतल, ताँबा, सोना, स्टील आदि।
		स्त्रीलिंग	चाँदी।
10.	द्रव्य पदार्थों के नाम	पुल्लिग	तेल, घी, पानी, शर्बत, पेट्रोल, दूध आदि।
		स्त्रीलिंग	चाय, शराब, कॉफ़ी।

नीचे लिखे शब्द सदा स्त्रीलिंग होते हैं—

1. **भाषाओं के नाम**—हिन्दी, मराठी, बांग्ला, पंजाबी, अंग्रेज़ी, स्पैनिश आदि।
2. **नदियों के नाम**—गंगा, यमुना, कावेरी, गोदावरी, कोसी आदि।
3. **किराने की दुकान के सामान**—चाय, हींग, इलायची, हल्दी, लौंग, सुपारी आदि।
4. **नक्षत्रों के नाम**—चित्रा, रोहिणी, अश्विनी, भरणी आदि।
5. **तिथियों के नाम**—प्रथमा, द्वितीया, तृतीया, पूर्णिमा आदि।

पुल्लिग शब्दों की सूची

तौलिया	हमला	मंजन	आँसू	प्रश्न	घड़ा	मित्र
द्वार	पहिया	षड्यन्त्र	कल्याण	अमृत	डण्डा	कार्य
पड़ोस	ताला	लालच	गंजा	मकान	जुलूस	क्रोध
बुखार	होंठ	शंख	कौआ	नृत्य	टिकट	उपहार
फर्श	दहेज	वैभव	कीर्तन	बाज़ार	छप्पर	सुख
भूचाल	आशीर्वाद	रक्त	उपवास	गुलाब	चाँटा	पालन

स्त्रीलिंग शब्दों की सूची

गिलहरी	निराशा	गड़बड़	अहिंसा	टिकिया	हड़ताल	याचना
चमेली	फ़सल	झंझट	खुशामद	दुनिया	खबर	शपथ
ढोलक	मरम्मत	छाया	ईर्ष्या	तबीयत	आग	लड़ाई
पेंसिल	प्रतीक्षा	जनता	कसम	थकावट	कक्षा	सुबह
जिह्वा	भीड़	घृणा	उमंग	ध्वजा	अप्सरा	व्याख्या
मुस्कराहट	बर्फ़	चाट	आत्मा	ठण्डक	इंच	रक्षा

पुल्लिंग से स्त्रीलिंग बनाने के नियम

प्रत्ययों की सहायता से संज्ञाओं का लिंग परिवर्तन किया जाता है।

1. कुछ अकारान्त पुल्लिग संज्ञाओं में 'ई' की मात्रा लगाकर—
   देव–देवी, पहाड़–पहाड़ी आदि।
2. कुछ आकारान्त पुल्लिग संज्ञाओं में 'ई' की मात्रा लगाकर—
   लड़का–लड़की, चाचा–चाची, दादा–दादी आदि।
3. कुछ अकारान्त पुल्लिग संज्ञाओं में 'नी' जोड़कर—
   ऊँट–ऊँटनी, मोर–मोरनी, शेर–शेरनी आदि।
4. कुछ अकारान्त पुल्लिग संज्ञाओं में 'आनी' जोड़कर—
   सेठ–सेठानी, जेठ–जेठानी, देवर–देवरानी आदि।
5. ईकारान्त के 'ई' को 'इ' करके और 'नी' जोड़कर—
   पापी–पापिनी, साथी–साथिनी, हाथी–हथिनी आदि।
6. व्यापारवाचक संज्ञाओं के अन्तिम 'ई' को 'इन' में बदल देते हैं—
   धोबी–धोबिन, तेली–तेलिन, माली–मालिन आदि।
7. उपनामों में 'आइन' जोड़कर—
   पण्डित–पण्डिताइन, ठाकुर–ठकुराइन, लाला–ललाइन आदि।
8. कुछ शब्दों में परिवर्तित लिंग रूप भिन्न होते हैं। ऐसे शब्दों को पुल्लिग से स्त्रीलिंग बनाने के लिए कोई नहीं हैं—

पुल्लिग	स्त्रीलिंग	पुल्लिग	स्त्रीलिंग
कवि	कवयित्री	राजा	रानी
पति	पत्नी	विद्वान्	विदुषी
वीर	वीरांगना	सम्राट्	सम्राज्ञी
भाई	भाभी	पिता	माता
बैल	गाय	बाप	माँ
साहब	मेम	ताऊ	ताई
नर	नारी	ससुर	सास
आदमी	औरत	पुरुष	स्त्री

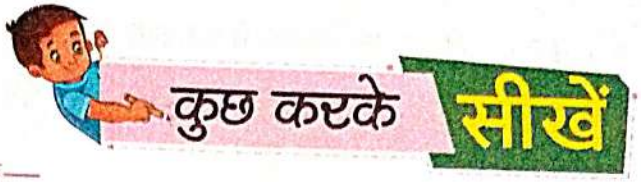

1. दिए गए उत्तरों में से सही विकल्प पर सही (✓) का चिह्न लगाइए—

(क) 'बन्दर' का स्त्रीलिंग है—

(i) बन्दरी (ii) बन्दरनी (iii) बन्दरिया (iv) बन्दरानी

(ख) इन शब्दों में जो पुल्लिग नहीं है—

(i) सिर (ii) आँसू (iii) टाँग (iv) पैर

(ग) इन शब्दों में जो स्त्रीलिंग नहीं है—

(i) कान (ii) नाक (iii) जीभ (iv) आँख

(घ) इन शब्दों में जो पुल्लिग नहीं है—

(i) गेहूँ (ii) चना (iii) ज्वार (iv) बाजरा

2. कोष्ठकों में से उचित शब्द चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—

(क) ..... हिनहिनाता है। *(घोड़ा/घोड़ी)*

(ख) ..... मन्दिर जाती है। *(सेठ/सेठानी)*

(ग) ..... दहाड़ती है। *(शेर/शेरनी)*

(घ) ..... दौड़ता है। *(हिरन/हिरनी)*

(ङ) ..... पढ़ाती है। *(अध्यापक/अध्यापिका)*

(च) ..... पेड़ पर बैठा है। *(बन्दर/बन्दरिया)*

3. निम्नलिखित शब्दों के स्त्रीलिंग रूप लिखिए—

(क) मोर ..... (ख) नौकर .....

(ग) भाई ..... (घ) शेर .....

(ङ) बालक ..... (च) बैल .....

4. निम्नलिखित शब्दों के पुल्लिग रूप लिखिए—

(क) धोबिन ..... (ख) शिष्या .....

(ग) शिक्षिका ..... (घ) मालकिन .....

(ङ) लड़की ..... (च) नानी .....

5. निम्नलिखित वाक्यों में रंगीन छपे शब्दों का लिंग बदलकर वाक्य पुन: लिखिए; जैसे—

मेरी बहन स्कूल जा रही है। ..... मेरा भाई स्कूल जा रहा है।

(क) सेठ ने नौकर को डाँट लगाई। .....

(ख) मुस्कान की माताजी अध्यापिका हैं। .....

(ग) पुस्तक पर लेखक ने हस्ताक्षर किए हैं। .....

(घ) मन्दिर के बाहर एक भिखारिन बैठी थी। .....

(ङ) उन लड़कों को बुला लाओ। .....

(च) उस युवक ने सबसे अच्छा गीत गाया। .....

(छ) मेरी गाय मैदान में चर रही है। .....

(ज) धोबी का गधा अड़ियल है। .....

(झ) उसके पिताजी समाज-सेवक हैं। .....

(ञ) शेर दहाड़ रहा है। .....

6. निम्नलिखित वाक्यों में रंगीन छपे शब्दों के लिंग बताइए—

	पुल्लिंग	स्त्रीलिं
(क) हमें सप्ताह में एक बार चॉकलेट खरीदने की छूट थी।	.....	.....
(ख) नागराजन की आँखों में आँसू आ गए।	.....	.....
(ग) तो क्या चिड़िया ने अंडे गिरा दिए हैं ?	.....	.....
(घ) गाँधीजी को बच्चों से बहुत प्रेम था।	.....	.....
(ङ) स्त्रियाँ ढोलक की मदद से गाती हैं।	.....	.....
(च) शुरू-शुरू में चश्मा लगाना अटपटा लगा।	.....	.....
(छ) मुझे नदी से बहुत प्यार है।	.....	.....

7. नित्य पुल्लिंग और नित्य स्त्रीलिंग के पाँच-पाँच शब्द लिखिए—

	नित्य पुल्लिंग	नित्य स्त्रीलिंग
(क)	हिमालय	.....
(ख)	.....	.....
(ग)	.....	.....
(घ)	.....	.....
(ङ)	.....	.....

8. संज्ञा शब्दों का लिंग-परिवर्तन कैसे करते हैं ? उदाहरण सहित लिखिए।

रचनात्मक गतिविधियाँ

1. दैनिक जीवन में काम आने वाली वस्तुओं पर नज़र पड़ते ही उनके लिंग के बारे में सोचिए। यदि किसी वस्तु का लिंग स्प न हो तो अपने हिन्दी के शिक्षक/शिक्षिका से जानने का प्रयास कीजिए।

2. निम्नलिखित वाक्यों में रंगीन शब्दों के लिंग बदलकर वाक्य दुबारा लिखिए—

मैं तुमसे इतनी बड़ी हूँ कि तुम्हारी दादी भी हो सकती हूँ, नानी भी। बड़ी बुआ भी, बड़ी मौसी भी।

6

संज्ञा : वचन
Noun : Number

शब्द के जिस रूप से उसके एक अथवा एक से अधिक होने का बोध हो, उसे वचन कहते हैं।

वचन के भेद

हिन्दी में दो वचन होते हैं—

1. एकवचन—शब्द के जिस रूप से उसके 'एक' (केवल एक संख्या) होने का बोध हो, उसे एकवचन कहते हैं; जैसे—गाय, घोड़ा, माला, पुस्तक, नदी, चिड़िया आदि।

2. बहुवचन—शब्द के जिस रूप से उसके 'अनेक' (संख्या में एक से अधिक) होने का बोध हो, उसे बहुवचन कहते हैं; जैसे—गायें, घोड़े, मालाएँ, पुस्तकें, नदियाँ, चिड़ियाँ आदि।

वचन की पहचान

वचन की पहचान दो प्रकार से की जा सकती है—

(क) संज्ञा या सर्वनाम शब्द से वचन की पहचान—

	एकवचन	बहुवचन
1.	घोड़ा घास खा रहा है।	घोड़े घास खा रहे हैं।
2.	वह आया है।	वे आए हैं।

(ख) क्रियापद द्वारा वचन की पहचान—

1.	आदमी काम कर रहा है।	आदमी काम कर रहे हैं।
2.	रविवार को डाकघर बन्द रहता है।	रविवार को डाकघर बन्द रहते हैं।

ध्यान रखिए

1. जब किसी व्यक्ति के प्रति आदर या सम्मान का भाव प्रकट करना हो, तो उसके लिए एकवचन के स्थान पर बहुवचन का प्रयोग किया जाता है; जैसे—

   मेरे मामा जी कोलकाता गए हैं। अध्यापक जी पढ़ा रहे हैं।

   उपर्युक्त वाक्यों में क्रियापदों को देखकर ऐसा लगता है कि वाक्यों में प्रयुक्त संज्ञा शब्द 'मामा जी' और 'अध्यापक जी' बहुवचन हैं, परन्तु ये बहुवचन क्रियापद उनके प्रति आदर का भाव प्रदर्शित करने के लिए प्रयोग किए गए हैं। वास्तव में, 'मामा जी' और 'अध्यापक जी' दोनों संज्ञा शब्द 'एकवचन' हैं।
2. अपना बड़प्पन दिखाने के लिए भी कुछ लोग 'मैं' के स्थान पर 'हम' शब्द का प्रयोग करते हैं; जैसे—

   नेता जी बोले, "यदि हम जीत गए, तो यहाँ कॉलेज खुलवा देंगे।"

वचन-परिवर्तन के नियम

एकवचन से बहुवचन बनाने के नियम पुल्लिग तथा स्त्रीलिंग शब्दों के लिए अलग-अलग होते हैं।

एकवचन से बहुवचन बनाना

पुल्लिग शब्दों के अन्त में 'आ' को 'ए' में बदलकर बहुवचन बनाते हैं—

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
सन्तरा	सन्तरे	गधा	गधे	कुत्ता	कुत्ते
केला	केले	मटका	मटके	पंखा	पंखे
खरबूजा	खरबूजे	समोसा	समोसे	बस्ता	बस्ते

स्त्रीलिंग शब्दों के अन्तिम 'अ' के साथ 'एँ' जोड़कर बहुवचन बनाते हैं—

पुस्तक	पुस्तकें	चप्पल	चप्पलें	बात	बातें
छत	छतें	मेज	मेजें	पतंग	पतंगें
टाँग	टाँगें	गेंद	गेंदें	रात	रातें

स्त्रीलिंग शब्दों के अन्त में 'आ' के साथ 'एँ' जोड़कर बहुवचन बनाते हैं—

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
शिष्या	शिष्याएँ	लता	लताएँ	महिला	महिलाएँ
सभा	सभाएँ	कन्या	कन्याएँ	अध्यापिका	अध्यापिकाएँ
माला	मालाएँ	निराशा	निराशाएँ	कक्षा	कक्षाएँ

स्त्रीलिंग शब्दों के अन्त में 'या' को 'याँ' में बदलकर बहुवचन बनाते हैं—

खटिया	खटियाँ	चुटिया	चुटियाँ	चुहिया	चुहियाँ
बुढ़िया	बुढ़ियाँ	बन्दरिया	बन्दरियाँ	गुड़िया	गुड़ियाँ
चिड़िया	चिड़ियाँ	डिबिया	डिबियाँ	बिटिया	बिटियाँ

स्त्रीलिंग शब्दों के अन्त में 'ई' को 'इयाँ' में बदलकर बहुवचन बनाते हैं—

तितली	तितलियाँ	मछली	मछलियाँ	राखी	राखियाँ
चूड़ी	चूड़ियाँ	साड़ी	साड़ियाँ	लड़की	लड़कियाँ
सब्ज़ी	सब्ज़ियाँ	रोटी	रोटियाँ	चिट्ठी	चिट्ठियाँ

अन्त में आए 'अ', 'आ' को 'ओं' में बदलकर बहुवचन बनाते हैं—

वर्ष	वर्षों	अक्षर	अक्षरों	फल	फलों

दिन	दिनों	गमला	गमलों	घड़ा	घड़ों
सैकड़ा	सैकड़ों	पंखा	पंखों	घण्टा	घण्टों

अन्त में गण, जन, वृन्द लगाकर बहुवचन बनाते हैं—

कर्मचारी	कर्मचारीगण	कवि	कविगण	गुरु	गुरुजन
अध्यापक	अध्यापकगण	नेता	नेतागण	शिक्षक	शिक्षकवृन्द

कुछ विशेष बातें

वचन के सम्बन्ध में कुछ विशेष बातों का ध्यान रखना चाहिए—

1. सदा एकवचन में प्रयोग किए जाने वाले कुछ शब्द—आकाश, वर्षा, आग, पानी, हवा, घी आदि।
2. सदा बहुवचन में प्रयोग किए जाने वाले कुछ शब्द—आँसू, प्राण, हस्ताक्षर, दर्शन, बाल आदि।
3. दोनों वचनों में समान रहने वाले कुछ शब्द—कवि, आलू, हाथी, रोग, नौकर, डाकू, बन्दर, पेड़ आदि।
4. ऐसे शब्द जिनके बहुवचन नहीं बनाए जा सकते—मामा, चाचा, नाना, राजा आदि।

विशेष—जब किसी संज्ञा के साथ 'ने', 'को', 'में', 'से' आदि जुड़ जाते हैं, तो इसका प्रभाव वचन पर भी पड़ता है। सी स्थिति में वचन के रूप भिन्न हो जाते हैं; जैसे—

एकवचन रूप	बहुवचन रूप
लड़का खाना खाता है।	लड़के खाना खाते हैं।
लड़के ने खाना खाया।	लड़कों ने खाना खाया।

. दिए गए उत्तरों में से सही विकल्प पर सही (✓) का चिह्न लगाइए—

(क) दोनों वचनों में समान रहने वाला शब्द है—
(i) आँख (ii) नौकर (iii) पुस्तक (iv) चिड़िया

(ख) सदा एकवचन के रूप में प्रयोग किया जाने वाला शब्द है—
(i) आँसू (ii) हवा (iii) दर्शन (iv) बाल

(ग) सदा बहुवचन के रूप में प्रयोग किया जाने वाला शब्द है—
(i) आकाश (ii) हवा (iii) प्राण (iv) वर्षा

(घ) सब्जी का बहुवचन है—
(i) सब्जियाएँ (ii) सब्जिया (iii) सब्जीएँ (iv) सब्जियाँ

2. कोष्ठक में दिए गए शब्दों के उपयुक्त रूप रिक्त स्थानों में भरिए—

(क) नगर की सभी ..... में बहुत गन्दगी है। (गली)

(ख) भारत में छः ..... होती हैं। (ऋतु)

(ग) इन ..... में अँधेरा क्यों है ? (कमरा)

(घ) छात्रो! अपनी-अपनी ..... को सीधा करो। (पंक्ति)

(ङ) उन ..... में फल रखे हैं। (डलिया)

3. निम्नलिखित वाक्यों में रंगीन छपे शब्दों के वचन लिखिए—

(क) दशरथ के तीर ने श्रवण के **प्राण** ले लिए। .....

(ख) **वर्षा** हो रही है। .....

(ग) **धोबी** कपड़े धो रहे हैं। .....

(घ) **हवा** दिखाई नहीं देती। .....

(ङ) **अध्यापकगण** कक्षाओं में पढ़ा रहे हैं। .....

(च) उसकी दर्द भरी कहानी सुनकर मेरी आँखों में **आँसू** आ गए। .....

(छ) उसने **हस्ताक्षर** कर दिए हैं। .....

4. रंगीन शब्दों को बहुवचन में बदलकर और आवश्यक परिवर्तन करके वाक्य पुनः लिखिए—

(क) **कहानी** अच्छी है। .....

(ख) **तोता** बोलता है। .....

(ग) **छुट्टी** खत्म हो गई। .....

(घ) वह **सड़क** लम्बी है। .....

(ङ) **नदी** बहती है। .....

(च) **घोंसला** गिर गया। .....

5. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए—

(क) वचन किसे कहते हैं?

(ख) हिन्दी में कितने वचन होते हैं?

(ग) एकवचन से बहुवचन बनाने के कोई तीन नियम लिखिए।

रचनात्मक गतिविधियाँ

1. वचन बदलने के नियमों को एकत्र करके उनका एक चार्ट बनाइए।
2. किसी भी परिस्थिति में न बदलने वाले शब्दों को एकत्र कीजिए और इनको चर्चा का विषय बनाइए।

7

कारक
Case

संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से उसका सम्बन्ध वाक्य के अन्य शब्दों के साथ जाना जाए, उसे कारक कहते हैं। कारक की स्पष्टता के लिए संज्ञा या सर्वनाम शब्द के साथ जो चिह्न लगाए जाते हैं, उन्हें कारक की विभक्ति या परसर्ग कहते हैं।

कारक के भेद

संज्ञा या सर्वनाम शब्दों का क्रिया के साथ सम्बन्ध अनेक रूपों में होता है। इसके आधार पर कारक भी भिन्न-भिन्न होते हैं। कारक के आठ भेद होते हैं। भेदों के अनुसार कारकों के चिह्न निश्चित हैं। इन चिह्नों को विभक्तियाँ कहते हैं।

कारक-भेद और विभक्तियाँ

क्रम सं०	कारक	विभक्ति	उदाहरण
1.	कर्ता	ने	शीला ने नाश्ता किया।
2.	कर्म	को	बोबी ने नोनी को पढ़ाया।
3.	करण	से, द्वारा	प्रिया ने पेंसिल से चित्र बनाया।
4.	सम्प्रदान	के लिए, को	महिमा मोहन के लिए मिठाई लाई।
5.	अपादान	से (अलग होना)	वृक्ष से पका फल तोड़ लो।
6.	सम्बन्ध	का, के, की, रा, रे, री	आशु रीचा का भाई है।
7.	अधिकरण	में, पर	विशाल के घर में चहल-पहल है।
8.	सम्बोधन	हे, अरे आदि	अरे दीपक! तुम अमरनाथ की यात्रा कर आए।

कर्ता कारक

शब्द के जिस रूप से क्रिया के करने वाले का बोध होता है, उसे कर्ता कारक कहते हैं। इसका विभक्ति-चिह्न 'ने' है; जैसे—राजीव ने पुस्तक पढ़ी। वाक्य में 'पढ़ी' क्रिया करने वाला कौन है? 'राजीव'; अत: यहाँ 'राजीव' शब्द कर्ता कारक है। वर्तमानकाल और भविष्यत्काल में कर्ता के साथ 'ने' विभक्ति-चिह्न का लोप हो जाता है; जैसे—

- बालक क्रिकेट खेलेंगे।
- मोहन पतंग उड़ाता है।

प्रथम वाक्य की क्रिया भविष्यत्काल में तथा दूसरे वाक्य की क्रिया वर्तमानकाल में है, अत: दोनों वाक्यों में कर्ता (बालक और मोहन) के साथ 'ने' का प्रयोग नहीं हुआ है।

कर्म कारक

जिस वाक्य में क्रिया का फल संज्ञा या सर्वनाम शब्दों पर निर्भर करता है, उसमें कर्म कारक होता है। इसका विभक्ति-चिह्न 'को' है; जैसे—गरिमा ने निकिता को संगीत सिखाया। गरिमा ने किसको संगीत सिखाया ? निकिता को। अत: 'निकिता को' में कर्म कारक है।

3. करण कारक

वाक्य में क्रिया को करने में प्रयुक्त साधन का बोध कराने वाले शब्द के रूप या शब्द को करण कारक कहते हैं। इसका विभक्ति-चिह्न 'से' है; जैसे—सिपाही ने चोर को 'डण्डे से' पीटा। 'पीटा' क्रिया डण्डे से सम्पन्न की गई। 'डण्डे से' में करण कारक है।

4. सम्प्रदान कारक

वाक्य में जिसके लिए कुछ किया जाए या जिसको कुछ दिया जाए, उसमें सम्प्रदान कारक होता है। इसका विभक्ति-चिह्न 'के लिए' या 'को' है; जैसे—संजीव अपने भाई के लिए कार लाया। संजीव किसके लिए कार लाया? 'के लिए'। 'भाई के लिए' में सम्प्रदान कारक है।

5. अपादान कारक

जिस पद से अलग होने का भाव प्रकट होता है, उसमें अपादान कारक होता है। इसका विभक्ति-चिह्न 'से' है; जैसे—वृक्ष से पत्ते गिरे। पत्ते कहाँ से गिरे? 'वृक्ष से'। इस पद में अपादान कारक है।

6. सम्बन्ध कारक

संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से एक वस्तु का दूसरी वस्तु के साथ सम्बन्ध ज्ञात हो, उसे सम्बन्ध कारक कहते हैं। इसके विभक्ति-चिह्न का, के, की, रा, रे, री, ना, ने, नी हैं; जैसे—रोहित का भाई घर गया। किसका भाई घर गया? 'रोहित का'। इस पद में सम्बन्ध कारक है।

7. अधिकरण कारक

संज्ञा के जिस रूप से आधार प्रकट होता है, उसे अधिकरण कारक कहते हैं। इसका विभक्ति-चिह्न 'में', 'पर' है; जैसे—कबूतर पेड़ पर बैठा है। कबूतर कहाँ बैठा है? 'पेड़ पर'। इस पद में अधिकरण कारक है।

8. सम्बोधन कारक

जिस शब्द का प्रयोग करके किसी को सम्बोधित किया जाए, वह सम्बोधन कारक है। इसके विभक्ति-चिह्न 'हे', 'अरे' आदि हैं; जैसे—हे अनुपम! जरा इधर आओ। इस पद में 'हे अनुपम!' सम्बोधन कारक है।

1. दिए गए उत्तरों में से सही विकल्प पर सही (✓) का चिह्न लगाइए—

(क) कर्ता जिस साधन से क्रिया को करता है, वह क्या कहलाता है?

(i) अपादान कारक ( ) (ii) सम्प्रदान कारक ( ) (iii) करण कारक ( ) (iv) सम्बन्ध कारक ( )

(ख) का, के, की, किस कारक के विभक्ति चिह्न (परसर्ग) हैं?

(i) सम्बोधन ( ) (ii) अपादान ( ) (iii) सम्बन्ध ( ) (iv) करण ( )

(ग) 'सैनिक खाई से बाहर निकला।' रेखांकित अंश में कौन-सा कारक है?

(i) करण ( ) (ii) कर्म ( ) (iii) अपादान ( ) (iv) सम्प्रदान ( )

(घ) 'हमने भूखे को खाना दिया।' रेखांकित अंश में कौन-सा कारक है?

(i) कर्म ( ) (ii) कर्ता ( ) (iii) सम्प्रदान ( ) (iv) अपादान ( )

2. उपयुक्त विभक्ति का प्रयोग करते हुए रिक्त स्थान भरिए—

(क) मेरी पुस्तक ..... आप ..... चित्र है।

(ख) फिर लोगों ..... नजरें दूसरी ओर मुड़ गईं।

(ग) यह पुस्तक लेखक ..... है।

(घ) उसका एक हाथ कान ..... है।

(ङ) बाबा भारती ..... घोड़े ..... रोक लिया।

के	लिए	पर
	में	ने
से	के	की
	को	का

3. निम्नलिखित वाक्यों में रंगीन शब्दों में प्रयुक्त कारक का नाम लिखिए—

(क) उसके **चेहरे का** रंग उड़ गया। .....

(ख) मैंने तो सिर्फ अंडों को गद्दी पर रख दिया था। .....

(ग) दोनों बच्चे बड़े **चाव से** काम करने लगे। .....

(घ) **केशव ने** उसके सुराख में थोड़ा-सा कागज ठूँस दिया। .....

(ङ) तुम लोगों ने **अंडों को** छुआ होगा। .....

4. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए—

(क) कारक की परिभाषा दीजिए।

(ख) कारक कितने हैं? उनके नाम बताइए।

(ग) विभक्ति किसे कहते हैं ? विभिन्न कारकों के विभक्ति-चिह्न बताइए।

(घ) उदाहरण देकर अन्तर स्पष्ट कीजिए—

(i) कर्म कारक — अपादान कारक,

(ii) करण कारक — सम्प्रदान कारक।

रचनात्मक गतिविधियाँ

निम्नलिखित वाक्य पढ़िए व कारक के भेद पहचानते हुए वर्ग-पहेली पूरी कीजिए—

(क) भारतीय सैनिक विमान से नीचे कूदे। नीचे (↓)

(ख) माली ने पौधे लगाए। नीचे (↓)

(ग) यश नई कलम से लिखता है। दाएँ (→)

(घ) एकता ने गरीब बच्चों को भोजन दिया। दाएँ (→)

(ङ) हे ईश्वर! मुझे इस कार्य में अवश्य सफल करना। नीचे (↓)

(च) विदिशा कमरे में है। दाएँ (→)

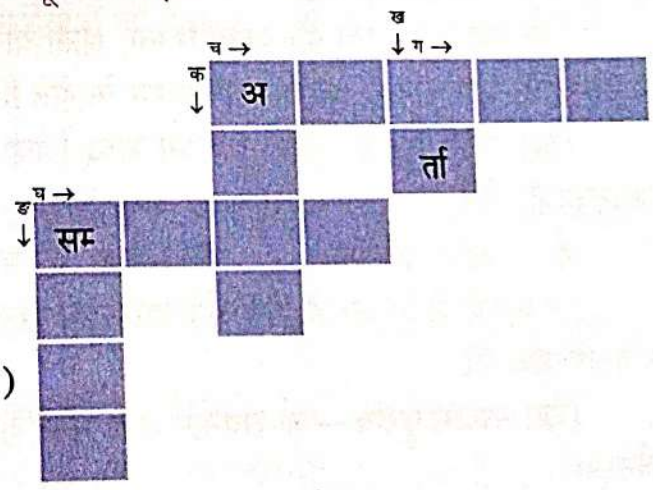

8

सर्वन
Pron

संज्ञापदों की पुनरावृत्ति को दूर करने के लिए उनके (संज्ञापदों के) स्थान पर प्रयुक्त किए जाने वाले पद स कहलाते हैं; जैसे—वह, वे, यह, ये, तू, तुम, मैं, हम और आप शब्द सर्वनाम हैं।

ईशान पुस्तकें खरीद रहा है।

वह पुस्तकें खरीदकर घर जा रहा है।

निकिता नृत्य कर रही है।

वह मेरे साथ पढ़ती है।

ईशान और निकिता संज्ञा शब्द हैं। इनके स्थान पर 'वह' शब्द आया है। 'वह' सर्वनाम है।

सर्वनाम शब्द विकारी होते हैं। उनमें वचन और कारक के कारण परिवर्तन होते हैं। सर्वनाम के कारकीय रूप अल अलग होते हैं। इनके साथ परसर्ग जुड़ते हैं।

सर्वनाम के भेद

सर्वनाम के निम्नलिखित छः प्रमुख भेद होते हैं—

1. पुरुषवाचक सर्वनाम

जिन सर्वनाम शब्दों का प्रयोग वक्ता, श्रोता या अन्य किसी व्यक्ति के लिए किया जाता है, वे पुरुषवाचक सर्व कहलाते हैं। पुरुषवाचक सर्वनाम तीन प्रकार के होते हैं—

(क) उत्तम पुरुष—ऐसे सर्वनाम शब्द जिन्हें बोलने वाला अपने लिए प्रयोग में लाता है, उत्तम पुरुष सर्व कहलाते हैं; जैसे—

- मैं अंगूर खाऊँगा।
- मैंने फ्रॉक खरीदी है।
- हम मुम्बई जाएँगे।

इन वाक्यों में प्रयुक्त मैं, मैंने और हम उत्तम पुरुष सर्वनाम हैं। मैं, मेरा, मैंने, हम, हमारा, हमने आदि उत्तम पुरुषवा सर्वनाम शब्द हैं।

(ख) मध्यम पुरुष—जो सर्वनाम शब्द सुनने वाले के लिए प्रयोग में लाए जाते हैं, मध्यम पुरुष सर्वनाम कहलाते जैसे—

- तुम्हारा नाम क्या है?
- तुम क्यों हँस रहे हो?
- पिताजी तुम्हें ढूँढ़ रहे थे।

इन वाक्यों में आए तुम्हारा, तुम और तुम्हें मध्यम पुरुष सर्वनाम हैं। तुमने, तुम्हारा, तुमसे, आपको आदि मध्य पुरुषवाची सर्वनाम शब्द हैं।

(ग) अन्य पुरुष—जो सर्वनाम शब्द बोलने वाला या सुनने वाला किसी अन्य व्यक्ति के लिए प्रयोग में लाता है, अन्य पुरुष सर्वनाम कहलाते हैं; जैसे—

- वे कहाँ जा रहे हैं?
- उसका नाम कमलेश है।
- उन्होंने गृह-कार्य पूरा कर लिया है।

इन वाक्यों में आए वे, उसका और उन्होंने अन्य पुरुषवाची सर्वनाम शब्द हैं।

विशेष—आप, आपने का प्रयोग मध्यम पुरुष तथा आदरसूचक अन्य पुरुष सर्वनाम के रूप में भी किया जाता है, लेकिन जहाँ 'आप' शब्द का प्रयोग अपने लिए होता है, वहाँ निजवाचक सर्वनाम होता है।

2. निश्चयवाचक सर्वनाम

ऐसे सर्वनाम शब्द जो दूरवर्ती या समीपवर्ती निश्चित व्यक्ति या वस्तु के लिए प्रयोग में लाए जाते हैं, उन्हें निश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं। इन्हें संकेतवाचक भी कहते हैं क्योंकि ये संकेत करते हैं; जैसे—

- गोकुल की दुकान यह नहीं, वह है।
- इसने ही गमला तोड़ा था।
- यह है ईशान का बस्ता।
- मेरी दिल्ली वाली बुआ वह है।

इन वाक्यों में यह, वह, इसने निश्चयवाचक सर्वनाम हैं।

विशेष—'वह' तथा 'वे' पुरुषवाचक तथा निश्चयवाचक दोनों सर्वनामों में प्रयोग किए जाते हैं। नीचे दिए गए वाक्य पढ़िए और दोनों के अन्तर को समझिए—

पुरुषवाचक सर्वनाम	निश्चयवाचक सर्वनाम
वह गूँगा है।	मेरी पुस्तक वह है।
वे घूमने गए हैं।	वे रहे आम के पेड़।

3. अनिश्चयवाचक सर्वनाम

ऐसे सर्वनाम शब्द जिनसे किसी निश्चित व्यक्ति या वस्तु का पता नहीं चलता, उन्हें **अनिश्चयवाचक सर्वनाम** कहते हैं; जैसे—

- विनोद के साथ कोई जा रहा था।
- किसी का बच्चा मेले में खो गया।
- वहाँ कुछ गिरा पड़ा है।

इन वाक्यों में कोई, किसी, कुछ अनिश्चयवाचक सर्वनाम हैं।

4. सम्बन्धवाचक सर्वनाम

ऐसे सर्वनाम शब्द जिनका वाक्य के दूसरे सर्वनाम शब्दों से सम्बन्ध स्थापित किया जाए, उन्हें **सम्बन्धवाचक सर्वनाम** कहते हैं; जैसे—

- जिसने बुलाया था वह अभी नहीं आया।
- जैसा करोगे वैसा फल पाओगे।
- जो तेज़ दौड़ेगा सो जीतेगा।

इन वाक्यों में जिसने-वह, जैसा-वैसा और जो-सो सम्बन्धवाचक सर्वनाम हैं।

5. प्रश्नवाचक सर्वनाम

ऐसे सर्वनाम शब्द जो प्रश्न पूछने के काम आते हैं, उन्हें **प्रश्नवाचक सर्वनाम** कहते हैं; जैसे—

- दरवाज़े के पास क्या रखा है?
- कविता कौन सुनाएगा ?
- आपके साथ किसे भेजा जाए ?

इन वाक्यों में क्या, कौन और किसे प्रश्नवाचक सर्वनाम हैं।

6. निजवाचक सर्वनाम

जो सर्वनाम पुरुषवाचक सर्वनाम के अपनेपन का बोध कराता है, वह निजवाचक सर्वनाम कहलाता है; जैसे—

- वे हमें बुलाकर आप चले गए।
- बिजली अपने आप आ गई।
- वह स्वयं उठकर बैठ गई।
- मैं खुद पौधों को पानी दे दूँगा।

इन वाक्यों में आप, अपने आप, स्वयं और खुद निजवाचक सर्वनाम हैं।

ध्यान रखिए

1. दूर की वस्तु या व्यक्ति की ओर संकेत करने के लिए 'वह' तथा पास की वस्तु या व्यक्ति की ओर संकेत करने लिए 'यह' निश्चयवाचक सर्वनाम का प्रयोग किया जाता है।
2. 'आप' सर्वनाम शब्द का प्रयोग पुरुषवाचक तथा निजवाचक दोनों प्रकार के सर्वनामों के लिए किया जाता है। इस अन्तर समझिए—
   - आप यहाँ बैठिए। (पुरुषवाचक सर्वनाम के रूप में)
   - वह आप चला गया। (निजवाचक सर्वनाम के रूप में)
3. किसी के प्रति आदर प्रकट करने के लिए 'तू', 'तुम' के स्थान पर 'आप' का प्रयोग किया जाता है।
4. 'तू' का प्रयोग अत्यधिक निकटता या ईश्वर के लिए ही किया जाता है।
5. अनिश्चयवाचक सर्वनाम शब्द 'कोई' का प्रयोग किसी व्यक्ति के लिए तथा 'कुछ' का प्रयोग किसी वस्तु के लि किया जाता है; जैसे—
   - कोई आया है।
   - वहाँ कुछ पड़ा है।

1. दिए गए उत्तरों में से सही विकल्प पर सही (✓) का चिह्न लगाइए—

(क) संज्ञा के स्थान पर प्रयोग किया जाने वाला शब्द क्या कहलाता है ?

(i) कारक (ii) सर्वनाम (iii) वचन (iv) लिंग

(ख) 'बाहर कोई खड़ा है।' वाक्य में 'कोई' सर्वनाम का कौन-सा भेद है ?

(i) अनिश्चयवाचक (ii) निश्चयवाचक (iii) पुरुषवाचक (iv) प्रश्नवाचक

(ग) प्रश्नवाचक सर्वनाम के लिए सही विकल्प क्या है ?

(i) कुछ (ii) किसने (iii) किसी ने (iv) तुमने

(घ) निजवाचक सर्वनाम के लिए कौन-सा शब्द प्रयुक्त होता है ?

(i) खुद (ii) जिसने (iii) किसने (iv) तुमने

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—

(क) निश्चित वस्तु के लिए प्रयोग किए जाने वाले सर्वनाम ..... कहलाते हैं।

(ख) ऐसे सर्वनाम शब्द जो बोलने वाला ..... प्रयोग में लाता है, उत्तम पुरुष सर्वनाम कहलाते हैं।

(ग) जो सर्वनाम शब्द सुनने वाले के लिए प्रयोग में लाए जाते हैं, उन्हें .... कहते हैं।

(घ) ऐसे सर्वनाम शब्द जिनसे किसी निश्चित वस्तु या व्यक्ति का पता नहीं चलता, उन्हें .... सर्वनाम कहते हैं।

(ङ) ऐसे सर्वनाम शब्द जो प्रश्न पूछने के काम आते हैं, उन्हें .... सर्वनाम कहते हैं।

3. रिक्त स्थानों में रंगीन शब्दों के स्थान पर उचित प्रश्नवाचक सर्वनाम लिखिए—

(क) चिड़िया घोंसला बनाती है।	चिड़िया .... बनाती है?
(ख) बाहर जहीर बैठा है।	बाहर .... बैठा है?
(ग) हमने देश के गुण गाए।	हमने .... गुण गाए?
(घ) डॉक्टर ने दवा दी।	.... दवा दी?

4. उपयुक्त सर्वनाम से वाक्य पूरे कीजिए—

(क) मैं अपना काम .... करता हूँ।

(ख) चाय में .... गिर गया है।

(ग) आपने सुमित को बुलाया था, ... आ गया है।

(घ) दरवाज़े पर .... है?

5. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए—

(क) सर्वनाम किसे कहते हैं? इसके कितने भेद होते हैं? प्रत्येक के तीन-तीन उदाहरण दीजिए।

(ख) पुरुषवाचक सर्वनाम के कितने भेद हैं? प्रत्येक के दो-दो उदाहरण दीजिए।

(ग) निश्चयवाचक और अनिश्चयवाचक सर्वनाम में क्या अन्तर है?

(घ) सर्वनाम शब्दों में किस-किस के अनुसार परिवर्तन होता है?

रचनात्मक गतिविधियाँ

- नीचे दिया गया अनुच्छेद पढ़िए। जो सर्वनाम शब्द जिसके लिए आया है, उसे उसके चित्र के सामने लिखिए—

खरगोश की चुनौती सुनकर कछुए स्तब्ध रह गए। बुज़ुर्ग कछुए ने तर्क प्रस्तुत किया, "देखो, तुम जवान हो। हम वृद्ध हो चुके हैं। तुमसे क्या दौड़ लगाएँगे? दौड़ तो हो चुकी। नतीज़ा हमें ही नहीं, सारे ज़माने को पता है।" खरगोश बोला, "मैं तो किसी भी एक से दौड़ लगाने को तैयार हूँ।"

....

....

....

....

....

....

जो पद संज्ञा और सर्वनाम पदों की विशेषता बताते हैं, उन्हें विशेषण कहते हैं; जैसे—

- यह होनहार बालक है।
- सज्जन व्यक्ति का सब आदर करते हैं।
- सब स्वादिष्ट भोजन पसन्द करते हैं।
- गुलाब सुन्दर पुष्प है।

उपर्युक्त वाक्यों में 'होनहार', 'सज्जन', 'स्वादिष्ट' और 'सुन्दर' शब्द विशेषण हैं, क्योंकि ये क्रमशः 'बालक', 'व्यक्ति', 'भोजन' और 'पुष्प' की विशेषता प्रकट करते हैं।

विशेष्य—विशेषण पद जिन संज्ञा अथवा सर्वनाम पदों की विशेषता बताते हैं, वे विशेष्य कहलाते हैं; जैसे— बालक, भोजन, व्यक्ति, फूल आदि।

विशेषण के भेद

विशेषण के निम्नलिखित पाँच भेद होते हैं—

1. गुणवाचक विशेषण जो विशेषण शब्द संज्ञा या सर्वनाम के गुण, दोष, स्वभाव, दशा, आकार, रंग आदि के विषय में बताते हैं, उन्हें गुणवाचक विशेषण कहते हैं; जैसे—

- मिकिन ने नीला कोट पहन रखा है।
- निखिल ने गुलाबी टाई लगा रखी है।
- मधुर गीत सब सुनते हैं।

उपर्युक्त वाक्यों में 'नीला', 'गुलाबी', 'मधुर' शब्द गुणवाचक विशेषण हैं।

2. संख्यावाचक विशेषण जो विशेषण शब्द संज्ञा या सर्वनाम की संख्या बताते हैं, उन्हें संख्यावाचक विशेषण कहते हैं; जैसे—

- वह मुझसे दोगुना दूध पीता है।
- तीन बालकों को इधर भेज दो।
- उसने कक्षा में दूसरा स्थान प्राप्त किया है।

उपर्युक्त वाक्यों में 'दोगुना', 'तीन', 'दूसरा' शब्द संख्यावाचक विशेषण हैं। संख्यावाचक विशेषण दो प्रकार के होते हैं—

(क) निश्चित संख्यावाचक विशेषण—इनसे संज्ञा या सर्वनाम की निश्चित संख्या का बोध होता है; जैसे—पाँच घोड़े, दस आम आदि।

(ख) अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण—इनसे संज्ञा या सर्वनाम की निश्चित संख्या का बोध नहीं होता; जैसे—कुछ सैनिक, हज़ारों लोग आदि।

3. परिमाणवाचक विशेषण जो विशेषण शब्द संज्ञा या सर्वनाम की मात्रा या परिमाण के विषय में बताते हैं, उन्हें परिमाणवाचक विशेषण कहते हैं। परिमाणवाचक विशेषणों से किसी वस्तु की नाप-तौल का पता चलता है।

परिमाणवाचक विशेषण के दो भेद होते हैं—

(क) निश्चित परिमाणवाचक विशेषण—जिन विशेषण शब्दों से किसी पदार्थ की निश्चित मात्रा अथवा नाप-तौल का ज्ञान होता है, उन्हें निश्चित परिमाणवाचक विशेषण कहा जाता है; जैसे—

● दो बीघा जमीन, ● पाँच किलो आम, ● दस ग्राम चाँदी।

यहाँ 'दो बीघा,' 'पाँच किलो' तथा 'दस ग्राम' क्रमशः जमीन, आम और चाँदी की निश्चित मात्रा के बारे में बता रहे हैं। अतः ये निश्चित परिमाणवाचक विशेषण हैं।

(ख) अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषण—जिन विशेषण शब्दों से किसी पदार्थ की निश्चित मात्रा अथवा नाप-तौल का ज्ञान नहीं होता, बल्कि एक अनुमानित परिमाण का ज्ञान होता है, उन्हें अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषण कहा जाता है; जैसे— ● इतनी-सी मिठाई, ● खीर में ज़्यादा शक्कर पड़ी है।

यहाँ 'इतनी-सी' और 'ज़्यादा' पद क्रमशः मिठाई और शक्कर की निश्चित मात्रा न बताकर केवल उसका अनुमान करा रहे हैं। अतः ये अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषण हैं।

4. सार्वनामिक विशेषण जो सर्वनाम शब्द संज्ञा शब्द से पहले विशेषण के रूप में आकर उनकी विशेषता बताते हैं, उन्हें सार्वनामिक विशेषण कहते हैं; जैसे— ● यह सेब मीठा है। ● वे शीला की सहेलियाँ हैं। ● उस बस में बैठ जाइए।

यहाँ 'यह', 'वे' और 'उस' सार्वनामिक विशेषण हैं।

5. व्यक्तिवाचक विशेषण व्यक्तिवाचक संज्ञा से बनने वाले विशेषण व्यक्तिवाचक विशेषण कहलाते हैं; जैसे—भारतीय किसान, इलाहाबादी अमरूद, नागपुरी सन्तरा, बनारसी साड़ी, लखनऊहा आम आदि।

निश्चयवाचक सर्वनाम और सार्वनामिक विशेषण में अन्तर

निश्चयवाचक सर्वनाम से किसी दूरवर्ती या समीपवर्ती व्यक्ति/वस्तु का बोध होता है; जबकि सार्वनामिक विशेषण संज्ञा शब्द से पहले आकर उसकी विशेषता बताता है; जैसे—

निश्चयवाचक सर्वनाम	सार्वनामिक विशेषण
यह जहरीला है।	यह साँप जहरीला है।
कोई घण्टी बजा रहा है।	कोई बच्चा घण्टी बजा रहा है।

प्रविशेषण

कभी-कभी वाक्य में कुछ विशेषण अन्य विशेषणों की विशेषता बताते हैं। ये प्रविशेषण होते हैं; जैसे—

● आम बहुत मीठा होता है। ● बनारसी आम दशहरी से कम महँगा होता है।

इन वाक्यों में 'बहुत' और 'कम' विशेषणों (मीठा और महँगा) की विशेषता बता रहे हैं। ये प्रविशेषण हैं।

विशेषणों की रचना

विशेषण बनाने के लिए संज्ञा, सर्वनाम अथवा क्रिया में प्रत्यय या परसर्ग जोड़े जाते हैं; जैसे—

1. संज्ञा शब्दों से

संज्ञा	विशेषण	संज्ञा	विशेषण	संज्ञा	विशेषण
घर	घरेलू	गुलाब	गुलाबी	धर्म	धार्मिक
नगर	नगरीय	भारत	भारतीय	मर्म	मार्मिक
दया	दयालु	करुणा	कारुणिक	सुख	सुखी

संज्ञा	विशेषण	संज्ञा	विशेषण	संज्ञा	विशेषण
धन	धनी	रोग	रोगी	तप	तपस्वी
रस	रसिक	आत्मा	आत्मिक	नभ	नाभिकीय
आदर	आदरणीय	जल	जलीय	बल	बलवान
मुख	मौखिक	वन	वन्य	ग्राम	ग्रामीण

2. सर्वनाम शब्दों से

सर्वनाम	विशेषण	सर्वनाम	विशेषण	सर्वनाम	विशेषण
मैं	मेरा	तुम	तुम्हारा	कौन	कैसा
यह	ऐसा	वह	वैसा	जो	जैसा

3. क्रिया शब्दों से

क्रिया	विशेषण	क्रिया	विशेषण	क्रिया	विशेषण
बेचना	बिकाऊ	चलना	चालू	टिकना	टिकाऊ
घूमना	घुमक्कड़	देखना	दिखावटी	हँसना	हँसोड़
भूलना	भुलक्कड़	पढ़ना	पढ़ाकू	लड़ना	लड़ाकू
गाना	गायक	पीना	पेय	पूजना	पूज्य

4. अव्यय शब्दों से

अव्यय	विशेषण	अव्यय	विशेषण	अव्यय	विशेषण
ऊपर	ऊपरी	भीतर	भीतरी	नीचे	निचला
आगे	अगला	बाहर	बाहरी	निकट	निकटस्थ

1. दिए गए उत्तरों में से सही विकल्प पर सही (✓) का चिह्न लगाइए—

(क) विशेषण जिस संज्ञा शब्द की विशेषता बतलाता है, उसे क्या कहते हैं?

(i) सर्वनाम ◯ (ii) विशेष्य ◯ (iii) विशिष्ट ◯ (iv) प्रविशेषण ◯

(ख) प्रविशेषण किसकी विशेषता बतलाता है?

(i) विशेषण ◯ (ii) विशेष्य ◯ (iii) संज्ञा ◯ (iv) सर्वनाम ◯

(ग) किसी वस्तु की नाप-तौल बताने वाला विशेषण कहलाता है?

(i) संकेतवाचक ◯ (ii) गुणवाचक ◯ (iii) परिमाणवाचक ◯ (iv) संख्यावाचक ◯

(घ) 'सेब बहुत मीठा होता है।' यहाँ 'बहुत' शब्द ..... है।

(i) विशेषण ◯ (ii) प्रविशेषण ◯ (iii) विशेष्य ◯ (iv) क्रियाविशेषण ◯

2. कोष्ठक में दिए गए शब्दों से विशेषण बनाकर रिक्त स्थानों में लिखिए—
(क) मनोज तलवार को बहादुरी के लिए .... पुरस्कार मिला। (राष्ट्र)
(ख) आजकल हमारे विद्यालय में .... समारोह की तैयारी हो रही है। (वर्ष)
(ग) .... क्रान्ति ने दुनिया का नक्शा ही बदल दिया। (उद्योग)
(घ) ए० आर० रहमान बहुत .... संगीतकार हैं। (अनुभव)
(ङ) वह लड़का बहुत .... है। (पढ़ना)

3. दिए गए संकेतों के अनुसार रिक्त स्थान भरिए—
(क) आप .... कक्षा में पढ़ते हो। *(संख्यावाचक विशेषण)*
(ख) गाय का दूध .... होता है। *(गुणवाचक विशेषण)*
(ग) एक क्विंटल में .... किलोग्राम होते हैं। *(परिमाणवाचक विशेषण)*
(घ) .... वृक्ष पर मीठे फल लगते हैं। *(सार्वनामिक विशेषण)*

4. कुछ विशेषण और विशेष्य नीचे दिए गए हैं। आप इनके उचित जोड़े बनाकर अलग-अलग लिखिए—

कलुषित	*सुगन्ध*	*साल*	*खेत*	*मोहक*	*परदा*	*लहलहाते*	*एक*	*सहस्त्रों*	*तीसरा*
घोड़े	*विचित्र*	*कोरी*	*पथ*	*पहर*	*घटना*	*जानवर*	*इस*	*कल्पना*	*पर्वतीय*

विशेषण	विशेष्य	विशेषण	विशेष्य
....	....	....	....
....	....	....	....
....	....	....	....
....	....	....	....
....	....	....	....
....	....	....	....

5. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए—
(क) विशेषण किसे कहते हैं? इसके कितने भेद होते हैं?
(ख) विशेष्य से आप क्या समझते हैं?
(ग) संख्यावाचक और परिमाणवाचक विशेषण में क्या अन्तर है?
(घ) प्रविशेषण किसे कहते हैं?

रचनात्मक गतिविधियाँ

● दिए गए संज्ञा शब्दों के विशेषण वर्ग-पहेली में से छाँटकर लिखिए—

उ	दा	र	ऊँ	चा
त्सा	अं	ग्रे	ज़ी	जं
ही	का	ला	वि	ग
प्र	प	वि	त्र	ली
ग	ह	री	ल	ली

....उदार.... व्यक्ति
.... भाषा
.... बरगद
.... ग्रन्थ
.... कपड़ा
.... युवक
.... मिर्च
.... खाई

जिन शब्दों से किसी कार्य के करने या होने का बोध होता है, उन्हें क्रिया कहते हैं। उदाहरणार्थ—खाना, उठना, बैठना, जागना, सोना, जीतना, भागना, दौड़ना, लिखना, गाना, खरीदना, बेचना, हँसना, रोना आदि क्रिया शब्द

सोना

दौड़ना

नाचना

सभी क्रियाएँ 'धातु' से बनती हैं; जैसे—

'हँस' धातु से हँसना, हँसूँगा, हँसा आदि क्रिया-रूप बनते हैं। हिन्दी भाषा में क्रिया वाक्य के अन्त में आती है। वाक्य में एक या एक से अधिक क्रिया शब्द हो सकते हैं। क्रिया के बिना वाक्य पूरा नहीं होता; जैसे—

भारती ने अध्यापिका से पूछा, "मैडम, क्या मैं पानी पीने चली जाऊँ ?"

"हाँ?" अध्यापिका ने कहा।

पहले वाक्य में 'पीने चली जाऊँ' क्रिया है। दूसरे वाक्य में आए 'हाँ' का अर्थ है—'हाँ, तुम पानी पीने जा स हो।' इस प्रकार क्रिया वाक्य के लिए आवश्यक है।

क्रिया के सम्बन्ध में कुछ विशेष बातें

(क) क्रिया विकारी शब्द है अर्थात् लिंग, वचन, कारक आदि के कारण क्रिया का रूप बदल जाता है; जैसे—

- बालक पढ़ रहा है।
- बालिका पढ़ रही है।
- बालक पढ़ रहे हैं।
- बालक पुस्तक पढ़ते हैं।
- बालक ने पुस्तक पढ़ी।

(ख) वाक्य की क्रिया को देखकर कर्ता, कर्म आदि के लिंग, वचन आदि का पता लगाया जा सकता है; जैसे—

- मोहन खेल रहा है। ('खेल रहा है'—क्रिया से पता चलता है कि वाक्य का कर्ता पुल्लिग, एकवचन है
- हमने लीचियाँ खाईं (खाईं क्रिया से पता चलता है कि वाक्य का कर्म स्त्रीलिंग, बहुवचन है।)

(ग) क्रिया एक शब्द की भी होती है तथा एक से अधिक शब्द की भी; जैसे—

- वह आया। (एक शब्द की क्रिया)
- वे आ रहे हैं। (एक से अधिक शब्द की क्रिया)

क्रिया के भेद

कर्म के आधार पर क्रिया के दो भेद होते हैं—1. अकर्मक क्रिया तथा 2. सकर्मक क्रिया।

1. अकर्मक क्रिया

जिन वाक्यों में कर्म नहीं होता उनकी क्रिया अकर्मक होती है। अकर्मक क्रिया में क्रिया का फल कर्ता पर पड़ता है;

जैसे— ● मीना हँसतीहै।

2. सकर्मक क्रिया

जिन वाक्यों में कर्म होता है उनकी क्रिया सकर्मक होती है। सकर्मक क्रिया में क्रिया का फल कर्म पर पड़ता है;

जैसे— ● महिमा कविताएँपढ़ रही है। ● प्रिया ने ईशानको लोरीसुनाई।

सकर्मक और अकर्मक क्रिया की पहचान करना

सकर्मक और अकर्मक क्रिया की पहचान करना सरल है। जिस वाक्य की क्रिया के विषय में जानना हो उसमें क्रिया से पहले क्या, किसे, किसको लगाकर प्रश्न पूछें। यदि उत्तर मिलता है तो क्रिया सकर्मक क्रिया होती है। यदि उत्तर नहीं मिलता तो क्रिया अकर्मक क्रिया होगी। नीचे दिए गए उदाहरणों से यह स्पष्ट हो जाएगा—

1. नोनी ने रीचा को टॉफ़ी दी।

प्रश्न : किसे दी?
उत्तर : रीचा को।
प्रश्न : क्या दी?
उत्तर : टॉफ़ी।

प्रश्न का उत्तर मिल गया। इसलिए 'दी' क्रिया सकर्मक क्रिया है।

2. घोड़ा दौड़ रहा है।

प्रश्न : क्या दौड़ रहा है?
उत्तर : प्रश्न का उत्तर नहीं मिला।

इसलिए 'दौड़ रहा है' क्रिया अकर्मक क्रिया है।

1. दिए गए उत्तरों में से सही विकल्प पर सही (✓) का चिह्न लगाइए—

(क) किसी काम के करने या होने की सूचना देने वाला शब्द क्या कहलाता है?

(i) क्रिया ( ) (ii) काल ( ) (iii) वाच्य ( )

(ख) जिस क्रिया को कर्म की आवश्यकता हो, वह क्या कहलाती है?

(i) अकर्मक ( ) (ii) सकर्मक ( ) (iii) नामधातु ( )

(ग) 'मेरे बड़े भाई ने आइसक्रीम खिलाई।' इस वाक्य में कर्म क्या है?

(i) खिलाई ( ) (ii) बड़े भाई ( ) (iii) आइसक्रीम ( )

(घ) अकर्मक क्रिया में कार्य का फल किस पर पड़ता है?

(i) कर्म ( ) (ii) कर्ता ( ) (iii) किसी पर नहीं ( )

2. निम्नलिखित वाक्यों में से क्रियाएँ छाँटकर लिखिए—

(क) शिखा विद्यालय जाती है।
(ख) पुलिस ने चोर को पकड़ लिया।
(ग) मैं देशसेवा की प्रतिज्ञा करता हूँ।
(घ) अब हम खेलेंगे।
(ङ) तुम ठीक कहते हो।
(च) देखो, डाकिया आ रहा है।

3. निम्नलिखित वाक्यों के सामने सही (✓) या गलत (✗) का चिह्न लगाइए—

(क) वाक्य में क्रिया काम के होने या करने की सूचना देती है। ✓
(ख) जिन वाक्यों में दो कर्म होते हैं उन्हें एककर्मक कहते हैं। ✗
(ग) क्रिया के साथ 'क्या' प्रश्न करने पर उत्तर मिले तो एककर्मक क्रिया होती है। ✗
(घ) कर्म की दृष्टि से क्रिया तीन प्रकार की होती है—अकर्मक, सकर्मक और द्विकर्मक। ✓

4. निम्नलिखित वाक्यों में से कर्म छाँटकर लिखिए—

(क) रमेश ने मुझे एलबम दिखाया।
(ख) बच्चों ने सुन्दर गीत गाया।
(ग) मैंने अपना गृह-कार्य पूरा कर लिया है।
(घ) नानी बच्चों को कहानी सुनाती है।

5. निम्नलिखित वाक्यों के लिए 'अकर्मक' या 'सकर्मक' लिखिए—

(क) सौम्या खिलौनों से खेल रही है।
(ख) सब रातभर जागते रहे।
(ग) वृक्ष झुका हुआ खड़ा था।
(घ) सूर्य संसार को प्रकाश देता है।
(ङ) विदिशा लता को कहानी सुना रही है।

6. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए—

(क) वाक्य में प्रयुक्त क्रिया क्या सूचना देती है?
(ख) 'सकर्मक क्रिया' से आप क्या समझते हैं?
(ग) 'अकर्मक क्रिया' का स्वरूप बताइए।

रचनात्मक गतिविधियाँ

- क्रियापद छाँटकर वाक्य पूरे कीजिए—

(क) माता जी दूध ..... उबालेंगी ..... ।
(ख) हमने सभी मैच ..... ।
(ग) गौरव आगरा ..... ।
(घ) बन्दर पेड़ से नीचे ..... ।
(ङ) भारतीय सेना ने विजय ..... ।
(च) हम सरकस देखने ..... ।
(छ) मदारी ने भालू का नाच ..... ।

कूदे
जीते
दिखाया
उबालेंगी
प्राप्त की
जा रहे हैं
जाएगा

11

क्रिया : काल और वाच्य
Verb : Tense and Voice

काल

क्रिया का वह रूप जिससे उसके होने के समय का बोध हो, काल कहलाता है। कैलेंडर में दिए गए दिन और तारीखें भी समय की ही जानकारी देते हैं। प्रत्येक काम या घटना का अपना एक खास समय होता है। पढ़िए और समझिए—

आज शहर में हड़ताल है।

पूजा सुबह पाठशाला गई।

गाड़ी पाँच बजे आएगी।

उपर्युक्त वाक्यों में 'आज', 'सुबह' और 'पाँच बजे' ये शब्द समय बताने वाले हैं; जबकि 'है', 'गई' तथा 'आएगी' ये क्रियारूप क्रिया होने का समय या काल बताते हैं।

काल के भेद

काल के तीन भेद होते हैं—1. वर्तमान काल, 2. भूतकाल तथा 3. भविष्यत्काल।

1. वर्तमान काल

क्रिया के जिस रूप से यह बोध हो कि कार्य हो रहा है, उसे वर्तमान काल कहते हैं। वर्तमान काल के निम्नलिखित तीन भेद होते हैं—

(क) सामान्य वर्तमान काल—क्रिया के जिस रूप से कार्य की वर्तमान में सामान्य प्रवृत्ति या स्थिति का बोध होता है, उसे सामान्य वर्तमान काल कहते हैं; जैसे—

1. किसान खेत में काम करता है।
2. भिखारी भीख माँगता है।

(ख) अपूर्ण वर्तमान काल—क्रिया के जिस रूप से कार्य के वर्तमान में चलते रहने का बोध होता है, उसे अपूर्ण वर्तमान काल कहते हैं; जैसे—

1. किसान खेत में काम कर रहा है।
2. भिखारी भीख माँग रहा है।

(ग) सन्दिग्ध वर्तमान काल—क्रिया के जिस रूप से कार्य के होने में सन्देह का आभास हो, उसे सन्दिग्ध वर्तमान काल कहते हैं; जैसे—

1. किसान खेत में काम कर रहा होगा।
2. भिखारी भीख माँग रहा होगा।

2. भूतकाल

क्रिया के जिस रूप से यह बोध हो कि कार्य बीते समय में पूर्ण हो चुका है, उसे भूतकाल कहते हैं। इस प्रकार, भूतकाल का अर्थ है—बीता हुआ समय। भूतकाल के अग्रलिखित छः भेद होते हैं—

(क) सामान्य भूतकाल—भूतकाल के साधारण रूप को सामान्य भूतकाल कहते हैं; जैसे—

1. सिंह गरजा।
2. सीमा आई।

(ख) आसन्न भूतकाल—क्रिया के जिस रूप से यह पता चले कि कार्य भूतकाल में अभी-अभी पूरा हुआ आसन्न भूतकाल कहते हैं; जैसे—

1. शान्ति ने पुस्तक पढ़ ली है।
2. हिरन वन में भाग गया है।

(ग) पूर्ण भूतकाल—जब क्रिया भूतकाल में काफ़ी समय पहले पूर्ण हो चुकी हो, उसे पूर्ण भूतकाल कहते हैं; जैसे—

1. मोती घर जा चुका था।
2. सीता नौ बजे सो चुकी थी।

(घ) अपूर्ण भूतकाल—क्रिया के जिस रूप से यह पता चले कि क्रिया बीते हुए समय में हो रही थी और हुई थी, उसे अपूर्ण भूतकाल कहते हैं; जैसे—

1. सिंह गुफा में सो रहा था।
2. पक्षी आकाश में उड़ रहा था।

(ङ) सन्दिग्ध भूतकाल—जिस क्रिया से भूतकाल का बोध तो हो, लेकिन क्रिया के होने में सन्देह हो, वहाँ भूतकाल होता है; जैसे—

1. मोहन ने पुस्तक पढ़ी होगी।
2. रुचि ने गीत गाया होगा।

(च) हेतु-हेतुमद् भूतकाल—जहाँ भूतकाल की एक क्रिया दूसरी क्रिया पर निर्भर होती है, उसे हेतु-भूतकाल कहते हैं; जैसे—

1. वर्षा होती तो अन्न होता।
2. सर्दी पड़ती तो बर्फ़ जमती।

यहाँ 'अन्न का होना वर्षा होने पर' और 'बर्फ़ का जमना सर्दी पड़ने पर' निर्भर करता है। अत: ये हेतु-भूतकाल की क्रियाएँ हैं।

3. भविष्यत्काल

क्रिया के जिस रूप से यह बोध हो कि कार्य आने वाले समय में होगा, उसे भविष्यत्काल कहते हैं। भविष्य का होता है—आने वाला समय। आने वाले समय में होने वाली क्रिया भविष्यत्काल क्रिया कहलाती है। भविष्यत्काल निम्नलिखित तीन भेद होते हैं—

(क) सामान्य भविष्यत्काल—भविष्यत्काल के साधारण रूप अर्थात् क्रियाओं के जिस रूप से आने वाले समय में कार्य के निश्चित रूप से सम्पन्न होने का बोध होता है, उसे **सामान्य भविष्यत्काल** कहते हैं; जैसे—

- हम मेला देखने जाएँगे।

(ख) सम्भाव्य भविष्यत्काल—भविष्यत्काल की जिस क्रिया में सम्भावना पाई जाए, उसे सम्भाव्य भविष्यत् कहते हैं; जैसे—

1. शायद शाम को वर्षा हो।
2. तब वह सो रहा होगा।

(ग) हेतु-हेतुमद् भविष्यत्काल—जब भविष्यत्काल में सम्पन्न होने वाली क्रिया के सम्पन्न होने में कोई का निहित हो तो वहाँ हेतु-हेतुमद् भविष्यत्काल होता है; जैसे—

1. आप बुलाओगे तो मैं अवश्य आऊँगा।
2. यदि तुम सुनो तो मैं पढ़ूँ।

वाच्य

वाच्य क्रिया का वह रूप है जिससे यह बोध हो कि क्रिया का प्रधान विषय कर्ता है, कर्म है अथवा भाव है।

इस आधार पर वाच्य के तीन भेद होते हैं—1. कर्तृवाच्य, 2. कर्मवाच्य, 3. भाववाच्य।

1. कर्तृवाच्य

इसमें कर्ता की प्रधानता रहती है। अत: क्रिया का लिंग, वचन और पुरुष कर्ता के लिंग, वचन और पुरुप के अनुसार होता है; जैसे—

(क) खुशी पुस्तक पढ़ती है।

(ख) गौरव पतंग उड़ा रहा है।

(ग) बिल्ली दूध पीती है।

इन वाक्यों में खुशी, गौरव और बिल्ली क्रमश: 'पढ़ती है', 'उड़ा रहा है', 'पीती है' क्रियाओं के कर्ता हैं। इन सभी वाक्यों में प्रयुक्त क्रियाओं के लिंग और वचन अपने-अपने कर्ताओं के अनुसार हैं। अत: ये वाक्य कर्तृवाच्य हैं।

2. कर्मवाच्य

इसमें कर्म की प्रधानता रहती है। अत: क्रिया का लिंग और वचन कर्म के लिंग और वचन के अनुसार होता है। इसमें क्रिया सदा सकर्मक पुल्लिग होती है; जैसे—

(क) खुशी के द्वारा पुस्तक पढ़ी जाती है।

(ख) गौरव से पतंग उड़ाई जाती है।

(ग) बिल्ली से दूध पीया जा रहा है।

इन वाक्यों में 'पढ़ी जाती है', 'उड़ाई जाती है, 'पीया जा रहा है' ये सभी क्रियाएँ कर्म के लिंग और वचन के अनुसार प्रयोग की गई हैं। अत: ये कर्मवाच्य हैं।

3. भाववाच्य

इसमें कर्ता या कर्म प्रधान न होकर केवल क्रिया का भाव प्रधान होता है। इसमें क्रिया सदा अकर्मक पुल्लिग होती है; जैसे—

(क) खुशी से पढ़ा नहीं जाता।

(ख) गौरव से उड़ाई नहीं जाती।

(ग) बिल्ली से पीया नहीं जाता।

1. इसमें भाववाच्य के बारे में कर्ता और कर्म की प्रधानता नहीं होती।
2. इसमें मुख्यत: अकर्मक क्रिया का ही प्रयोग होता है।
3. प्राय: निषेधार्थक वाक्य ही भाववाच्य में प्रयुक्त होते हैं।
4. इसमें क्रिया सदा पुल्लिग, अन्य पुरुष, एकवचन की होती है।

वाच्य परिवर्तन

कर्तृवाच्य से कर्मवाच्य बनाना

1. कर्ता के साथ 'से, द्वारा, के द्वारा' आदि जोड़ दिया जाता है।
2. कर्म के बाद मुख्य धातु में 'आ' अथवा 'या' जोड़ दिया जाता है तथा उसके बाद 'जा' धातु आती है।

कर्तृवाच्य	कर्मवाच्य
(क) संजीव कविता लिखता है।	संजीव के द्वारा कविता लिखी गई।
(ख) माँ फल खरीदेगी।	माँ के द्वारा फल खरीदे जाएँगे।
(ग) बच्चे क्रिकेट खेल रहे हैं।	बच्चों के द्वारा क्रिकेट खेला जा रहा है।
(घ) रीना गीत गा रही है।	रीना के द्वारा गीत गाया गया।

कर्तृवाच्य से भाववाच्य बनाना

1. क्रिया को अन्य पुरुष, एकवचन में परिवर्तित कर दिया जाता है। भाववाच्य की क्रिया बहुवचन में कभी आती। कर्ता के साथ 'से' जोड़ा जाता है।
2. क्रिया को सामान्य भूतकाल अथवा सामान्य भविष्यत्काल में बदल दिया जाता है तथा काल के अनुसार क्रिया का रूप जोड़ दिया जाता है।
3. भाववाच्य के वाक्य प्राय: नकारात्मक होते हैं। अत: कर्तृवाच्य के वाक्यों में 'नहीं' जोड़ दिया जाता है।

कर्तृवाच्य	भाववाच्य
(क) शिवानी नहीं नाचती है।	शिवानी से नाचा नहीं जाता है।
(ख) कछुआ नहीं दौड़ता।	कछुए से दौड़ा नहीं जाता।
(ग) निशान्त हँसता है।	निशान्त से हँसा जाता है।
(घ) नन्ही बच्ची नहीं रोती है।	नन्ही बच्ची से रोया नहीं जाता है।

1. दिए गए उत्तरों में से सही विकल्प पर सही (✓) का चिह्न लगाइए—

(क) बीते हुए समय को कहते हैं—

(i) भूतकाल (ii) वर्तमान काल (iii) भविष्यत्काल (iv) महाकाल

(ख) काल के कितने भेद होते हैं—

(i) दो (ii) तीन (iii) चार (iv) पाँच

(ग) क्रिया के जिस रूप से उसके वर्तमान में घटने की सूचना मिले, वह किस काल की क्रिया कहलाती है?

(i) भूतकाल (ii) वर्तमान काल (iii) भविष्यत्काल (iv) महाकाल

2. निम्नलिखित वाक्यों में रिक्त स्थान भरिए—

(क) क्रिया के होने के समय की जानकारी हमें ..... काल ..... से मिलती है।

(ख) क्रिया के जिस रूप से उसके ..... में होने का पता चले, उसे भूतकाल की क्रिया कहते हैं।

(ग) क्रिया के जिस रूप से उसके भविष्य में घटित होने की जानकारी मिले, उसे ..... की क्रिया कहते हैं।

3. निम्नलिखित वाक्यों में रंगीन क्रियाओं के काल लिखिए—

(क) कुत्ते ने घर में प्रवेश किया। .....

(ख) सैनिक युद्ध करेंगे। .....

(ग) सविता पढ़ रही है। .....

(घ) वहाँ बहुत शोर हो रहा था। .....

(ङ) हम झूठ नहीं बोल रहे हैं। .....

(च) मन्त्रीजी ने लोगों की शिकायतें सुनीं। .....

(छ) मैं गाजर खाता हूँ। .....

4. भविष्यत्काल का उचित रूप चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—

(क) गाड़ी तीन बजे .....।

(ख) छाते के बिना तुम .....।

(ग) मन्दिर चार बजे .....।

(घ) हम सब मिलकर दीवाली .....।

(ङ) मैं घोड़े पर सवारी .....।

(च) लव-कुश घोड़े को .....।

पकड़ेंगे
करूँगा
भीग जाओगे
खुलेगा
आएगी
मनाएँगे

5. संकेत के अनुसार क्रिया का काल बदलिए—

(क) राज कोलकाता गया था। *(वर्तमान काल)* .....

(ख) कुछ व्यक्ति बाग में सफ़ाई कर रहे हैं। *(भविष्यत्काल)* .....

(ग) अध्यापक जी कक्षा में पढ़ा रहे हैं। *(भूतकाल)* .....

(घ) संयोग पढ़ने के लिए विदेश जाएगा। *(वर्तमान काल)* .....

(ङ) मैं अपना गृहकार्य करूँगा। *(भूतकाल)* .....

6. निम्नलिखित वाक्यों के वाच्य लिखिए—

(क) संजय चाय बना रहा है। .....

(ख) पिताजी अख़बार पढ़ते हैं। .....

(ग) महिलाएँ गीत गा रही हैं। .....

(घ) छात्र पुस्तक पढ़ते हैं। .....

(ङ) सोहन से सोया नहीं जाता। .....

7. निम्नलिखित वाक्यों को निर्देशानुसार वाच्य में बदलिए—

(क) धोबी द्वारा कपड़े धोए जाते हैं। *(कर्तृवाच्य)* ....

(ख) योगेश से दौड़ा जाएगा। *(कर्तृवाच्य)* ....

(ग) महिमा हरी सब्ज़ियाँ नहीं खाती। *(कर्मवाच्य)* ....

(घ) छात्र गणित पढ़ते हैं। *(कर्मवाच्य)* ....

(ङ) हाथी तेज़ नहीं दौड़ता। *(भाववाच्य)* ....

(च) मैं रोज़ नहीं नहाता हूँ। *(भाववाच्य)* ....

8. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए—

(क) काल का क्या अर्थ है? इसके कितने भेद होते हैं?

(ख) वर्तमान काल के कितने भेद होते हैं? वर्णन कीजिए।

(ग) भूतकाल के भेद उदाहरण सहित लिखिए।

(घ) भविष्यत्काल के भेदों के विषय में आप क्या जानते हैं?

(ङ) वाच्य किसे कहते हैं?

(च) कर्मवाच्य और भाववाच्य का अन्तर उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

रचनात्मक गतिविधियाँ

- पाठ्य-पुस्तक के किसी पाठ से कर्तृवाच्य वाले वाक्य छाँटकर लिखिए। अब अपने सहपाठी के साथ मिलकर इ कर्तृवाच्य वाले वाक्यों को कर्मवाच्य में बदलिए। जैसे—

कर्तृवाच्य	कर्मवाच्य
1. राम ने रावण को मारा।	1. रावण राम के द्वारा मारा गया।
2.	2. ....
3.	3. ....
4.	4. ....

अव्यय / अविकारी शब्द
Indeclinable Words

जिन शब्दों के रूप में लिंग, वचन और काल के प्रभाव के कारण कोई भी विकार या परिवर्तन नहीं होता, वे अव्यय (अविकारी) शब्द कहलाते हैं। अव्यय के मुख्यत: चार भेद होते हैं—

1. क्रियाविशेषण

ऐसे अविकारी शब्द जो क्रिया की विशेषता बताते हैं, क्रियाविशेषण कहलाते हैं; जैसे—

1. रेशमा वहाँ झाड़ू लगा रही है।
2. जूही भीतर बैठी गीत गा रही है।
3. दुकानदार का सामान फटाफट बिक गया।
4. हम सबने आम बराबर बाँटकर खाए।

उपर्युक्त वाक्यों में 'वहाँ', 'भीतर', 'फटाफट' व 'बराबर' शब्द क्रियाविशेषण हैं, क्योंकि ये क्रिया की विशेषता बता हैं।

ियाविशेषण के भेद

क्रियाविशेषण के निम्नलिखित चार भेद होते हैं—

1. रीतिवाचक क्रियाविशेषण—जिन क्रियाविशेषण शब्दों से क्रिया के होने की रीति या ढंग का पता चलता है, हें रीतिवाचक क्रियाविशेषण कहते हैं; जैसे—

(क) कल्पना जल्दी-जल्दी बोलती है।
(ख) रोशन झटपट भाग गया।

यहाँ 'जल्दी-जल्दी' और 'झटपट' रीतिवाचक क्रियाविशेषण हैं।

2. कालवाचक क्रियाविशेषण—जिन क्रियाविशेषण शब्दों से क्रिया के होने के समय का पता चलता है, उन्हें ालवाचक क्रियाविशेषण कहते हैं; जैसे—

(क) ईशान नानी के घर कभी-कभी जाता था।
(ख) संगीता पहाड़ी पर बार-बार जा रही है।

यहाँ 'कभी-कभी और 'बार-बार' कालवाचक क्रियाविशेषण हैं।

3. स्थानवाचक क्रियाविशेषण—जिन क्रियाविशेषण शब्दों से क्रिया के होने का स्थान पता चलता है, उन्हें थानवाचक क्रियाविशेषण कहते हैं; जैसे—

(क) तोता पास आकर बैठ गया।
(ख) सारिका दाईं ओर रहती है।

यहाँ 'पास' तथा 'दाईं ओर' स्थानवाचक क्रियाविशेषण हैं।

4. परिमाणवाचक क्रियाविशेषण—जिन क्रियाविशेषण शब्दों से क्रिया के परिमाण (मात्रा) का पता चलता है, उन्हें परिमाणवाचक क्रियाविशेषण कहते हैं; जैसे—

(क) कम बोलो, काम अधिक करो।
(ख) मोहित ने खाना ज़रा-सा खाया।

यहाँ 'कम', 'अधिक' और 'ज़रा-सा' परिमाणवाचक क्रियाविशेषण हैं। ये शब्द 'बोलो', 'काम करो' और 'खाया' क्रियाओं के परिमाण का बोध कराते हैं।

प्रमुख क्रियाविशेषण शब्द

रीतिवाचक—एकाएक, अचानक, यथासम्भव, के कारण, अवश्य, स्वयं, तेज़, शीघ्र, धीरे-धीरे आदि।

कालवाचक—रातभर, दिनभर, जब, तब, तुरन्त, अभी, सुबह आदि।

स्थानवाचक—उधर, इधर, यहाँ, वहाँ, उस ओर, इस ओर, आस-पास, दाएँ, बाएँ आदि।

परिमाणवाचक—ज़्यादा, थोड़ी-सी, उतना, जितना, बराबर, अधिक, थोड़ा-थोड़ा, काफ़ी, अत्यन्त आदि।

कुछ करके सीखें

1. रिक्त स्थानों में क्रियाविशेषण के भेद का नाम लिखिए—

(क) जिन क्रियाविशेषण शब्दों से क्रिया के होने के स्थान का पता चलता है, उन्हें ..... कहते हैं।

(ख) जिन क्रियाविशेषण शब्दों से क्रिया के होने की रीति या ढंग का पता चलता है, उन्हें ..... कहते हैं।

(ग) जिन क्रियाविशेषण शब्दों से क्रिया के होने के समय का पता चलता है, उन्हें ..... कहते हैं।

(घ) जिन क्रियाविशेषण शब्दों से क्रिया के परिमाण का पता चलता है, उन्हें ..... कहते हैं।

2. निम्नलिखित वाक्यों में आए क्रियाविशेषण शब्दों को रेखांकित करके उनके भेदों के नाम लिखिए—

(क) गिलहरी तेज़ी-से उछली तो चिड़िया उड़ गई। .....

(ख) नाविक ने यात्रियों को धीरे-धीरे उतारा। .....

(ग) पुलिस ने चोर को यहाँ पकड़ा था। .....

(घ) मेरी बुआ परसों दिल्ली आएँगी। .....

(ङ) सब लोग बारी-बारी से प्रसाद लो। .....

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए—

(क) क्रियाविशेषण किसे कहते हैं?

(ख) क्रियाविशेषण के कितने भेद होते हैं? परिभाषा सहित समझाइए।

(ग) परिमाणवाचक क्रियाविशेषण का अर्थ सोदाहरण समझाइए।

2. सम्बन्धबोधक

संज्ञा या सर्वनाम शब्दों के साथ आकर उनका वाक्य के अन्य शब्दों (संज्ञा या सर्वनाम) से सम्बन्ध बताने वाले श सम्बन्धबोधक कहलाते हैं; जैसे—

1. साबुन के साथ एक पेन्सिल मुफ़्त मिलेगी। 2. छत पर बन्दर बैठा है। 3. चोर के पीछे लोग भाग रहे

उपर्युक्त वाक्यों में आए 'के साथ', 'पर', 'के पीछे' शब्द संज्ञा शब्दों के साथ आए हैं। ये शब्द वाक्य के अन्य श के साथ सम्बन्ध प्रकट कर रहे हैं। अत: ये सम्बन्धबोधक शब्द हैं। इन्हें परसर्ग भी कहते हैं।

विशेष—हिन्दी में कुछ शब्द ऐसे हैं जिनका प्रयोग क्रियाविशेषण तथा सम्बन्धबोधक दोनों रूपों में किया जाता है जैसे—सामने, आगे, पीछे, बाहर, भीतर, ऊपर आदि।

जब ये शब्द किसी क्रिया की विशेषता बताते हैं, तो क्रियाविशेषण कहलाते हैं; किन्तु जब ये दो संज्ञा या सर्वनाम शब्दों के बीच सम्बन्ध का बोध कराते हैं, तो इन्हें सम्बन्धबोधक कहा जाता है; जैसे—

शब्द	क्रियाविशेषण के रूप में	सम्बन्धबोधक के रूप में
आगे	मोहित आगे चल रहा है।	मोहित चाचा के आगे चल रहा है।
नीचे	ईशु नीचे बैठा है।	ईशु चारपाई के नीचे छिप गया।
पीछे	मनोज पीछे आया है।	मनोज दीवार के पीछे खड़ा है।
सामने	ज़रा! सामने देखो।	गाड़ी के सामने से हट जाओ।
ऊपर	गरिमा ऊपर सो रही है।	गरिमा छत के ऊपर सो रही है।
यहाँ	तुम यहाँ रहते हो।	तुम अपने मामाजी के यहाँ रहते हो।

सम्बन्धबोधक अव्ययों के साथ प्राय: 'के', 'की', 'से' आदि शब्द जुड़े होते हैं। क्रियाविशेषण में ये शब्द नहीं जुड़ते।

1. निम्नलिखित वाक्यों में से सम्बन्धबोधक छाँटकर लिखिए—
   (क) मिकिन गाँव से बाहर गया है। .....
   (ख) उसका घर बाज़ार के पास है। .....
   (ग) मैं अपने मामाजी के साथ मुम्बई जा रही हूँ। .....
   (घ) कृपया स्कूल के अन्दर चलिए। .....
   (ङ) पलक, भूमि के बाद आई। .....
   (च) मानसी डर के मारे काँप रही थी। .....

2. रिक्त स्थानों में उचित सम्बन्धबोधक लिखिए—
   (क) शोर ..... मेरी पढ़ाई नहीं हो पाती।
   (ख) मैं अपने मामाजी ..... रहता हूँ।
   (ग) मेंढक पानी ..... चला गया।
   (घ) पत्र ..... मुझे सूचना मिली।
   (ङ) भोजन ..... टहलना अच्छा होता है।
   (च) बूढ़े दादाजी लाठी ..... चलते हैं।

3. समुच्चयबोधक

जो शब्द दो शब्दों, वाक्यों या वाक्यांशों को जोड़ते हैं, उन्हें समुच्चयबोधक कहते हैं; जैसे—

1. सोहन और अमित मित्र हैं।
2. मोहन बहुत पढ़ा लेकिन अंक कम आए।
3. तुम कहोगे तो दीदी मेला देखने चलेंगी।

उपर्युक्त वाक्यों में 'और' दो शब्दों को तथा 'लेकिन' और 'तो' दो वाक्यों को जोड़ने का काम कर रहे हैं। ये समुच्चयबोधक हैं। इन्हें योजक भी कहते हैं।

समुच्चयबोधक के भेद

समुच्चयबोधक के निम्नलिखित दो भेद होते हैं—

1. समानाधिकरण समुच्चयबोधक—इसमें समानता के आधार पर वाक्यांशों को जोड़ने वाले योजक आते हैं। जैसे—

(क) सतीश और हिमांशु एकसाथ स्कूल गए।

(ख) मानसी विद्यालय पहुँच गई किन्तु वंश अभी तक नहीं पहुँचा।

2. व्याधिकरण समुच्चयबोधक—ये एक या एक से अधिक आश्रित उपवाक्यों को प्रधान वाक्य से जोड़ते हैं। जैसे—

(क) आचार्य जी कहते हैं कि ईश्वर एक है।

(ख) यद्यपि तुषार अभी बच्चा है तथापि बहुत चतुर है।

कुछ करके सीखें

1. उचित समुच्चयबोधक शब्द से रिक्त स्थान भरिए—

(क) राधिका ..... परी मौसम का चार्ट बनाएँगी। *(और, बल*

(ख) ऋचा ने कहा, चल ..... शालिनी चल पड़ी। *(ताकि,*

(ग) मिकिन को सन्दीप के साथ जाना था ..... नहीं गया। *(परन्तु, मा*

(घ) अमित मूर्ख था ..... राहुल के साथ चला गया। *(और,*

(ङ) विक्रान्त परिश्रम करो ..... फेल हो जाओगे। *(इसलिए, अन्य*

2. निम्नलिखित वाक्यों में से समुच्चयबोधक शब्द चुनकर लिखिए—

(क) बस चल रही थी और यात्री सो रहे थे। .....

(ख) चाहे चप्पल खरीदो या जूता, दाम एक ही लगेगा। .....

(ग) कमरा साफ़ कर दो नहीं तो मम्मी डाँटेंगी। .....

(घ) अंजलि को नहीं बल्कि मानसी को पुरस्कार मिला। .....

(ङ) पापा सोच रहे थे कि हर्ष ही प्रथम आएगा। .....

(च) सलीम को गणित पढ़ाओ ताकि वह उत्तीर्ण हो सके। .....

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए—

(क) समुच्चयबोधक किसे कहते हैं? इसके कितने भेद होते हैं?

(ख) समानाधिकरण समुच्चयबोधक किसे कहते हैं? उदाहरण दीजिए।

(ग) व्याधिकरण समुच्चयबोधक की परिभाषा सोदाहरण लिखिए।

4. विस्मयादिबोधक

जो शब्द मन के भावों विस्मय (आश्चर्य), शोक, घृणा, प्रशंसा, प्रसन्नता आदि को प्रकट करते हैं, उन्हें विस्मयादिबोधक शब्द कहते हैं; जैसे—

1. वाह! मोर कितना सुन्दर पक्षी है।
2. छि:! कितनी दुर्गन्ध है।
3. अरे! तुम कब आए?
4. शाबाश! परीक्षा में क्या अंक पाए हैं।
5. हाय! स्वाइन फ्लू से कितने परिवार उजड़ गए।

उपर्युक्त वाक्यों में 'वाह!', 'अरे!', 'शाबाश!', 'छि!' तथा 'हाय!' पद विभिन्न मनोभावों को व्यक्त कर रहे हैं। ये सभी विस्मयादिबोधक शब्द हैं।

विस्मयादिबोधक की विशेषताएँ

1. ये प्राय: वाक्य के प्रारम्भ में आते हैं।
2. इनके द्वारा भावों की तीव्रता प्रकट की जाती है।

विस्मयादिबोधक भाव और शब्द

क्रम	भाव	शब्द
1.	विस्मय, आश्चर्य	ओह!, ओहो!, क्या!, अरे! हैं!
2.	शोक, पीड़ा	हाय!, उफ़!, आह!, हे राम!
3.	प्रशंसा, प्रोत्साहन	शाबाश!, वाह!, बहुत सुन्दर!
4.	उत्साह, प्रसन्नता	वाह!, आह!, धन्य-धन्य!
5.	क्रोध	अरे!, चुप!
6.	घृणा	छि:-छि:!, धत्!, ओफ़!, धिक्!
7.	भय	हाय!, बाप रे!
8.	चेतावनी	सावधान!, खबरदार!, बचो!
9.	इच्छा	काश!, हाय!
10.	अनुमोदन	अच्छा!, हाँ-हाँ!
11.	सम्बोधन	अजी!, हे!, अरे!

कुछ करके सीखें

1. निम्नलिखित वाक्यों में रिक्त स्थानों की पूर्ति विस्मयादिबोधक शब्दों से कीजिए—
   (क) ..... ! तुमने तो कमाल कर दिया।
   (ख) ..... ! तुम कब आए?
   (ग) ..... ! जरा सब्ज़ी खरीद लाइए।
   (घ) ..... ! उनका दु:ख देखा नहीं जाता।
   (ङ) ..... ! तो तुम ही सारे झगड़े की जड़ हो।
2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए—
   (क) विस्मयादिबोधक किसे कहते हैं? कोई तीन विस्मयादिबोधक भाव बताइए।
   (ख) विस्मयादिबोधक की क्या-क्या विशेषताएँ होती हैं?

13 शब्द-रचना : उपसर्ग और प्रत्य
Word Formation : Prefix and Suf

प्रत्येक भाषा में नए शब्दों की रचना की प्रक्रिया चलती रहती है। हिन्दी भाषा में शब्द-रचना की दो प्रमुख विधि हैं—उपसर्ग लगाकर तथा प्रत्यय जोड़कर। उपसर्ग और प्रत्यय का स्वतन्त्र प्रयोग नहीं होता, इसीलिए इन्हें शब्द शब्दांश कहते हैं। ये मूल शब्दों से जुड़कर उनके अर्थ में परिवर्तन लाते हैं।

यहाँ हम दोनों विधियों का विस्तार से उल्लेख करेंगे।

उपसर्ग

जो शब्दांश किसी शब्द से पूर्व लगकर उसके अर्थ में कुछ विशेषता या परिवर्तन ला देता है, उपसर्ग कहलाता है। जैसे—स्वतन्त्र और परतन्त्र। यहाँ 'स्व' और 'पर' उपसर्ग के कारण 'तन्त्र' शब्द के अर्थ में विशेषता आ गई है।

स्व + तन्त्र = स्वतन्त्र

पर + तन्त्र = परतन्त्र

यह नवीन शब्द-रचना की महत्त्वपूर्ण विधि है।

हिन्दी में विभिन्न प्रकार के उपसर्गों का प्रयोग करके शब्द-रचना की जाती है। इनमें से कुछ निम्न प्रकार हैं—

1. संस्कृत के उपसर्ग,
2. हिन्दी के उपसर्ग,
3. उर्दू के उपसर्ग,
4. उपसर्ग की तरह प्रयोग किए जाने वाले संस्कृत के अव्यय।

1. संस्कृत के उपसर्ग

उपसर्ग	अर्थ	उदाहरण
अ	नहीं, अभाव	अज्ञान, अधर्म, अयोग्य, अनीति, अचल
अनु	पीछे, समान	अनुकूल, अनुभव, अनुचर, अनुरूप
अधि	ऊपर, श्रेष्ठ	अधिनायक, अधिकार, अधिपति
अप	बुरा, हीन	अपमान, अपशब्द, अपयश, अपकीर्ति, अपकार
अव	बुरा, हीन	अवगुण, अवनति
अति	अधिक	अतिशय, अत्यधिक, अत्याचार, अत्युत्तम
आ	तक, लेकर, समेत	आजीवन, आकर्षण, आचरण, आजन्म, आमरण

उपसर्ग	अर्थ	उदाहरण
उत्	ऊपर, श्रेष्ठ	उत्थान, उत्कर्ष
दुर्	बुरा, कठिन	दुर्बल, दुर्गम, दुर्दशा
दुस्	कठिन	दुस्साहस, दुष्कर्म, दुश्चरित्र
नि	नीचे, निषेध	निकृष्ट, निषेध
निर्	बिना	निर्बल, निर्धन, निर्जीव, निर्दय, निर्दोष
निस्	रहित, नहीं	निस्सन्देह, निस्सन्तान, निष्पाप, निष्कलंक
प्र	आगे, अधिक	प्रबल, प्रगाढ़, प्रगति, प्रयत्न
प्रति	विरुद्ध	प्रतिकूल, प्रतिहिंसा
वि	विशेष, रहित	विशिष्ट, विशुद्ध, विदेश, वियोग
सु	अच्छा, सरल	सुपुत्र, सुकर्म, सुयश, सुगम
स्व	अपना, निजी	स्वतन्त्र, स्वदेश, स्वकर्म

2. हिन्दी के उपसर्ग

अ	अभाव, निषेध	अचल, अटल, अज्ञान
अन	अभाव, निषेध	अनबन, अनमोल, अनपढ़, अनजान
अध	अर्द्ध, आधा	अधकचरा, अधमरा, अधबीच, अधपका
उन्	एक कम	उन्नीस, उन्तीस, उन्तालीस
कु	बुरा	कुढंग, कुसंग, कुपात्र, कुख्यात
नि	निषेध, अभाव	निडर, निहत्था, निकम्मा
बिन	निषेध	बिनदेखा, बिनजाना, बिनब्याहा
भर	पूरा, ठीक	भरपूर, भरपेट, भरसक, भरमार
स, सु	उत्तम	सरस, सजग, सपूत, सुजान, सुडौल, सफल

3. उर्दू के उपसर्ग

खुश	खुश, अच्छा	खुशहाल, ख़ुशनसीब, ख़ुशक़िस्मत
हर	प्रत्येक	हरघड़ी, हरएक, हरवक्त, हरदम
कम	थोड़ा	कमज़ोर, कमसिन
बे	रहित, बिना	बेचैन, बेगुनाह, बेमिसाल
ला	रहित	लाचार, लापरवाह
ना	नहीं	नाराज़, नापसन्द, नाजायज़
बा	अनुसार	बाकायदा, बाइज़्ज़त
बद	बुरा	बदनाम, बदमाश, बदतमीज़
दर	में	दरअसल, दरहक़ीकत

4. उपसर्ग की तरह प्रयोग किए जाने वाले संस्कृत के अव्यय

अन्त:/अन्तर्	भीतर	अन्तर्यामी, अन्त:करण, अन्तर्रात्मा
अलम्	बहुत, काफ़ी	अलंकार
चिर	बहुत	चिरकाल, चिरायु, चिरस्थायी
पुन:	फ़िर	पुनर्निर्माण, पुनर्जन्म
सह	साथ	सहचर, सहकर्मी
पुरा	प्राचीन	पुरातत्त्व, पुराकाल, पुरातन

प्रत्यय

जो शब्दांश किसी शब्द के अन्त में जुड़कर उसके अर्थ में परिवर्तन ला देता है, प्रत्यय कहलाता है; जैसे—'पढ़' 'घूम' क्रिया की धातुएँ हैं। इनमें क्रमश: 'आई' और 'अक्कड़' प्रत्यय लगाने पर 'पढ़ाई' और 'घुमक्कड़' शब्द बनते संज्ञा शब्द हैं।

पढ़ + आई = पढ़ाई

घूम + अक्कड़ = घुमक्कड़

हिन्दी में तीन प्रकार के प्रत्यय प्रयोग किए जाते हैं—

1. संस्कृत के प्रत्यय,
2. हिन्दी के प्रत्यय
3. अरबी–फ़ारसी के प्रत्यय।

1. संस्कृत के प्रत्यय

प्रत्यय	प्रत्यय से बने शब्द	प्रत्यय	प्रत्यय से बने शब्द
अक	रक्षक, लेखक, पाठक, नायक।	इमा	लालिमा, महिमा, अरुणिमा, गरिमा।
अन	रहन, सहन, भोजन, पावन।	त्व	लघुत्व, गुरुत्व, बन्धुत्व, वीरत्व।
अना	रचना, सूचना, कामना, याचना।	य	पाठ्य, वन्द्य, खाद्य।
अनीय	वन्दनीय, पठनीय, निन्दनीय, कमनीय।	ईय	नगरीय, राष्ट्रीय, भारतीय, प्रान्तीय।
आ	कमला, विमला, बाला, इच्छा।	मय	शब्दमय, संगीतमय, ज्ञानमय, भक्तिम
आत्मक	रचनात्मक, भावनात्मक, सृजनात्मक।	मान	बुद्धिमान, शक्तिमान, श्रीमान, नीतिमा
इक	ऐच्छिक, दैविक, साप्ताहिक, धार्मिक।	मती	बुद्धिमती, श्रीमती।
इका	लेखिका, पाठिका, नायिका, शिक्षिका।	वान	धनवान, ज्ञानवान, रूपवान, गुणवान।
इत	लिखित, पठित, शिक्षित, विकसित।	वती	धनवती, ज्ञानवती, रूपवती, बलवती।

2. हिन्दी के प्रत्यय

प्रत्यय	प्रत्यय से बने शब्द	प्रत्यय	प्रत्यय से बने शब्द
आई	भलाई, लड़ाई, कमाई, पंडिताई।	आहट	घबराहट, अकुलाहट, सरसराहट, गरमाहट।
आन	ढलान, मिलान, उफ़ान, उड़ान।	ईला	गठीला, रसीला, नशीला, रंगीला।
आनी	नौकरानी, देवरानी, सेठानी, पंडितानी।	एरा	ठठेरा, लुटेरा, चचेरा, बसेरा।
इया	डाकिया, खटिया, गठिया, लठिया।	नी	शेरनी, भीलनी, नटनी।
ई	बराती, भलाई, तेली, बोली।	पन	अपनापन, भोलापन, बचपन, पागलपन।

3. अरबी-फ़ारसी के प्रत्यय

प्रत्यय	प्रत्यय से बने शब्द	प्रत्यय	प्रत्यय से बने शब्द
कार	गीतकार, संगीतकार, पेशकार, जानकार।	दार	मालदार, फलदार, देनदार, दुकानदार।
खाना	दवाखाना, डाकखाना, तहखाना।	बन्द	मोहरबन्द, हथियारबन्द, सीलबन्द
दान	चायदान, कलमदान, फूलदान, पानदान।	वान	गाड़ीवान, पहलवान।
दानी	मच्छरदानी, चायदानी।	वार	इतवार, घंटेवार, नम्बरवार, बन्दनवार।

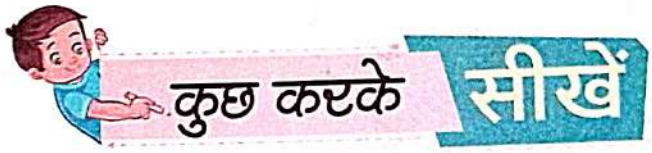

1. दिए गए उत्तरों में से सही विकल्प पर सही (✓) का चिह्न लगाइए—

(क) शब्द के पहले लगने वाले शब्दांश क्या कहलाते हैं?

(i) प्रत्यय ☐ (ii) मूल शब्द ☐ (iii) उपसर्ग ☐ (iv) परिवर्तन ☐

(ख) 'बदनसीब' शब्द में प्रयुक्त उपसर्ग है—

(i) बाद ☐ (ii) बार ☐ (iii) बदन ☐ (iv) बद ☐

(ग) शब्द के अन्त में लगने वाले शब्दांश क्या कहलाते हैं?

(i) उपसर्ग ☐ (ii) मूल शब्द ☐ (iii) प्रत्यय ☐ (iv) समास ☐

(घ) 'गुणवान' शब्द में प्रयुक्त प्रत्यय है—

(i) इन ☐ (ii) ईन ☐ (iii) वान ☐ (iv) आन ☐

2. निम्नलिखित शब्दों में उपयुक्त उपसर्ग जोड़कर दो-दो नए शब्द बनाइए—

गुण	.....	.....	देश	.....	.....
बल	.....	.....	जन्म	.....	.....
योग	.....	.....	मान	.....	.....
पेट	.....	.....	पसन्द	.....	.....
स्थायी	.....	.....	मोल	.....	.....

3. निम्नलिखित प्रत्ययों का प्रयोग करके दो-दो शब्द बनाइए—

अन	....	आनी	....
अनीय	....	ई	....
इक	....	नी	....
आ	....	ईय	....

4. निम्नलिखित शब्दों में उपयुक्त प्रत्यय जोड़कर नए शब्द बनाइए—

बरात	....	डाक	....
गुरु	....	बुद्धि	....
धन	....	धर्म	....
तेल	....	चौड़ा	....

5. निम्नलिखित शब्दों में से मूल शब्द, प्रत्यय तथा उपसर्ग अलग-अलग कीजिए—

	उपसर्ग	मूल शब्द	प्रत्यय
दुस्साहसी	.....	.....	.....
निडरता	.....	.....	.....
सफलता	.....	.....	.....
अधार्मिक	.....	.....	.....
स्वकर्मी	.....	.....	.....

6. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए—

(क) उपसर्ग किसे कहते हैं?

(ख) प्रत्यय से क्या तात्पर्य है? ये कितने प्रकार के होते हैं?

(ग) उपसर्ग और प्रत्यय में क्या अन्तर है? ये शब्दों में क्या परिवर्तन लाते हैं?

रचनात्मक गतिविधियाँ

1. कुछ उपसर्गों को मूल शब्द के पहले लगाने से बने शब्द आपस में विलोम शब्द बन जाते हैं।

जैसे — कु + पुत्र = कुपुत्र अन् + आदर = अनादर

कुछ शब्दों की सूची बनाइए। उनमें उपसर्ग का प्रयोग करके उनके विलोम शब्द बनाइए।

2. 'इत' प्रत्यय जोड़कर नए शब्द बनाइए—

चिन्ता	सम्मानआनन्द	उत्साह	अपमान	व्यवस्था	पीड़ा	हर्ष	खण्ड	फल
चिन्तित	.....	.....	.....	.....	.....	.....	.....	.....
.....	.....	.....	.....	.....	.....	.....	.....	.....

14

समास
Compound

'समास' का अर्थ होता है—'संक्षेप' या 'संयोग' अर्थात् दो या दो से अधिक शब्दों का मेल। जब दो या दो से अधिक शब्द मिलकर एक सार्थक शब्द बनाते हैं तो इस प्रक्रिया को समास कहते हैं। उदाहरणार्थ—

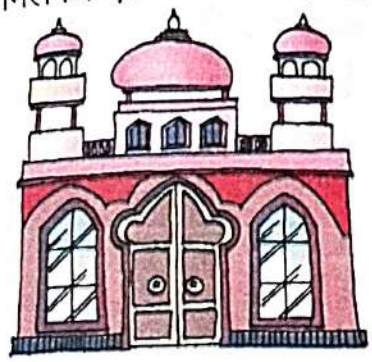

राजा का महल = राजमहल

भाई और बहन = भाई-बहन

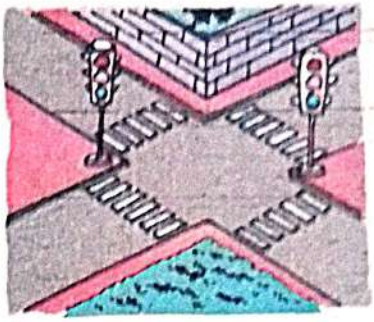

चार राहों का समूह = चौराहा

उपर्युक्त उदाहरणों में 'राजमहल', 'भाई-बहन' और 'चौराहा' समास के उदाहरण हैं। दो या दो से अधिक शब्दों के मेल से जो पद बनता है, उसे 'सामासिक शब्द' या 'समस्त पद' कहते हैं। सामासिक पद में सदैव दो शब्द होते हैं—पहले शब्द को 'पूर्वपद' और दूसरे शब्द को 'उत्तरपद' कहते हैं;

जैसे—'राजा का महल' में 'राजा' पूर्वपद है और 'महल' उत्तरपद।

समास-विग्रह—समस्त पदों को तोड़ने अर्थात् अलग-अलग करने को समास-विग्रह कहा जाता है; जैसे—'गंगाजल' समस्त पद का समास-विग्रह हुआ—गंगा का जल।

समास के भेद

समास के कुल छः भेद हैं—1. अव्ययीभाव समास, 2. तत्पुरुष समास, 3. कर्मधारय समास, 4. द्विगु समास, 5. द्वन्द्व समास तथा 6. बहुव्रीहि समास।

1. अव्ययीभाव समास

जिस समास का प्रथम पद (पूर्वपद) प्रधान तथा अव्यय हो, उसे अव्ययीभाव समास कहते हैं; जैसे—

समस्त पद	विग्रह	
यथाशक्ति	शक्ति के अनुसार	('यथा'—अव्यय)
प्रतिवर्ष	हर वर्ष	('प्रति'—अव्यय)
निडर	बिना डर के	('नि' — अव्यय)
भरपेट	पेट भरकर	('भर'—अव्यय)
बेखटके	बिना खटके के	('बे'—अव्यय)
निस्सन्देह	बिना सन्देह के	('निः'—अव्यय)

अव्ययीभाव समास में इस प्रकार के उदाहरण भी आते हैं—

रातोंरात	रात ही रात में
गली-गली	प्रत्येक गली
साफ़-साफ़	बिल्कुल साफ़

2. तत्पुरुष समास

जिस समास में उत्तरपद प्रधान हो तथा समास करने पर दोनों शब्दों के बीच कर्ता और सम्बोधन कारक विभक्तियों को छोड़कर शेष कारकों की विभक्तियों का लोप हो जाता है, उसे तत्पुरुष समास कहते हैं; जैसे—

'बैलगाड़ी' और 'विद्यालय' ये दोनों समस्त पद हैं। क्रमशः इनके विग्रह हैं—बैल की गाड़ी और विद्या के आलय। कारकों के नाम के आधार पर तत्पुरुष समास के छः भेद होते हैं—

1.	कर्म तत्पुरुष	स्वर्गवास	स्वर्ग को वास
		शरणागत	शरण को आया हुआ
2.	करण तत्पुरुष	मुँहमाँगा	मुँह से माँगा हुआ
		तुलसीकृत	तुलसी के द्वारा किया हु
3.	सम्प्रदान तत्पुरुष	शयनकक्ष	सोने के लिए कक्ष
		देशभक्ति	देश के लिए भक्ति
4.	अपादान तत्पुरुष	जन्मान्ध	जन्म से अन्धा
		देश-निकाला	देश से निकाला
5.	सम्बन्ध तत्पुरुष	गंगाजल	गंगा का जल
		पवन-पुत्र	पवन का पुत्र
6.	अधिकरण तत्पुरुष	आनन्द-मग्न	आनन्द में मग्न
		गृह-प्रवेश	गृह में प्रवेश

3. कर्मधारय समास

जिस समास में उत्तरपद प्रधान हो और पूर्वपद तथा उत्तरपद में विशेषण-विशेष्य, उपमान-उपमेय का सम्बन्ध उसे कर्मधारय समास कहते हैं। जैसे—चन्द्रमुख = चन्द्रमा जैसा मुख।

विशेषण-विशेष्य—
- नीलकमल = नीला कमल
- पीताम्बर = पीला वस्त्र

उपमान-उपमेय—
- चन्द्रमुख = चन्द्रमा जैसा मुख
- कमलनयन = कमल के जैसे नयन

4. द्विगु समास

जिस समास में पूर्वपद संख्यावाचक विशेषण हो और पूरा पद समूह का बोध कराए, उसे द्विगु समास कहते जैसे—

- चौराहा = चार राहों (रास्तों) का समाहार
- तिरंगा = तीन रंगों का समाहार
- शताब्दी = शत् (सौ) अब्दों (वर्षों) का समूह

5. द्वन्द्व समास

जिस समास में दोनों पद प्रधान हों तथा समास करने पर उनके बीच 'और' शब्द का लोप हो जाता है, उसे द्वन्द्व समास कहते हैं; जैसे—

राधा-कृष्ण = राधा और कृष्ण
सुख-दु:ख = सुख और दु:ख

6. बहुब्रीहि समास

जिस समास में दोनों में से कोई भी पद प्रधान न हो, अपितु कोई तीसरा पद प्रधान हो, उसे बहुब्रीहि समास कहते हैं; जैसे—

नीलकण्ठ = नीला है कण्ठ जिसका अर्थात् भगवान शिव
लम्बोदर = लम्बे उदर वाला अर्थात् श्रीगणेश

कर्मधारय और बहुब्रीहि समास में अन्तर

कर्मधारय में समस्त पद का एक पद दूसरे का विशेषण होता है। इसमें समस्त पद का अर्थ प्रधान होता है; जैसे—महावीर = महान् वीर।

इसके विपरीत बहुब्रीहि समास के दोनों पदों में विशेषण-विशेष्य का सम्बन्ध नहीं होता, अपितु वह समस्त पद ही किसी अन्य संज्ञादि का विशेषण होता है। इसके साथ ही इसमें समस्त पद का अर्थ गौण होता है और कोई भिन्नार्थ प्रधान होता है; जैसे—महावीर = महान् वीर है जो अर्थात् हनुमान।

विशेष—इन दोनों समासों में किसी समस्त पद के समास-विग्रह के अनुसार ही उसके समास के नाम का निर्धारण होता है—

पीताम्बर = पीले वस्त्र वाला अर्थात् श्रीकृष्ण *(बहुब्रीहि)*
पीताम्बर = पीला वस्त्र *(कर्मधारय)*

1. दिए गए सामासिक पदों के सही विग्रह पर सही (✓) का चिह्न लगाइए—

(क) युद्धभूमि =	(i) युद्ध में भूमि	(ii) युद्ध की भूमि	(iii) युद्ध के लिए भूमि
(ख) गली-गली =	(i) गली और गली	(ii) प्रत्येक गली	(iii) दो गलियाँ
(ग) जीवनसाथी =	(i) जीवन का साथी	(ii) जीवन में साथी	(iii) जीवन के लिए साथी
(घ) नर-रत्न =	(i) नर और रत्न	(ii) नर का रत्न	(iii) नररूपी रत्न
(ङ) कमलनयन =	(i) कमल के नयन वाला	(ii) कमल और नयन	(iii) कमल से नयन वाला

2. निम्नलिखित कथनों के सामने उपयुक्त समास का नाम लिखिए—

(क) जिस समास में दोनों ही पद प्रधान हों। .....
(ख) जिस समास में उत्तरपद प्रधान हो। .....
(ग) जहाँ कोई पद प्रधान न हो, अपितु कोई तीसरा पद प्रधान हो। .....

(घ) जहाँ पूर्वपद संख्यावाची विशेषण हो और पूरा पद समूह का बोध कराए। .....

(ङ) जहाँ दोनों पदों में विशेषण-विशेष्य या उपमेय-उपमान का सम्बन्ध हो। .....

(च) जहाँ पहला पद प्रधान हो और वह अव्यय हो। .....

3. उपयुक्त शब्द द्वारा रिक्त स्थान भरिए—

(क) शब्दों के ..... रूप समास कहलाते हैं।

(ख) समास का अर्थ है ..... ।

(ग) समास रचना में दो पद होते हैं—पूर्वपद और ..... ।

(घ) शब्दों के संक्षिप्त रूप ..... कहलाते हैं।

(ङ) जिस समास में पहला पद संख्यावाची विशेषण हो, वह ..... समास कहलाता है।

4. निम्नलिखित शब्द-समूहों के लिए समस्त पद लिखकर समास का नाम भी लिखिए—

(क) पेट भरकर ....

(ख) कबीर द्वारा रचित ....

(ग) भवानी और शंकर ....

(घ) महान् है आत्मा जिनकी ....

(ङ) गुण से युक्त ....

(च) माता का भक्त ....

5. निम्नलिखित बहुब्रीहि समास के समस्त पदों को विग्रह के द्वारा कर्मधारय समास में परिवर्तित कीजिए—

(क) नीलकण्ठ .....

(ख) पीताम्बर .....

(ग) नरसिंह .....

(घ) दशमुख .....

(ङ) धर्मात्मा .....

6. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए—

(क) समास किसे कहते हैं?

(ख) समास के कितने भेद होते हैं? प्रत्येक के दो-दो उदाहरण भी लिखिए।

(ग) कर्मधारय और बहुब्रीहि समास में क्या अन्तर है? उदाहरण के द्वारा स्पष्ट कीजिए।

रचनात्मक गतिविधियाँ

निम्नलिखित में जो उत्तर सही हैं, उनके सामने सही (✓) का चिह्न लगाइए—

(क) रंग-बिरंगे —	तत्पुरुष समास	अव्ययीभाव समास	द्वन्द्व समास
(ख) यमुना तट —	द्वन्द्व समास	तत्पुरुष समास	कर्मधारय समास
(ग) महाकवि —	कर्मधारय समास	बहुब्रीहि समास	अव्ययीभाव समास
(घ) सज्जन —	तत्पुरुष समास	कर्मधारय समास	बहुब्रीहि समास

15

सन्धि
Joining

ध्वनियों के पास-पास आ जाने से उनके मिलने पर जो परिवर्तन या विकार होता है, उसे सन्धि कहते हैं। इस प्रकार, सन्धि के अन्तर्गत दो शब्दों के मेल से नए शब्द की रचना होती है। उदाहरणार्थ—

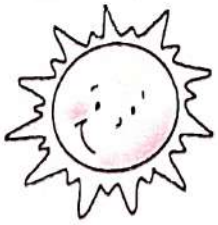

सूर्य + उदय = सूर्योदय

सन्धि युक्त शब्दों को अलग-अलग करने की प्रक्रिया 'सन्धि-विच्छेद' कहलाती है।

सन्धि के भेद

सन्धि के तीन भेद होते हैं—(1) स्वर सन्धि, (2) व्यंजन सन्धि, (3) विसर्ग सन्धि।

(1) स्वर सन्धि

दो स्वरों के मिलने से जो परिवर्तन या विकार होता है, उसे स्वर सन्धि कहते हैं। स्वर सन्धि के मुख्यत: पाँच प्रकार होते हैं—

(i) दीर्घ सन्धि—जब ह्रस्व या दीर्घ स्वर अ, इ, उ के आगे वही ह्रस्व या दीर्घ स्वर आ जाए तो दोनों के स्थान पर दीर्घ स्वर हो जाता है; जैसे—

(क)	भाव + अर्थ	भावार्थ	(अ + अ = आ)
	धर्म + आत्मा	धर्मात्मा	(अ + आ = आ)
	परीक्षा + अर्थी	परीक्षार्थी	(आ + अ = आ)
	विद्या + आलय	विद्यालय	(आ + आ = आ)
(ख)	कवि + इन्द्र	कवीन्द्र	(इ + इ = ई)
	कपि + ईश	कपीश	(इ + ई = ई)
	शची + इन्द्र	शचीन्द्र	(ई + इ = ई)
	रजनी + ईश	रजनीश	(ई + ई = ई)
(ग)	भानु + उदय	भानूदय	(उ + उ = ऊ)
	लघु + ऊर्मि	लघूर्मि	(उ + ऊ = ऊ)

	वधू + उत्सव	वधूत्सव	(ऊ + उ = ऊ)
	भू + ऊर्ध्व	भूर्ध्व	(ऊ + ऊ = ऊ)

(ii) गुण सन्धि—जब 'अ' या 'आ' के आगे 'इ' या 'ई' आए तो दोनों के स्थान पर 'ए'; 'उ' या 'ऊ' आए तो दोनों के स्थान पर 'ओ'; 'ऋ' आए तो दोनों के स्थान पर 'अर्' हो जाता है; जैसे—

(क)	धर्म + इन्द्र	धर्मेन्द्र	(अ + इ = ए)
	यथा + इष्ट	यथेष्ट	(आ + इ = ए)
	परम + ईश्वर	परमेश्वर	(अ + ई = ए)
	रमा + ईश	रमेश	(आ + ई = ए)
(ख)	वसन्त + उत्सव	वसन्तोत्सव	(अ + उ = ओ)
	नव + ऊढ़ा	नवोढ़ा	(अ + ऊ = ओ)
	महा + उत्सव	महोत्सव	(आ + उ = ओ)
	दिवा + ऊष्मा	दिवोष्मा	(आ + ऊ = ओ)
(ग)	सप्त + ऋषि	सप्तर्षि	(अ + ऋ = अर्)
	महा + ऋषि	महर्षि	(आ + ऋ = अर्)

(iii) वृद्धि सन्धि—यदि 'अ' या 'आ' के आगे 'ए' या 'ऐ' आए तो दोनों को मिलाकर 'ऐ' हो जाता है और 'ओ' या 'औ' आए तो दोनों को मिलाकर 'औ' हो जाता है; जैसे—

(क)	एक + एक	एकैक	(अ + ए = ऐ)
	परम + ऐश्वर्य	परमैश्वर्य	(अ + ऐ = ऐ)
	सदा + एव	सदैव	(आ + ए = ऐ)
	माता + ऐश्वर्य	मातैश्वर्य	(आ + ऐ = ऐ)
(ख)	वन + ओषधि	वनौषधि	(अ + ओ = औ)
	महा + औदार्य	महौदार्य	(आ + औ = औ)

(iv) यण् सन्धि—जब ह्रस्व या दीर्घ इ, उ या ऋ के आगे कोई असमान स्वर आए तो 'इ', 'ई' का 'य्'; 'उ' का 'व्' और 'ऋ' का 'र्' हो जाता है; जैसे—

(क)	यदि + अपि	यद्यपि	(इ + अ = य)
	उपरि + उक्त	उपर्युक्त	(इ + उ = यु)
	प्रति + एक	प्रत्येक	(इ + ए = ये)
(ख)	अनु + अय	अन्वय	(उ + अ = व)
	अनु + इत	अन्वित	(उ + इ = वि)

अनु	+ एषण	अन्वेषण	(उ + ए = वे)
मातृ	+ आनन्द	मात्रानन्द	(ऋ + आ = र)

(v) अयादि सन्धि—यदि ए, ऐ, ओ, औ के आगे कोई असमान स्वर आए तो इनके स्थान पर क्रमश: अय्, आय्, अव् तथा आव् हो जाता है; जैसे—

ने	+ अन	नयन	(ए + अ = अय्)
गै	+ अन	गायन	(ऐ + अ = आय्)
पो	+ इत्र	पवित्र	(ओ + इ = अव्)
नौ	+ इक	नाविक	(औ + इ = आव्)

(2) व्यंजन सन्धि

किसी व्यंजन का अन्य व्यंजन या स्वर से मेल होने पर जो परिवर्तन होता है, उसे व्यंजन सन्धि कहते हैं; जैसे—सत् + जन = सज्जन। यहाँ 'त्' (व्यंजन) का 'ज' (व्यंजन) से मेल होने पर 'ज्ज' हो गया है।

व्यंजन सन्धि के कुछ उदाहरण—

षट्	+ आनन	= षडानन	जगत्	+ नाथ	= जगन्नाथ
जगत्	+ ईश	= जगदीश	सत्	+ मार्ग	= सन्मार्ग
उत्	+ चारण	= उच्चारण	उत्	+ लास	= उल्लास
सम्	+ कल्प	= संकल्प	सम्	+ सार	= संसार
परि	+ सद्	= परिषद्	सु	+ समा	= सुषमा

(3) विसर्ग सन्धि

स्वर या व्यंजन के साथ विसर्ग (:) के संयोग से विसर्ग में जो परिवर्तन होता है, उसे विसर्ग सन्धि कहते हैं; जैसे—दु: + जन = दुर्जन [विसर्ग (:) का 'ज' (व्यंजन) से मेल]

विसर्ग सन्धि के कुछ उदाहरण—

नि:	+ बल	= निर्बल	दु:	+ उपयोग	= दुरुपयोग
नि:	+ चल	= निश्चल	नि:	+ सन्देह	= निस्सन्देह
दु:	+ कर्म	= दुष्कर्म	नि:	+ रोग	= नीरोग
दु:	+ साहस	= दुस्साहस	तप:	+ भूमि	= तपोभूमि

1. दिए गए उत्तरों में से सही विकल्प पर सही (✓) का चिह्न लगाइए—

(क) दो वर्णों के मेल को क्या कहते हैं?

(i) समास (ii) पद (iii) सन्धि

(ख) 'राज + इन्द्र' से बना शब्द कौन-सा है?

(i) राजिन्द्र (ii) राजेन्द्र (iii) रजिन्द्र

(ग) 'महेश्वर' में कौन-सी सन्धि है?

(i) दीर्घ सन्धि (ii) गुण सन्धि (iii) व्यंजन सन्धि

2. निम्नलिखित शब्दों में सन्धि कीजिए। सन्धि का नाम भी लिखिए—

				सन्धि	सन्धि का नाम
(क)	रेखा	+	अंकित	.....	.....
(ख)	महा	+	इन्द्र	.....	.....
(ग)	सदा	+	एव	.....	.....
(घ)	भौ	+	उक	.....	.....
(ङ)	पितृ	+	आज्ञा	.....	.....

3. सन्धि-विच्छेद कीजिए और सन्धि का नाम भी लिखिए—

	शब्द	सन्धि-विच्छेद	सन्धि का नाम
(क)	परमानन्द	.....	.....
(ख)	सूक्ति	.....	.....
(ग)	इत्यादि	.....	.....

4. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए—

(क) सन्धि किसे कहते हैं? इसके भेद स्पष्ट कीजिए।

(ख) स्वर सन्धि क्या है? यह कितने प्रकार की होती है?

(ग) विसर्ग सन्धि का नियम सोदाहरण लिखिए।

रचनात्मक गतिविधियाँ

- कुछ शब्दों में 'आलय', 'ऋषि', 'इन्द्र', 'उदय' आदि शब्दों के जुड़ने से नए शब्द बनते हैं; जैसे—विद्यालय, महर्षि, सूर्योदय। ऐसे दस शब्दों को अपनी पाठ्य-पुस्तक से छाँटकर लिखिए। देखिए कि वे सन्धि के उदाहरण हैं या समास।

..... सूर्यास्त ....

....

....

16

वर्तनी
Spelling

व्याकरण के नियमानुसार लिपि के चिह्नों को क्रम से लिखना वर्तनी कहलाता है।

शब्दों की वर्तनी सम्बन्धी अशुद्धियाँ और उनके शुद्ध रूप

1. स्वर सम्बन्धी अशुद्धियाँ–

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
आधीन	अधीन	परिक्षा	परीक्षा	अत्याधिक	अत्यधिक	क्योंकी	क्योंकि
कृती	कृति	अतिथी	अतिथि	सप्ताहिक	साप्ताहिक	इतिहासिक	ऐतिहासिक

2. अनुस्वार-अनुनासिक/विसर्ग सम्बन्धी अशुद्धियाँ–

बांस	बाँस	अँकुर	अंकुर	कुंआ	कुआँ	प्रात	प्रातः
मां	माँ	अंगूठी	अँगूठी	माँस	मांस	निसन्देह	निःसन्देह

3. व्यंजन सम्बन्धी अशुद्धियाँ–

मेंढ़क	मेंढक	परीच्छा	परीक्षा	गाडी	गाड़ी	चिन्ह	चिह्न/चिह्न
परणाम	प्रणाम	जमुना	यमुना	रितु	ऋतु	प्राकृति	प्रकृति

4. कुछ अन्य अशुद्धियाँ–

श्रृंखला	शृंखला	शमशान	श्मशान	सन्यासी	संन्यासी	ग्रहस्थ	गृहस्थ
प्रदशनी	प्रदर्शनी	कवियित्री	कवयित्री	श्राप	शाप	अनुग्रहीत	अनुगृहीत

कुछ करके सीखें

1. शुद्ध वर्तनी वाले शब्द पर सही (✓) का चिह्न लगाइए—

(क) (i) कवित्री (ii) कवियित्री (iii) कवयीत्रि (iv) कवयित्री

(ख) (i) शृंगार (ii) श्रिंगार (iii) श्रृंगार (iv) श्रंगार

(ग) (i) आर्शिवाद (ii) आर्शीवाद (iii) आशीरवाद (iv) आशीर्वाद

2. निम्नलिखित शब्दों को शुद्ध कीजिए—

(क) चिन्ह ..... (ख) बारात ..... (ग) परिक्षा .....

(घ) रितु ..... (ङ) कुंआ ..... (च) आधीन .....

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए—

(क) वर्तनी किसे कहते हैं?

(ख) वर्तनी सम्बन्धी अशुद्धियों के कोई दो प्रमुख कारण बताइए।

वाक्य-विचार
Syntax

वर्ण भाषा की सबसे छोटी इकाई होती है। वर्णों के मेल से शब्द बनते हैं। शब्द पदों का रूप लेकर वाक्य बनाते हैं। शब्द भाषा की अर्थवान स्वतन्त्र इकाई है और जब ये वाक्य में प्रयुक्त होते हैं तब पद का रूप ले लेते हैं। सार्थक शब्दों को व्यवस्थित क्रम से लिखने पर ही अर्थपूर्ण वाक्य बनते हैं। इसे पदक्रम कहा जाता है।

वाक्य-रचना में निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना अपेक्षित है—

1. पहले कर्ता, फिर क्रिया आती है; जैसे—सीता (कर्ता) जाती है (क्रिया)।
   यदि वाक्य में कर्म हो तो वह कर्ता और क्रिया के बीच में आता है; जैसे—सुधा ने पत्र लिखा।
2. क्रियाविशेषण प्राय: सम्बन्धित क्रिया से पहले आते हैं; जैसे—• मनोज आज आएगा। • वह कम बोलता है।
3. सम्बन्धवाचक पद विशेषण से पहले आते हैं; जैसे—मेरा छोटा भाई पाँचवीं कक्षा में पढ़ता है।
4. सम्बोधन और विस्मयादिबोधक पद प्राय: वाक्य के आरम्भ में आते हैं; जैसे—
   - विशाल! तुमसे यह उम्मीद न थी।
   - अहा! कैसा सुन्दर दृश्य है।

वाक्य के अंग

प्रत्येक वाक्य के दो अंग होते हैं—1. उद्देश्य तथा 2. विधेय।

वाक्य में जिसके विषय में कुछ कहा जाए, उसे उद्देश्य कहते हैं।

उद्देश्य के विषय में जो कुछ कहा जाए, उसे विधेय कहते हैं।

पढ़िए और समझिए—

1. हमारे दोस्तों ने गोवा में समुद्र-तट पर बहुत-से लोगों को टहलते हुए देखा।
2. मानसी की बहन मन लगाकर अपना काम कर रही है।

पहले वाक्य में 'दोस्तों ने' उद्देश्य है और 'हमारे' उसका विस्तार है। 'बहुत-से लोगों को टहलते हुए देखा' विधेय है और 'गोवा के समुद्र-तट पर' उसका विस्तार है।

दूसरे वाक्य में 'बहन' उद्देश्य है और 'मानसी की' उसका विस्तार है। 'अपना काम कर रही है' विधेय है और 'मन लगाकर' उसका विस्तार है।

वाक्य के भेद

वाक्य के भेद दो आधार पर किए जाते हैं—1. रचना और 2. अर्थ।

(**नोट**—*कक्षा के स्तर के अनुरूप यहाँ हमने केवल रचना के आधार पर वाक्य के भेद दर्शाए हैं।*)

रचना के आधार पर वाक्य के भेद

रचना के आधार पर वाक्य के निम्नलिखित तीन भेद होते हैं—

1. साधारण वाक्य—जिस वाक्य में केवल एक उद्देश्य (कर्ता) और एक क्रिया हो, उसे साधारण वाक्य कहते हैं; जैसे—(क) सोहन गेंद से खेलता है। (ख) शिवानी गीत गाती है।

उपर्युक्त वाक्यों में एक कर्ता और उसकी एक ही क्रिया है। ऐसे वाक्य साधारण वाक्य कहलाते हैं।

2. संयुक्त वाक्य—जब दो या दो से अधिक साधारण वाक्य समुच्चयबोधक (पर, किन्तु, और, या आदि) से जुड़ जाते हैं तो वे संयुक्त वाक्य कहलाते हैं; जैसे—

(क) वर्षा हो रही थी इसलिए हम समय पर स्कूल नहीं पहुँच सके।

(ख) उसने तुम्हारी बहुत प्रतीक्षा की परन्तु तुम नहीं आए।

इन वाक्यों में दो स्वतन्त्र उपवाक्य क्रमशः 'इसलिए', 'परन्तु' समुच्चयबोधक शब्दों से जुड़े हुए हैं। संयुक्त वाक्य में दोनों ही वाक्यों की प्रधानता होती है।

3. मिश्रित वाक्य—जब किसी विषय पर पूर्ण विचार प्रकट करने के लिए कई साधारण वाक्यों को मिलाकर एक वाक्य की रचना की जाए, तब ऐसे रचित वाक्य को मिश्रित वाक्य कहते हैं। इन वाक्यों में एक मुख्य उपवाक्य और एक अथवा अधिक आश्रित उपवाक्य होते हैं, जो समुच्चयबोधक से जुड़े होते हैं; जैसे—

(क) मैं विश्वास के साथ कह सकता हूँ कि मेरा उत्तर सही है।

(ख) विशाल ने बताया कि आज उसे बुखार था इसलिए स्कूल नहीं गया।

यहाँ पहले वाक्य में 'मैं विश्वास के साथ कह सकता हूँ' मुख्य उपवाक्य है और 'कि मेरा उत्तर सही है' आश्रित उपवाक्य है। इसी प्रकार, 'विशाल ने बताया' मुख्य उपवाक्य है जबकि 'कि आज उसे बुखार था' और 'इसलिए स्कूल नहीं गया' आश्रित उपवाक्य हैं।

1. दिए गए उत्तरों में से सही विकल्प पर सही (✓) का चिह्न लगाइए—

(क) जिन वाक्यों में केवल एक क्रियापद होता है, वे क्या कहलाते हैं ?

(i) संयुक्त वाक्य ◯ (ii) मिश्रित वाक्य ◯

(iii) सरल वाक्य ◯ (iv) विधेय वाक्य ◯

(ख) 'मज़दूर काम खत्म करके घर चले गए।' वाक्य में विधेय है—

(i) मज़दूर ◯ (ii) चले गए ◯

(iii) काम खत्म करके घर चले गए ◯ (iv) काम खत्म करके ◯

2. निम्नलिखित वाक्यों में उद्देश्य और विधेय अलग-अलग करके लिखिए—

(क) शीला के भाई ने चाय गिरा दी है। .....

(ख) विकास के पिताजी एक दफ़्तर में अफ़सर हैं। .....

(ग) मेरी छोटी बहन बहुत कम बोलती है। .....

(घ) कुछ रंग-बिरंगी तितलियाँ फूलों पर मँडरा रही हैं। .....

(ङ) मैं अब अपने घर जाना चाहता हूँ। .....

3. रचना के आधार पर वाक्य-भेद लिखिए—

(क) इतना समय हो गया है, पर सुधा अभी तक नहीं आई। .....

(ख) आसमान में बहुत-से पक्षी उड़ रहे हैं। .....

(ग) हम कल स्कूल नहीं जा सके क्योंकि कल भारी वर्षा हुई थी। .....

(घ) ताजमहल संसार की सबसे सुन्दर इमारत है। .....

4. निर्देश के अनुसार वाक्य-परिवर्तन कीजिए—

(क) मेरे पेट में दर्द है और मैं स्कूल नहीं जा सकता। *(सरल*

पेट में दर्द होने के कारण मैं स्कूल नहीं जा सकता।

(ख) मैंने उसे बुलाकर सारी बात बताई। *(संयुक्त*

(ग) जल्दी जाने वाले लोगों से स्पष्टीकरण माँगा जाएगा। *(मिश्रित*

(घ) वह पहले आगरा जाएगा और फिर मुम्बई जाएगा। *(सरल*

5. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए—

(क) वाक्य से आप क्या समझते हैं? एक उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए।

(ख) वाक्य-रचना में किन बातों को ध्यान में रखना आवश्यक है?

(ग) उद्देश्य और विधेय को उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए।

(घ) साधारण और संयुक्त वाक्यों में क्या अन्तर है? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

(ङ) मिश्रित वाक्य क्या होते हैं?

रचनात्मक गतिविधियाँ

- नीचे दिए गए वाक्यों को पढ़िए—

(क) शुद्ध गाय का घी दो।

(ख) रोगी को काटकर फल दो।

(ग) हम आपसे कहे थे।

(घ) माली एक फूलों की माला लाया है।

(ङ) आइए, भोजन खाइए।

बोल-चाल में प्राय: इस प्रकार के अशुद्ध वाक्यों का प्रयोग किया जाता है। इनकी त्रुटियाँ खोजकर इन्हें शुद्ध करके लि

18

विराम-चिह्न
Punctuation Marks

विराम का अर्थ—रुकना, विश्राम करना तथा ठहरना होता है। भाषा को बोलते या लिखते समय, भावों के अनुसार विराम लेने या अपनी बात पर बल देने के लिए विशेष चिह्न निश्चित किए गए हैं। ये चिह्न ही विराम-चिह्न कहलाते हैं।

विराम का प्रयोग न किया जाए तो भाव समझने में कठिनाई आती है। साथ ही विराम-चिह्न का प्रयोग व्यवस्थित रूप से न करने पर वाक्य के भाव में अन्तर आ जाता है। कभी-कभी तो अर्थ का अनर्थ हो जाता है; जैसे—

(क) रोको मत, जाने दो। (ख) रोको, मत जाने दो।

उपर्युक्त दोनों वाक्यों की भाषा में किंचित् भी अन्तर नहीं है, लेकिन वाक्य (ख) में अल्पविराम-चिह्न का प्रयोग 'रोको' के बाद लगा देने से अर्थ बिल्कुल विपरीत हो गया है। इस प्रकार, विराम-चिह्नों का प्रयोग भावों को आत्मसात् करने में सहायक होता है।

आइए, कुछ प्रमुख विराम-चिह्नों और उनके प्रयोग के विषय में जानिए—

1. पूर्ण विराम (।)

विस्मयादिबोधक तथा प्रश्नवाचक वाक्यों के अतिरिक्त अन्य सभी वाक्यों के अन्त में 'पूर्ण विराम' का प्रयोग किया जाता है। यह सामान्य कथन की पूर्णता का बोध कराता है; जैसे—

हम अपने देश की गरिमा और संस्कृति का पूरा ध्यान रखते हैं।

2. अल्पविराम (,)

वाक्य के बीच में जहाँ थोड़ा रुकना आवश्यक हो, वहाँ अल्पविराम का प्रयोग किया जाता है; जैसे—

यह सुन्दर इमारत, जो तुम देख रहे हो, ऐतिहासिक ताजमहल है।

3. अर्धविराम (;)

जब दो वाक्यों के बीच में अल्पविराम लगाने से अर्थ में भ्रांति की सम्भावना हो, तब वहाँ अर्धविराम का प्रयोग किया जाता है; जैसे—वे नेताओं के भाषण सुनने में व्यस्त हैं; भला जल्दी कैसे आ सकते हैं।

4. प्रश्नसूचक चिह्न (?)

प्रश्नवाचक वाक्य के अन्त में 'प्रश्नसूचक चिह्न' का प्रयोग किया जाता है; जैसे—

तुम कल मेले में क्यों नहीं आए?

5. विस्मयसूचक चिह्न (!)

विभिन्न भावों—आश्चर्य, हर्ष, शोक आदि को प्रकट करने तथा सम्बोधन के लिए 'विस्मयसूचक चिह्न' का प्रयोग किया जाता है। जहाँ पुकारने का संकेत व्यक्त हो, वहाँ भी इस चिह्न का प्रयोग किया जाता है; जैसे—

- हाय! यह तोता तो मर गया।
- रिया! यहाँ आओ।

6. उद्धरण चिह्न (' .... '')

किसी वक्ता के कथन को यथावत् उद्धृत करने, शब्द और सूक्तियों पर बल देने के लिए इकहरे और दोहरे 'उद्ध चिह्नों' का प्रयोग किया जाता है; जैसे—जुगल बोला, ''आप दिल्ली मत जाओ।''

- ''तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूँगा।''

क्या तुमने 'श्रीरामचरितमानस' नामक ग्रन्थ पढ़ा है?

7. योजक चिह्न (-)

'योजक चिह्न' का प्रयोग दो शब्दों को जोड़ने (युग्म), शब्दों को दोहराने और तुलना करने के लिए किया जाता। जैसे—पाप-पुण्य, माता-पिता, धीरे-धीरे, एकलव्य-सा आदि।

8. निर्देशक चिह्न (—)

इसका प्रयोग कथन, उद्धरण अथवा व्याख्या के लिए किया जाता है; जैसे—

महात्माजी ने कहा—सत्य के मार्ग पर चलना चाहिए।

दुकानदार ने सूची पढ़ी—चीनी, चावल, आटा, दाल और साबुन।

9. विवरण चिह्न (:—)

किसी विषय अथवा बात को उदाहरण या विवरण द्वारा समझाने के लिए 'विवरण चिह्न' का प्रयोग किया जाता। जैसे— संज्ञा के तीन प्रमुख भेद होते हैं :—

(क) व्यक्तिवाचक, (ख) जातिवाचक और (ग) भाववाचक।

10. लाघव/संक्षेपसूचक चिह्न (०)

शब्दों का संक्षिप्त रूप लिखने के लिए लाघव चिह्न का प्रयोग किया जाता है; जैसे—कृ०प०उ० (कृपया पृ उलटिए)।

1. दिए गए उत्तरों में से सही विकल्प पर सही (✓) का चिह्न लगाइए—

(क) लेखन में रुकने का संकेत देने वाले लिखित चिह्न क्या कहलाते हैं?

(i) स्वर-व्यंजन (ii) उतार-चढ़ाव (iii) विराम-चिह्न (iv) अनुलोम-विलोम

(ख) द्वन्द्व समास वाले शब्दों और शब्द-युग्मों के बीच प्रयुक्त चिह्न है—

(i) विस्मयसूचक चिह्न (ii) अल्पविराम (iii) योजक चिह्न (iv) प्रश्नसूचक चिह्न

(ग) जिस वाक्य में प्रश्न पूछा जाता है उसके अन्त में कौन-सा चिह्न प्रयोग किया जाता है?

(i) अल्पविराम (ii) प्रश्नसूचक चिह्न (iii) योजक चिह्न (iv) संक्षेपसूचक चिह्न

(घ) शब्दों का संक्षिप्त रूप लिखते समय किस चिह्न का प्रयोग होता है?

(i) निर्देशक चिह्न (ii) संक्षेपसूचक चिह्न

(iii) विस्मयसूचक चिह्न (iv) अर्धविराम चिह्न

2. उचित शब्दों से रिक्त स्थान भरिए—

(क) जिन विराम-चिह्नों का प्रयोग किसी के द्वारा कहे गए कथन को ज्यों-का-त्यों उतारने के लिए होता है, उन्हें ..... चिह्न कहते हैं।

(ख) योजक चिह्न का प्रयोग युग्म अथवा ..... को दोहराने में किया जाता है।

(ग) (!) इस चिह्न को ..... कहते हैं।

(घ) जिस विराम-चिह्न का प्रयोग थोड़ा ठहरने के लिए किया जाता है, उसे ..... कहते हैं।

3. उचित स्थानों पर विराम-चिह्न लगाइए—

(क) साहब आप कैसे रामदीन ने आश्चर्य से पूछा तुम्हारे पास ही आया हूँ बिठाओगे नहीं मैंने कहा

(ख) अरे निक्की देखो वहाँ कौन है

(ग) सभी त्योहार होली दीवाली ईद क्रिसमस गुरुपर्व मिलजुलकर मनाइए

(घ) लकड़हारा बोला पेट की आग तो बुझानी है भाई क्या तुमने विक्रमादित्य का नाम नहीं सुना विक्रमादित्य ने पूछा लकड़हारा विक्रमादित्य को पहचान नहीं सका वह बोला सुना है वे हमारे राजा हैं वे बड़े दयालु हैं प्रतिदिन सवेरे गरीबों और भिखारियों को खाना और कपड़े बाँटते हैं

(ङ) क्या उसके पास घड़ी है

(च) उसके माता पिता भाई बहन दादा दादी और दोस्त सभी खुशी से नाच उठे

(छ) कपास से खादी बनती है खादी से वस्त्र बनते हैं

(ज) मैंने पूछा तुम पार्टी में क्यों नहीं आए

4. दिए गए विराम-चिह्नों का प्रयोग करते हुए वाक्य बनाइए—

(क) (?) प्रश्नसूचक चिह्न = ...

(ख) (,) अल्पविराम = ...

(ग) (!) विस्मयसूचक चिह्न = ...

(घ) (-) योजक चिह्न = ...

(ङ) (।) पूर्णविराम = ...

(च) (“.....”) उद्धरण चिह्न = ...

(छ) (—) निर्देशक चिह्न = ...

5. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए—

(क) विराम-चिह्न किसे कहते हैं? प्रमुख विराम-चिह्नों के नाम लिखिए।

(ख) अर्धविराम तथा अल्पविराम में क्या अन्तर है? उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए।

(ग) उद्धरण चिह्न किसे कहते हैं? यह कितने प्रकार का होता है? लिखिए।

(घ) योजक चिह्न तथा निर्देशक चिह्न में क्या अन्तर है? उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए।

19

शब्द-भण्डार
Glossary

1. पर्यायवाची शब्द

समान अर्थ वाले शब्द एक-दूसरे के पर्यायवाची कहलाते हैं। पर्यायवाची शब्दों के अर्थ समान तो होते हैं किन्तु स्थिति में एक शब्द के स्थान पर उसके प्रत्येक पर्यायवाची का प्रयोग नहीं किया जा सकता; जैसे—'जल' और 'पा एक-दूसरे के पर्यायवाची हैं किन्तु निम्नलिखित दो स्थितियों में इनका प्रयोग समान रूप में नहीं हो सकता—

1. सदैव शुद्ध जल का प्रयोग करें।
2. मैं गोमुख से गंगाजल लेकर आया।

पहले वाक्य में तो 'जल' के स्थान पर उसके पर्याय 'पानी' शब्द का प्रयोग किया जा सकता है; किन्तु दूसरे वाक्य गंगा के सन्दर्भ में 'जल' की जगह 'पानी' का प्रयोग हास्यास्पद होगा।

नीचे कुछ शब्द और उनके पर्याय दिए गए हैं। इन्हें पढ़िए, समझिए तथा याद कीजिए—

1. अग्नि — आग, ज्वाला, पावक, अनल।
2. असुर — राक्षस, निशाचर, दैत्य, दानव।
3. अन्धकार — तम, तिमिर, अँधेरा।
4. अतिथि — पाहुना, अभ्यागत, आगन्तुक, मेहम
5. आँख — नयन, चक्षु, दृग, लोचन।
6. आकाश — गगन, नभ, व्योम, अम्बर।
7. ईश्वर — भगवान, प्रभु, ईश, परमात्मा।
8. उपवन — बाग, बगीचा, वाटिका, उद्यान।
9. कमल — जलज, पंकज, सरोज, नीरज।
10. कपड़ा — वसन, वस्त्र, चीर, अम्बर।
11. किनारा — तट, पुलिन, कूल, कगार।
12. गृह — घर, सदन, भवन, आलय।
13. गज — हाथी, हस्ती, द्विप, मतंग।
14. चन्द्रमा — चाँद, मयंक, राकेश, रजनीश।
15. जल — पानी, नीर, वारि, सलिल।
16. जंगल — कानन, विपिन, वन, अरण्य।
17. तालाब — सर, सरोवर, ताल, तड़ाग।
18. दिन — वार, दिवा, वासर, दिवस।
19. ध्वजा — पताका, झण्डा, ध्वज, निशान।
20. पक्षी — पंछी, खग, विहग, विहंगम।
21. पुष्प — सुमन, प्रसून, कुसुम, फूल।
22. पवन — अनिल, मारुत, हवा, वात।
23. पर्वत — अचल, नग, भूधर, शैल।
24. पृथ्वी — धरा, वसुन्धरा, भू, भूमि।
25. बालक — बच्चा, लड़का, शिशु, शावक।
26. माता — माँ, जननी, अम्बा, धात्री।
27. मेघ — जलद, नीरद, वारिद, पयोधर।
28. मयूर — मोर, नीलकण्ठ, केकी, शिखी।
29. मनुष्य — मनुज, मानव, नर, इंसान।
30. राजा — नृप, नरेश, नृपति, भूप।
31. रात — रात्रि, रजनी, विभावरी, निशा।
32. वृक्ष — पादप, तरु, विटप, पेड़।
33. सागर — समुद्र, जलनिधि, वारिधि, रत्नाकर।
34. साँप — सर्प, भुजंग, नाग, व्याल।
35. सिंह — शेर, वनराज, मृगराज, मृगेन्द्र।
36. सूर्य — सूरज, दिनकर, दिवाकर, दिनेश।
37. हिरण — मृग, सारंग, कुरंग।
38. स्वर्ग — सुरलोक, नाक, द्युलोक, जन्नत।

2. विलोम शब्द

वे दो शब्द जो एक-दूसरे का विपरीत अर्थात् उलटा अर्थ देते हैं, विलोम शब्द कहलाते हैं। इन शब्दों क विपरीतार्थक अथवा विरुद्धार्थी शब्द भी कहा जाता है; जैसे—अमीर-गरीब, खुशबू-बदबू शब्द एक-दूसरे के विलोम हैं।

अमीर

गरीब

खुशबू

बदबू

शब्द	विलोम शब्द	शब्द	विलोम शब्द
अपना	पराया	चतुर	मूर्ख
अमीर	गरीब	जागना	सोना
जोड़ना	तोड़ना	प्रशंसा	निन्दा
अन्दर/भीतर	बाहर	तीव्र	मन्द
आदर	अनादर	दानी	याचक
आदान	प्रदान	दायाँ	बायाँ
इच्छा	अनिच्छा	इंसान	हैवान
देशी	विदेशी	उपकार	अपकार
उठाना	गिराना	उदय	अस्त
उधार	नकद	दोस्त	दुश्मन
उपयोगी	अनुपयोगी	नाराज़	राज़ी
नूतन	पुरातन	साक्षर	निरक्षर
प्यार	नफ़रत	कोमल	कठोर
कमज़ोर	ताकतवर	प्रसन्न	अप्रसन्न
कीमती	मामूली, सस्ती	प्रारम्भ	अन्त
आय	व्यय	खुशहाली	बदहाली
खुशी	नाराज़गी	शुद्ध	अशुद्ध
गन्दगी	सफ़ाई	शोर	खामोशी
गुण	अवगुण	सज्जन	दुर्जन
बढ़िया	घटिया	सफलता	असफलता
निर्मल	मलिन	समझदार	नासमझ
बनाना	बिगाड़ना	समता	विषमता
बीमार	तन्दुरुस्त	सम्मान	अपमान
बुद्धिमान	मूर्ख	सहयोग	असहयोग
मधुर	कटु	मालिक	मज़दूर
सम्भव	असम्भव	स्वतन्त्रता	परतन्त्रता

शब्द	विलोम शब्द	शब्द	विलोम शब्द
मुश्किल	आसान	स्वावलम्बी	परावलम्बी
रुचि	अरुचि	आगे	पीछे
साहसी	कायर, डरपोक	लड़ाई	समझौता
सावधान	असावधान	लाभदायक	हानिकारक
सुख	दु:ख	विशेष	सामान्य
वरदान	अभिशाप	ज्ञान	अज्ञान
शान्ति	अशान्ति	रक्षक	भक्षक

3. समश्रुति भिन्नार्थक शब्द

कुछ शब्दों के उच्चारण और वर्तनी में सूक्ष्म अन्तर होता है। ये सुनने में लगभग समान लगते हैं, लेकिन इनके अन्तर होता है, इसलिए ये समश्रुति भिन्नार्थक शब्द कहलाते हैं; जैसे—

नीर

नीड़

नीचे दिए गए समश्रुति भिन्नार्थक शब्दों को पढ़िए और याद कीजिए—

1. अनिल — वायु
   अनल — आग
2. अपेक्षा — तुलना में
   उपेक्षा — निरादर
3. अन्न — अनाज
   अन्य — दूसरा
4. अवधि — समय
   अवधी — एक भाषा
5. कुल — वंश
   कूल — किनारा
6. ओर — तरफ़
   और — दूसरा
7. कर्म — कार्य
   क्रम — सिलसिला
8. कोश — शब्द-संग्रह
   कोस — दूरी की एक नाप
9. दिन — दिवस
   दीन — असहाय
10. नीर — जल
    नीड़ — घोंसला
11. निश्चल — अटल
    निश्छल — छलरहित
12. नारी — स्त्री
    नाड़ी — नब्ज़
13. प्रसाद — कृपा, भोग
    प्रासाद — महल
14. पत्ती — छोटा पत्ता
    पति — स्वामी
15. बलि — बलिदान
    बली — वीर
16. बाग — बगीचा
    बाघ — एक पशु
17. भवन — सुन्दर मकान
    भुवन — संसार
18. मांस — गोश्त
    मास — महीना
19. साला — पत्नी का भाई
    शाला — घर
20. साँस — श्वास
    सास — पति या पत्नी
21. सदेह — देह के साथ
    सन्देह — शक
22. शुल्क — फीस
    शुक्ल — उज्ज्वल
23. शस्त्र — हथियार
    शास्त्र — ग्रन्थ
24. हरि — विष्णु
    हरी — हरे रंग की

4. अनेकार्थी शब्द

जिन शब्दों के एक से अधिक अर्थ होते हैं, उन्हें अनेकार्थी शब्द कहा जाता है; जैसे—'हरि' शब्द को कई अर्थों में प्रयोग किया जा सकता है—विष्णु, सिंह, सूर्य, वानर, घोड़ा। अत: 'हरि' अनेकार्थी शब्द है।

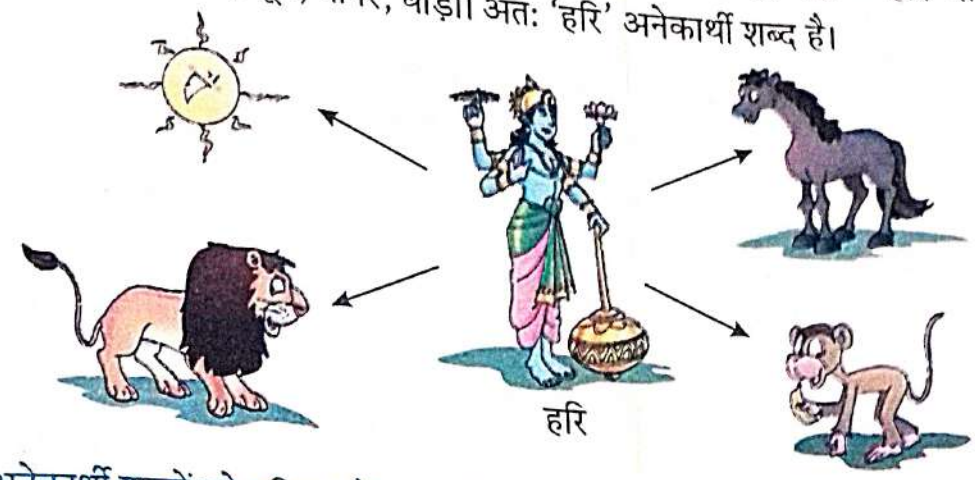

हरि

नीचे दिए गए अनेकार्थी शब्दों को पढ़िए और याद कीजिए—

1. अर्क = रस, इन्द्र, सूर्य, आक का पौधा।
2. अक्ष = धुरी, चौसर का पासा, मण्डल, आँख, पहिया।
3. अंक = गोद, नाटक का एक खण्ड, चिह्न, संख्या।
4. अर्थ = कारण, धन, प्रयोजन।
5. अजा = बकरी, माया।
6. अरुण = लाल रंग, सूर्य, सूर्य का सारथी।
7. अलि = भौंरा, सखी।
8. अन्तर = भीतर, शेष, बीच, दूरी, हृदय।
9. आधार = नींव, सहारा, अवलम्ब।
10. इन्दु = चन्द्रमा, कपूर, देवता।
11. कर = राजस्व, हाथ, हाथी की सूँड़।
12. काल = यमराज, मृत्यु, समय।
13. खग = पक्षी, हवा, बाण।
14. गुण = रस्सी, शील, तीन गुण (सत्, रज, तम)।
15. गो = वाणी, इन्द्रिय, दिशा, भूमि, गाय।
16. गुरु = भारी, ज्ञानदाता, बृहस्पति, शिक्षक, दो मात्राओं वाला वर्ण।
17. जलज = कमल, बड़े लोग, मछली, शंख, मोती।
18. ज्येष्ठ = ग्रीष्म ऋतु का मास, पति का बड़ा भाई।
19. तात = पुत्र, बड़ा भाई, पिता।
20. अम्बर = आकाश, वस्त्र।
21. कल = मधुर, आने वाला या बीता हुआ कल, मशीन।
22. नाग = हाथी, बादल, सर्प, पर्वत।
23. लाल = रंग, पुत्र, हीरे-जवाहरात।
24. द्विज = ब्राह्मण, दाँत, पक्षी, चन्द्रमा, नख, केश।
25. कर्ण = कुन्ती का पुत्र, कान, नाव की पतवार, समकोण के सामने की भुजा।

26. कनक = धतूरा, सोना, गेहूँ।
27. अनन्त = विष्णु, ब्रह्मा, आकाश, सर्पों का राजा, जिसका अन्त न हो।
28. पक्ष = पंख, तरफ़, महीने का पखवाड़ा।
29. विधि = भाग्य, तरीका, ब्रह्मा।
30. तारा = आकाश के नक्षत्र, बालि की स्त्री, आँखों की पुतली।
31. ध्रुव = तारा विशेष, भक्त विशेष, अटल, पृथ्वी का छोर।
32. मधु = शहद, चैत्रमास, वसन्त ऋतु, मदिरा।
33. मित्र = दोस्त, सूर्य।
34. लक्ष्य = निराशा, उद्देश्य।
35. रक्त = लाल, खून।
36. राशि = समूह, ढेर, रुपये, ज्योतिष की राशि।
37. रस = ब्रह्मानन्द, पानी, आनन्द, सार, स्वाद।
38. पय = दूध, पानी।
39. नाक = ऊँचा स्थान, गौरव, स्वर्ग, प्रतिष्ठा, नासिका।
40. नायक = कहानी या नाटक का प्रधान कलाकार, सेना का छोटा अधिकारी, प्रेमी, अगुआ।

5. शब्द-समूह के लिए एक शब्द

आस्तिक

भाषा को संक्षिप्त, चुस्त और प्रभावशाली बनाने के लिए कभी-कभी शब्द-समूह के स्थान पर केवल एक शब्द का प्रयोग किया जाता है; जैसे—ईश्वर में विश्वास रखने वाले को 'आस्तिक' कहते हैं।

नीचे ऐसे ही कुछ शब्द-समूह और उनके स्थान पर प्रयोग होने वाले शब्द दिए गए हैं। इन्हें पढ़िए, समझिए और याद कीजिए—

	शब्द-समूह	एक शब्द
1.	जिसका कोई नाथ (संरक्षक) नहीं है	अनाथ
2.	नियम-कानून का पालन	अनुशासन
3.	जो शुद्ध नहीं है	अशुद्ध
4.	बिना सोचे समझे किया गया विश्वास	अन्धविश्वास
5.	उपयोग में आने वाला	उपयोगी
6.	काम से जी चुराने वाला	कामचोर
7.	गुणों को धारण करने वाला	गुणवान
8.	पक्षी का घर	घोंसला
9.	चित्र बनाने की कला	चित्रकला
10.	पहाड़ से गिरने वाली जलधारा	झरना

11.	दान देने वाला	दानी
12.	प्रतिदिन होने वाला	दैनिक
13.	दो पहरों का समूह	दोपहर
14.	नया-नया पैदा हुआ	नवजात
15.	सही निशाना लगाने वाला	निशानेबाज़
16.	जिसकी कोई उपमा न हो	अनुपम
17.	सुबह-सुबह लगाई जाने वाली फेरी	प्रभात-फेरी
18.	पढ़ने-पढ़ाने का स्थान	पाठशाला
19.	जो छिपाने के योग्य हो	गोपनीय
20.	जो कठिनाई से प्राप्त हो	दुर्लभ
21.	भीख माँगने वाला	भिखारी
22.	मंगल करने वाला	मंगलकारी
23.	रास्ता दिखाने वाला	मार्गदर्शक
24.	जिसे पढ़ा न जा सके	अपठनीय
25.	जिनकी गिनती न की जा सके	अगण्य
26.	जो अपने देश का नहीं है	विदेशी
27.	जो शिक्षा देता है	शिक्षक
28.	जो सब जगह हो	सर्वव्यापक
29.	साथ पढ़ने वाला	सहपाठी
30.	सेना का सिपाही	सैनिक

1. दिए गए उत्तरों में से सही विकल्प पर सही (✓) का चिह्न लगाइए—

(क) लगभग समान उच्चारण, परन्तु अलग-अलग अर्थ वाले शब्द क्या कहलाते हैं ?
(i) अनेकार्थी ( ) (ii) समश्रुत भिन्नार्थक ( ) (iii) पर्यायवाची ( ) (iv) समानार्थी ( )

(ख) विलोम का तात्पर्य है—
(i) समान ( ) (ii) उलटा ( )
(iii) वही ( ) (iv) एक से अधिक ( )

(ग) समश्रुत भिन्नार्थक शब्द का सही उदाहरण है—
(i) अनिल, अमल ( ) (ii) अनल, अनिल ( ) (iii) अनल, पटल ( ) (iv) अनिल, विमल ( )

(घ) सौ वर्षों के समूह को कहते हैं—
(i) दशाब्दी ( ) (ii) शताब्दी ( ) (iii) सहस्राब्दी ( ) (iv) आब्दी ( )

(ङ) 'अंक' शब्द का एक अर्थ है—संख्या; और दूसरा अर्थ है—
(i) अंकुर ( ) (ii) गोद ( ) (iii) अंकित ( ) (iv) अंग ( )

2. दिए गए चित्रों के सम्मुख उनके तीन-तीन पर्यायवाची लिखिए—

....
....
....

....
....
....

....
....
....

3. कोष्ठक में दिए गए शब्दों के पर्यायवाची द्वारा रिक्त स्थान भरिए—

(क) हाथियों का झुंड .... के तट पर पानी पी रहा है।
(ख) बादलों के घिर आने पर जंगल में .... नाच रहा है।
(ग) .... में जलकर सब स्वाहा हो गया।
(घ) बच्चा .... कार्य कर रहा है।
(ङ) दु:शासन ने भरी सभा में द्रौपदी के .... हरण का प्रयत्न किया।
(च) नदी के .... पर कुछ हंस हैं।

4. निम्नलिखित रिक्त स्थानों की पूर्ति रंगीन शब्दों के विलोम शब्दों से कीजिए—

(क) कोई **पास** खड़ा था, कोई .... खड़ा था।
(ख) तुम्हारा उत्तर .... है, उसका उत्तर **गलत** है।
(ग) कहीं **दिन** है, तो कहीं .... है।
(घ) इस वर्ष .... आम हुए, पिछले वर्ष **कम** हुए थे।
(ङ) घर की खिड़की **खुली** थी, दरवाजा .... था।
(च) राजा का दिल .... था, रानी का **कोमल**।

5. कोष्ठक में से उचित शब्द चुनकर रिक्त स्थान भरिए—

(क) पक्षी अपने .... में बैठे हैं। (नीर,
(ख) तुलसी ने 'श्रीरामचरितमानस' .... भाषा में लिखी। (अवधी, अ
(ग) सुदामा .... ब्राह्मण थे। (दीन,
(घ) पानी पीकर वह पार्क की .... चला गया। (ओर,
(ङ) मैं मन्दिर से .... लेकर आया। (प्रासाद, प्र
(च) देश में .... की पैदावार जनसंख्या के अनुसार नहीं होती। (अन्य, अ

6. नीचे दिए गए शब्दों के दो-दो अर्थ लिखिए—

(क) आम .... एक फल .... साधारण
(ख) हार ....
(ग) वर ....
(घ) अम्बर ....

7. वाक्यों में रंगीन छपे वाक्यांशों के स्थान पर एक-एक शब्द लिखकर वाक्यों को दुबारा लिखिए—

(क) आकाश के तारों की संख्या की **गिनती नहीं की जा सकती**। आकाश के तारे .... हैं।
(ख) ईश्वर **सब जगह है**। ईश्वर .... है।
(ग) **काम से जी चुराने वाले** जीवन में कभी सफल नहीं होते। .... जीवन में कभी सफल नहीं
(घ) नवभारत टाइम्स **प्रतिदिन छपने वाला** समाचार-पत्र है। नवभारत टाइम्स .... समाचार-पत्र
(ङ) **नया-नया पैदा हुआ** शिशु पूर्णत: स्वस्थ है। .... शिशु पूर्णत: स्वस्थ है।

20

मुहावरे और लोकोक्तियाँ
Idioms and Proverbs

मुहावरों और लोकोक्तियों के प्रयोग से भाषा चुस्त और प्रभावशाली बन जाती है।

मुहावरे

जब कोई वाक्यांश (शब्द-समूह) निरन्तर प्रयोग में आने के कारण सामान्य अर्थ न देकर विशेष अर्थ देने लगे तो उसे मुहावरा कहते हैं। मुहावरे का अर्थ ऊपर से देखने पर लगता कुछ है और अन्दर से होता कुछ है; जैसे—कान भरना। जरा सोचिए! क्या कान भरे जा सकते हैं? नहीं ना। किन्तु यह एक मुहावरा है जिसका अर्थ चुगली करना है।

महत्त्वपूर्ण मुहावरे, उनका अर्थ तथा प्रयोग

1. अँगूठा दिखाना—साफ़ इंकार करना।
   प्रयोग—मैंने पवन से स्कूटर माँगा तो उसने अँगूठा दिखा दिया।
2. अन्धों में काना राजा—मूर्खों में थोड़ा समझदार व्यक्ति।
   प्रयोग—संजीव है तो पाँचवीं पास लेकिन अपने अनपढ़ दोस्तों के बीच अन्धों में काने राजा के समान है।
3. अपना उल्लू सीधा करना—स्वार्थ सिद्ध करना।
   प्रयोग—अपना उल्लू सीधा करने के बाद ललित अब रोहित से बात भी नहीं करता है।
4. आँखों का तारा—बहुत प्रिय।
   प्रयोग—ईशान अपनी माँ की आँखों का तारा है।
5. आकाश-पाताल एक करना—बहुत परिश्रम करना।
   प्रयोग—परीक्षा में अच्छे अंक पाने के लिए अंजलि ने आकाश-पाताल एक कर दिया।
6. आग में घी डालना—क्रोध बढ़ाना।
   प्रयोग—पिताजी पहले ही क्रोधित थे, उस पर प्रियंका के खराब परीक्षाफल ने आग में घी डालने का काम किया।
7. आस्तीन का साँप—धोखा देने वाला मित्र।
   प्रयोग—विराट को पता नहीं था कि कोच ही आस्तीन का साँप निकलेगा।
8. ईंट-से-ईंट बजाना—बर्बाद करना।
   प्रयोग—कारगिल युद्ध में भारतीय सैनिकों ने पाकिस्तानी घुसपैठियों की ईंट-से-ईंट बजा दी।
9. ईद का चाँद होना—कठिनाई से दिखाई देना।
   प्रयोग—मनीषा तुम तो ईद का चाँद हो गई हो।
10. ऊँट के मुँह में जीरा—आवश्यकता से कम वस्तु।
    प्रयोग—दिनभर परिश्रम करने वाले व्यक्ति के लिए दो रोटियाँ ऊँट के मुँह में जीरे के समान हैं।

11. कमर कसना—तैयार होना।

प्रयोग—रक्षामन्त्री ने भारतीय सैनिकों को अपनी सीमाओं पर कमर कसकर रहने का निर्देश दिया।

12. कलई खुलना—भेद खुलना।

प्रयोग—गिरोह के मुखिया के पकड़े जाने से अनेक अपराधों की कलई खुल गई।

13. कान भरना—चुगली करना।

प्रयोग—अध्यापक के कान भरकर मॉनीटर ने विनोद को पिटवा दिया।

14. गागर में सागर भरना—कम शब्दों में अधिक कहना।

प्रयोग—स्वतन्त्रता दिवस के अवसर पर प्रधानाचार्य का भाषण गागर में सागर था।

15. घी के दीये जलाना—खुशियाँ मनाना।

प्रयोग—दसवीं की परीक्षा में निकिता के जिले में प्रथम आने पर उसके माता-पिता ने घी के दीये ज

16. चूड़ियाँ पहनना—कायर होना।

प्रयोग—लक्ष्मीबाई उनमें से नहीं थीं जो जुल्म सहते हुए चूड़ियाँ पहनकर घर में बैठ जाते हैं।

17. चादर से बाहर पैर पसारना—आमदनी से अधिक खर्च करना।

प्रयोग—चार बच्चों का पिता इरफान चादर से बाहर पैर पसारने के कारण दु:खी रहता है।

18. चेहरे पर हवाइयाँ उड़ना—घबरा जाना।

प्रयोग—जब वह चोरी करते हुए पकड़ा गया तो उसके चेहरे पर हवाइयाँ उड़ने लगीं।

19. छक्के छुड़ाना—बुरी तरह हराना।

प्रयोग—पृथ्वीराज चौहान की सेना ने मुहम्मद गौरी की सेना के छक्के छुड़ा दिए।

20. दाल न गलना—सफल न होना।

प्रयोग—अंकुर ने मिकिन और संदीप की मित्रता तोड़ने का बहुत प्रयास किया, किन्तु उसकी दाल न

21. दाल में काला होना—गड़बड़ होना।

प्रयोग—आजकल विमल कचहरी बहुत जाता है, लगता है दाल में कुछ काला है।

22. नमक-मिर्च लगाना—बात को बढ़ा-चढ़ाकर कहना।

प्रयोग—अंजू भाभी पड़ोस की बातें नमक-मिर्च लगाकर सुनाती हैं।

23. नानी याद आना—घबराना।

प्रयोग—गणित पढ़ते हुए बड़े-बड़ों को नानी याद आ जाती है।

24. पानी-पानी होना—लज्जित होना।

प्रयोग—मैंने रोहित को बस्ते से पुस्तक चुराते हुए पकड़ा तो वह पानी-पानी हो गया।

25. पेट में चूहे कूदना—बहुत भूख लगना।

प्रयोग—सुबह से खाना न खाने पर उसके पेट में चूहे कूदने लगे।

26. बगुला भगत—कपटी व्यक्ति।
प्रयोग—शोभित से दूर ही रहना, वह पूरा बगुला भगत है।
27. भीगी बिल्ली बनना—डर जाना।
प्रयोग—दादाजी के सामने मैं ही नहीं, पापा भी भीगी बिल्ली बन जाते हैं।
28. मुँह में पानी आना—लालच आना।
प्रयोग—रसगुल्ले देखते ही निकिता के मुँह में पानी आ जाता है।
29. लोहे के चने चबाना—संघर्ष करना।
प्रयोग—ओलम्पिक में पदक जीतने के लिए लोहे के चने चबाने पड़ते हैं।
30. श्रीगणेश करना—शुभारम्भ करना।
प्रयोग—महिमा ने आज अपने नए व्यवसाय का श्रीगणेश किया है।

लोकोक्तियाँ

लोकोक्ति (लोक + उक्ति) का अर्थ है—आम लोगों में प्रचलित उक्ति या कथन। लोकोक्तियों का प्रयोग विशेष और व्यापक अर्थ में होता है। ये जनसाधारण के अनुभवों, किसी कहानी, घटना अथवा तथ्य पर आधारित होती हैं। इनका प्रयोग किसी विचार के समर्थन में होता है, जिससे कथन प्रभावशाली हो जाता है। ये प्राय: स्वतन्त्र वाक्यों की भाँति प्रयुक्त होती हैं। लोकोक्ति को 'कहावत' भी कहते हैं; जैसे—काला अक्षर भैंस बराबर। इसका शाब्दिक अर्थ से भिन्न विशेष अर्थ है—अनपढ़ होना।

महत्त्वपूर्ण लोकोक्तियाँ, उनका अर्थ तथा प्रयोग

1. आग लगने पर कुआँ खोदना—काम की व्यवस्था पहले से न करना।
प्रयोग—कल परीक्षा है तो आज किताबें खरीदने निकले हो। इसी को कहते हैं—आग लगने पर कुआँ खोदना।
2. आम के आम गुठलियों के दाम—दोहरा लाभ उठाना।
प्रयोग—मैं अखबार पढ़ता हूँ और फिर उसे रद्दी में बेच भी लेता हूँ। वही वाली बात है—आम के आम गुठलियों के दाम।
3. आँख का अन्धा नाम नैनसुख—गुण के विपरीत नाम।
प्रयोग—घर में एक पैसा नहीं है, नाम है करोड़ीमल। वही वाली बात है—आँख का अन्धा नाम नैनसुख।
4. उलटा चोर कोतवाल को डाँटे—अपराधी निरपराध पर दोष लगाए।
प्रयोग—एक तो विनोद स्कूल से भाग आया, पूछने पर आँख दिखाता है। यह अच्छी रही, उलटा चोर कोतवाल को डाँटे।
5. ऊँची दुकान फीका पकवान—नाम के अनुसार गुण न होना।
प्रयोग—गंगाराम का नाम बहुत सुना था, लेकिन उसके खेल में कोई आकर्षण न था। वही वाली बात हुई—ऊँची दुकान फीका पकवान।
6. एक पंथ दो काज—एकसाथ दो लाभ प्राप्त करना।
प्रयोग—हरिद्वार में गंगास्नान करूँगा और दफ्तर का काम भी पूरा कर लूँगा। एक पंथ दो काज हो जाएँगे।
7. एक ही थैली के चट्टे-बट्टे—एक ही जैसे गुण वाले।
प्रयोग—मदन शराबी है और रमन जुआरी। दोनों एक ही थैली के चट्टे-बट्टे हैं।

8. एक अनार सौ बीमार—चीज़ थोड़ी माँग बहुत।
प्रयोग—बैंक में दो पद खाली हैं और योग्य उम्मीदवार अनेक हैं। नौकरी किसे दें? एक अनार सौ बीमार।

9. घर का भेदी लंका ढाये—आपस की फूट का परिणाम भयंकर होता है।
प्रयोग—जयचन्द मुहम्मद गौरी से मिल गया था, इसलिए राजपूतों की हार हुई। घर का भेदी लंका ढाये।

10. चमड़ी जाए पर दमड़ी न जाए—अत्यधिक लालची होना।
प्रयोग—साहूकार के पास बहुत धन-सम्पत्ति है लेकिन वह अपने पुत्र को नई साइकिल नहीं दिलाना चाहता। उसका सिद्धान्त है—चमड़ी जाए पर दमड़ी न जाए।

11. चोर की दाढ़ी में तिनका—अपराधी स्वयं शंकित रहता है।
प्रयोग—मैंने उस पर तो घड़ी की चोरी का दोष लगाया नहीं था, फिर वह क्यों सफ़ाई देने लगा। मालूम होता है कि उसी ने घड़ी चुराई है। चोर की दाढ़ी में तिनका।

12. जिसकी लाठी उसकी भैंस—बलवान की ही विजय होती है।
प्रयोग—कुछ बदमाशों ने सुनील का सामान बाहर फेंककर उसके मकान पर कब्ज़ा कर लिया। आजकल तो जिसकी लाठी उसकी भैंस का ज़माना आ गया है।

13. घर की मुर्गी दाल बराबर—जो वस्तु सुलभ हो, उसकी कद्र नहीं होती।
प्रयोग—मेरे भाई डॉक्टर हैं, पर पिताजी अपने स्वास्थ्य के विषय में उनसे कुछ नहीं पूछते, वैद्य जी से ही परामर्श लेते हैं। किसी ने सच ही कहा है—घर की मुर्गी दाल बराबर।

14. खोदा पहाड़ निकली चुहिया—अत्यधिक परिश्रम फल थोड़ा।
प्रयोग—रात-दिन परिश्रम करने के बाद भी सोहन तृतीय श्रेणी में पास हुआ। वही कहावत हो गई—खोदा पहाड़ निकली चुहिया।

15. दीवारों के भी कान होते हैं—गुप्त बात छिपी नहीं रहती।
प्रयोग—तुम्हें यह बात यहाँ नहीं करनी चाहिए। जानते नहीं हो, दीवारों के भी कान होते हैं।

16. दूध का दूध और पानी का पानी—न्याय करना।
प्रयोग—रामू पर चोरी का आरोप था, पर था वह बेकसूर। लोग समझते थे कि उसे कैद हो जाएगी लेकि जज ने दूध का दूध और पानी का पानी करते हुए उसे छोड़ दिया।

17. मन चंगा तो कठौती में गंगा—हृदय पवित्र रहने पर घर ही मंदिर।
प्रयोग—तबीयत खराब है तो पूर्णिमा पर हरिद्वार जाने की क्यों सोच रहे हो, घर पर ही स्नान कर लेना। मन चंगा तो कठौती में गंगा।

1. दिए गए उत्तरों में से सही विकल्प पर सही (✓) का चिह्न लगाइए—

(क) ऐसे वाक्यांश जिनका सामान्य अर्थ न होकर एक विशेष अर्थ होता है, वे क्या कहलाते हैं?

(i) संयुक्त वाक्य ◯ (ii) मुहावरे ◯ (iii) क्रियाविशेषण ◯ (iv) निपात ◯

(ख) मुहावरों के सही अर्थ पर सही (✓) का चिह्न लगाइए—

(i) नानी याद आना—

नानी की याद आना ◯ होश ठिकाने आना ◯ घबराना ◯

(ii) अँगूठा दिखाना—
साफ़ इंकार करना ◯ किसी तरफ़ इशारा करना ◯ किसी को शाबासी देना ◯

(iii) घी के दीये जलाना—
रोशनी करना ◯ खुशियाँ मनाना ◯ किसी की प्रतीक्षा करना ◯

(iv) रंग में भंग पड़ना—
रंग में भाँग मिलाना ◯ खुशी में बाधा पड़ना ◯ गड़बड़ होना ◯

(v) हाथ मलना—
दु:खी होना ◯ पछताना ◯ खुश होना ◯

(ग) लोकोक्तियों के सही अर्थ पर (✓) का चिह्न लगाइए—

(i) मन चंगा तो कठौती में गंगा—
हृदय पवित्र रहने पर घर ही मंदिर ◯ एक दोष होने पर दूसरा दोष भी मिल जाना ◯
गंगा के समान पवित्र मन होना ◯ मन के कठौते में गंगा लिए फिरना ◯

(ii) आम के आम गुठलियों के दाम—
आम खाकर गुठली का सौदा करना ◯ आम के बदले आम और गुठली के बदले दाम देना ◯
अधिक लाभ उठाना ◯ दोहरा लाभ उठाना ◯

2. नीचे दिए गए मुहावरों को उनके सही अर्थ से मिलाइए—

(क) अपना उल्लू सीधा करना	(i) शुभारम्भ करना
(ख) आस्तीन का साँप	(ii) पछताना
(ग) ईद का चाँद होना	(iii) धोखा देने वाला मित्र
(घ) दाल न गलना	(iv) तैयार होना
(ङ) कमर कसना	(v) कठिनाई से दिखाई देना
(च) बगुला भगत	(vi) स्वार्थ सिद्ध करना
(छ) श्रीगणेश करना	(vii) सफल न होना
(ज) हाथ मलना	(viii) कपटी व्यक्ति

3. उचित मुहावरा चुनकर वाक्य पूर्ण कीजिए—

(क) स्वतन्त्रता दिवस के अवसर पर प्रधानाचार्य का भाषण ..... था।

(ख) मैंने प्रशान्त से स्कूटर माँगा तो उसने ..... दिया।

(ग) आजकल अंकुर कचहरी बहुत जाता है, लगता है ..... है।

(घ) दादाजी के सामने मैं ही नहीं, पापा भी ..... बन जाते हैं।

(ङ) ओलम्पिक दौड़ जीतने के लिए ..... पड़ते हैं।

4. निम्नलिखित वाक्यों में प्रयुक्त गलत मुहावरों की जगह सही मुहावरों का प्रयोग कर वाक्य को फिर से लिखिए—

(क) हिन्दुस्तान के खिलाड़ियों ने क्रिकेट के मैदान में पाकिस्तान के खिलाड़ियों के चार चाँद लगा दिए।

(ख) सुबह से कुछ नहीं खाया। मेरे तो सिर पर खून सवार है। जल्दी से कुछ खाने को दो।

(ग) जब वह चोरी करते पकड़ा गया तो हवा से बातें करने लगा।

(घ) भरी महफ़िल में उसने रीना को ऐसा लताड़ा कि रीना का अंग-अंग ढीला पड़ गया।

(ङ) उसने आसमान सिर पर उठा लिया, लेकिन उसे नौकरी नहीं मिली।

5. निम्नलिखित लोकोक्तियों को उनके अर्थ से मिलाइए—

(क) ऊँची दुकान फीका पकवान	आपस की फूट का परिणाम भयंकर होता है
(ख) दूध का दूध और पानी का पानी	नाम के अनुसार गुण न होना
(ग) घर का भेदी लंका ढाये	अपराधी निरपराध पर दोष लगाए
(घ) दीवारों के भी कान होते हैं	न्याय करना
(ङ) उलटा चोर कोतवाल को डाँटे	गुप्त बात छिपी नहीं रहती

6. निम्नलिखित भाव प्रकट करने वाली लोकोक्तियाँ बताइए और उनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए—

(क) नाम के अनुसार गुण न होना।

(ख) आपस की फूट का परिणाम भयानक होता है।

(ग) बलवान की ही विजय होती है।

(घ) अचानक बिना परिश्रम इच्छित वस्तु प्राप्त हो जाना।

(ङ) पहले से काम की व्यवस्था न करना।

7. निम्नलिखित वाक्यों से मुहावरे छाँटकर उनके अर्थ लिखिए—

(क) मेरे पिताजी जीवनभर अँगारों पर लोटते रहे।

(ख) सड़क हादसे में कपूर साहब की मृत्यु हो जाने से उनके परिवार पर आसमान टूट पड़ा।

(ग) मदारी थोड़े-से भोजन का लालच देकर बन्दर को अपनी उँगलियों पर नचाता है।

(घ) कुछ चतुर लोग सीधे-सादे लोगों को उल्लू बनाकर ठग लेते हैं।

(ङ) आजकल बिना मुट्ठी गर्म किए काम नहीं होता।

8. मुहावरे और लोकोक्तियों के प्रयोग से वाक्यों में क्या परिवर्तन आ जाता है ?

रचनात्मक गतिविधियाँ

- नीचे दिए गए चित्रों को देखकर इनके लिए उपयुक्त मुहावरा अथवा लोकोक्ति लिखिए—

....

....

....

....

संवाद-लेखन
Dialogue Writing

प्राय: व्यक्ति एक-दूसरे से बातचीत करते हैं। उनकी बातचीत का विषय कुछ भी हो सकता है। उनका परस्पर बातचीत करना ही संवाद कहलाता है। प्रत्येक संवाद के लिए दो-या-दो से अधिक व्यक्तियों का होना आवश्यक होता है।

संवाद-लेखन के लिए निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए—

- संवाद छोटे तथा सरल भाषा में होने चाहिए।
- संवाद विषय के अनुकूल तथा एक-दूसरे से जुड़े हों।
- संवाद पात्रों के अनुकूल हों।
- संवादों में बनावटीपन नहीं होना चाहिए।

दो यात्री बस की प्रतीक्षा में बस-स्टॉप पर काफ़ी देर से खड़े हैं। आइए, सुनें वे किस विषय पर और क्या संवाद कर रहे हैं—

बस की प्रतीक्षा कर रहे दो यात्रियों में संवाद

पहला यात्री : आपको कहाँ जाना है?

दूसरा यात्री : दरियागंज।

पहला यात्री : आप कौन-सी बस से जाएँगे?

दूसरा यात्री : पौना घण्टा हो गया, 316 नम्बर की बस की प्रतीक्षा कर रहा हूँ।

पहला यात्री : बसें समय पर आती ही नहीं। बसवालों ने एक सप्ताह से हड़ताल कर रखी है।

दूसरा यात्री : भाई! आम आदमी की परेशानी कौन समझता है?

पहला यात्री : हाँ, इन अफ़सरों को बस में चलना पड़े तो पता चले।

दूसरा यात्री : हम-आप कर ही क्या सकते हैं? तपती दोपहर में बस-स्टॉप पर खड़े-खड़े झुलसते रहिए, बस!

आइए, अब कुछ अन्य संवाद पढ़ते हैं–

1. जन्मदिन के कार्यक्रम के सम्बन्ध में दो मित्रों में संवाद

विशाल : अरे मिकिन, चलो अच्छा हुआ, तुम यहीं मिल गए। मैं तो तुम्हारे घर आ रहा था।
मिकिन : क्या कोई विशेष बात है?
विशाल : हाँ, आगामी चौदह तारीख़ को मेरा जन्मदिन है। उसी अवसर पर तुम्हें और अंकल-आंटी को निमन्त्रित करने आ रहा था।
मिकिन : मम्मी-पापा तो शहर से बाहर गए हैं। जब वे आँएगे, तो मैं उन्हें बता दूँगा।
विशाल : बता दूँगा नहीं, तुम्हें उन्हें अपने साथ लेकर आना है। वे कब तक आएँगे?
मिकिन : बारह तारीख तक आएँगे।
विशाल : चलो मैं बाद में स्वयं आकर उन्हें आमन्त्रित करूँगा और उनसे जन्मदिन पर आने की विनती करूँगा।
मिकिन : ठीक है, आ जाना। अच्छा, यह तो बताओ, तुमने किस-किसको बुलाया है?
विशाल : मैंने अपने लगभग सभी मित्रों को बुलाया है।
मिकिन : संजीव भी आएगा?
विशाल : नहीं, वह अपने मामाजी के यहाँ लखनऊ गया है। बीस तारीख के बाद लौटेगा।
मिकिन : क्या-क्या कार्यक्रम रखे हैं, जन्मदिन पर?
विशाल : सुबह 10 बजे हवन होगा। संध्या को छः बजे केक कटेगा, फिर प्रीतिभोज है।

2. नई अध्यापिका के विषय में दो छात्राओं के बीच संवाद

अंजलि : अंग्रेज़ी की नई मैडम तो बहुत अच्छा पढ़ाती हैं।
चारू : एक-एक बात विस्तार से समझाती हैं।
अंजलि : मैंने कई बार प्रश्न पूछा था। उन्हें क्रोध नहीं आया। शान्त स्वभाव से तब तक समझाती रहीं जब तक मेरी समझ में नहीं आ गया।
चारू : शोभा मैडम तो आकर बैठ जाती थीं। कोई प्रश्न पूछते ही डाँटकर बैठा देती थीं।
अंजलि : अब हमारी अंग्रेज़ी अच्छी हो जाएगी।
चारू : हमें घर जाकर भी एक-एक पाठ स्वयं तैयार करना चाहिए। रेनू मैडम ठीक कह रही थीं—अच्छी पढ़ाई के लिए अभ्यास आवश्यक है।

3. बच्चों से परेशान दो महिलाओं में संवाद

शिवानी : परीक्षाएँ सिर पर आ रही हैं। अर्चित को चिन्ता ही नहीं है। सारा दिन कार्टून फिल्म की रट लगाए रहता है। स्कूल से आते ही टी०वी० चला लेता है। सारा दिन कार्टून देखता रहता है।
महिमा : अपनी मानसी का भी यही हाल है। पढ़ने का तो नाम ही नहीं लेती। स्कूल से आते ही सहेलियों के फोन आने शुरू हो जाते हैं। शाम को बैडमिंटन खेलने जाएगी तो घण्टों लगा आएगी।
शिवानी : आजकल के बच्चों को सारी सुविधाएँ चाहिए। बस पढ़ने के लिए मत कहो।
महिमा : हमारी मानसी को ही देख लो। छठी में आ गई। रसोई में तो घुसने का नाम ही नहीं लेती। घर के काम के समय होमवर्क करने का बहाना बना देती है। न जाने खेल के समय यह होमवर्क क्यों याद नहीं आता?

शिवानी : आखिर बच्चों को समझाएँ कैसे?

महिमा : आजकल सभी बच्चों का यही हाल है। शायद बड़े होकर खुद समझ जाएँ।

4. पर्यावरण पर दो युवकों के बीच संवाद

गौरव : जब तक लोगों में जागृति नहीं आएगी, पर्यावरण की सुरक्षा नहीं हो सकती।

विकास : जनसंख्या वृद्धि ही प्रदूषण का सबसे बड़ा कारण है।

गौरव : अवैध बस्तियों का निर्माण, जंगलों का कटना, कारखानों का बढ़ना—ये भी तो प्रदूषण बढ़ने के कारण हैं।

विकास : भारतवर्ष की समस्त समस्याओं की जड़ जनसंख्या वृद्धि ही है। अधिक लोग, अधिक पेट, अधिक शरीर। उन्हें खाने के लिए भोजन, पहनने के लिए कपड़ा, रहने के लिए मकान चाहिए किन्तु साधन सीमित हैं।

गौरव : तुम ठीक कहते हो। जनसंख्या वृद्धि पर नियन्त्रण करने पर ही पर्यावरण सुरक्षित रहेगा।

विकास : और देश भी समृद्ध होगा।

- निम्नलिखित विषयों पर संवाद-लेखन कीजिए—

(क) स्कूल-कैंटीन में बैठे दो छात्रों में संवाद।

(ख) परीक्षा-परिणाम अच्छा न होने पर प्रधानाचार्य और विद्यार्थियों के बीच हुआ संवाद।

(ग) पिकनिक के कार्यक्रम के सम्बन्ध में दो सहेलियों के बीच संवाद।

(घ) कक्षा में आए नए विद्यार्थी के विषय में अर्चित और मीना में संवाद।

(ङ) ताजमहल देखकर लौटे भाई-बहन में संवाद।

(च) विद्यालय के वार्षिकोत्सव पर आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम के विषय में दो मित्रों में संवाद।

रचनात्मक गतिविधियाँ

1. राहुल अपने सहपाठियों के साथ नैनीताल घूमने जाना चाहता है। इस सम्बन्ध में वह अपने माता-पिता से बातचीत करता है। तीनों के बीच क्या संवाद हुए होंगे, अपनी कल्पना से लिखिए।

2. दिल्ली में मेट्रो रेल चलने से होने वाली सुविधाओं के विषय में सोहन और सुनीता के बीच हुई बातचीत को दिए गए संकेत बिन्दुओं के आधार पर वार्तालाप के रूप में लिखिए—

- समय की बचत
- वातानुकूलित
- साफ़-सफ़ाई
- आधुनिक तकनीक का इस्तेमाल।

अनुच्छेद एक छोटी रचना को कहा जाता है। जब किसी घटना, दृश्य या विषय को सारगर्भित तथा संक्षिप्त ह एक ही अनुच्छेद (पैरा) में प्रस्तुत किया जाता है, तो उसे अनुच्छेद-लेखन कहते हैं।

अनुच्छेद-लेखन में निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए—

- अनुच्छेद में विषय का अनावश्यक विस्तार नहीं किया जाना चाहिए, केवल मूल बिन्दुओं की ही चर्चा की चाहिए।
- अनुच्छेद की भाषा सरल तथा वाक्य छोटे होने चाहिए।
- शब्दों की सीमा का ध्यान रखना चाहिए। इस कक्षा में 100-125 शब्दों में लिखा गया अनुच्छेद उपयुक्त जाता है।
- निबन्ध की तरह विषय की भूमिका न बाँधकर सीधे विषय पर आ जाना चाहिए।

नीचे उदाहरण के रूप में कुछ अनुच्छेद दिए गए हैं। इन्हें पढ़िए, समझिए तथा अन्य अनुच्छेद लिखने का अ कीजिए—

1. हमारा राष्ट्रध्वज

प्रत्येक स्वतन्त्र राष्ट्र के कुछ राष्ट्रीय प्रतीक होते हैं जिनमें उस देश का ध्वज भी है। हमारा राष्ट्रध्वज 'तिरंगा' कहलाता है क्योंकि इसमें तीन रंगों की पट्टियाँ हैं—सबसे ऊपर केसरिया, बीच में सफेद और सबसे नीचे हरा। ये तीनों रंग हमें कुछ-न-कुछ सिखाते हैं। ऊपर का केसरिया रंग हमें वीरता और बलिदान की प्रेरणा देता है, तो बीच का सफेद रंग शान्ति का द्योतक है। सबसे नीचे का हरा रंग खुशहाली का प्रतीक है। सफेद रंग की पट्टी के बीच में एक चक्र बना हुआ है जिसमें चौबीस तीलियाँ हैं। यह चक्र हमें निरन्तर कार्य करने की प्रेरणा देता है। इस प्रकार हमारा राष्ट्रीय ध्वज वीरता, शान्ति तथा खुशहाली का प्रतीक है। हमारा राष्ट्रध्वज प्रत्येक भारतीय की आन, बान और शान है। हमारा कर्त्तव्य है कि हम अपने ध्वज का सम्मान करें और ऐसा कोई भी कार्य न करें जिससे देश की एकता और अखण्डता को खतरा उत्पन्न हो। राष्ट्रीय पर्वों पर जब राष्ट्रध्वज फहराया जाता है तो हमें सावधान की मुद्रा में खड़े होकर इसके प्रति सम्मान प्रकट करना चाहिए।

2. मधुर वाणी

कौआ काला होता है और कोयल भी काली होती है, लेकिन कोयल को सब पसन्द करते हैं, कौए को नहीं। उ बोली के कारण ऐसा होता है। कोयल मधुर स्वर में बोलती है, इसलिए सबको अच्छी लगती है। कौआ कटु स्वर में 'क

घाव' करता है, इसलिए किसी को अच्छा नहीं लगता। इसी प्रकार, जो व्यक्ति मधुर स्वर में बोलता है वह सबके मन को मोह लेता है, जबकि कड़वे बोल बोलने वाले से सभी लोग बचते हैं। मधुर वाणी शत्रु को भी मित्र बना देती है; कठोर-से-कठोर व्यक्ति के मन को पिघला देती है। कड़वे बोल तलवार से भी गहरा घाव करते हैं, क्योंकि तलवार का घाव तो भर जाता है लेकिन कड़वी बात से लगा घाव कभी नहीं भरता। वाणी से ही व्यक्ति की सभ्यता और शिष्टता का पता चलता है। मधुर वाणी मनुष्य के व्यक्तित्व को आकर्षक बना देती है। मधुर बोलने वाला सबका प्रिय और विश्वासपात्र बनकर उन्नति करता जाता है। इसलिए हमें सदा मधुर वाणी का ही प्रयोग करना चाहिए।

3. खेल-कूद के लाभ

खेलों से न केवल मनोरंजन होता है बल्कि व्यायाम भी होता है जिससे स्वास्थ्य अच्छा रहता है। जिस बालक का मन और कहीं नहीं लगता, उसका मन खेलों में खूब लगता है। कई बार तो बालक-बालिकाओं को खेल-कूद में खाने-पीने की सुध-बुध भी नहीं रहती। खेलने से चिन्ता दूर होती है, उत्साह बढ़ता है तथा मन प्रसन्न होता है। इससे शरीर में चुस्ती और फुर्ती आती है जिससे मनुष्य की कार्यकुशलता बढ़ती है। इसीलिए नौकरियों में अच्छे खिलाड़ियों को प्राथमिकता दी जाती है। अच्छे खिलाड़ी कीर्ति, सम्मान तथा पुरस्कार पाते हैं।

4. कम्प्यूटर का महत्त्व

आवश्यकता आविष्कार की जननी है। अपनी आवश्यकता को पूरा करने के लिए ही मानव हमेशा नए यन्त्रों के आविष्कार करता रहा है। कम्प्यूटर विज्ञान का अत्यधिक विकसित एवं उपयोगी यन्त्र है। इसके पास ऐसा मशीनी मस्तिष्क है, जो निर्देश मिलते ही हमारे काम सही रूप में करता है। भारत में कम्प्यूटर का प्रयोग लगभग तीस वर्ष पहले आरम्भ हुआ; तब से कम्प्यूटर उद्योग लगातार आगे बढ़ रहा है। आज कोई ऐसा क्षेत्र नहीं है जहाँ कम्प्यूटर न पहुँचा हो। शिक्षा, संचार, उद्योग, परिवहन आदि सभी क्षेत्रों में कम्प्यूटर के प्रयोग ने कार्य को और आसान बना दिया है। समय की बचत के साथ-साथ कार्य में होने वाली गलतियों में भी कमी आई है। कम्प्यूटर इतना कलात्मक, साफ़-सुथरा व विविधता लिए हुए है कि बाकी मशीनें अब बेकार लगने लगी हैं। इंटरनेट के कारण हम चलते-फिरते ई-मेल भेज व प्राप्त कर सकते हैं। बैंक से लेन-देन करना, अपने खाते के बारे में जानना या कोई भी वस्तु बाज़ार से खरीदना, इसके द्वारा सहज हो गया है। आज कम्प्यूटर हमारी मूलभूत आवश्यकता बनकर रह गया है।

1. निम्नलिखित विषयों पर लगभग 100-125 शब्दों में अनुच्छेद-लेखन कीजिए—
   - (क) फलों का राजा : आम
   - (ख) ईद : भाईचारे का त्योहार
   - (ग) लालकिला
   - (घ) जब मुझे सड़क पर सौ रुपये का नोट मिला
   - (ङ) वर्षा का एक दिन
   - (च) भारतीय खेल : कबड्डी
   - (छ) भारतीय किसान
   - (ज) बस-अड्डे का दृश्य
   - (झ) कोई मनोरंजक घटना
   - (ञ) मेरे प्रिय अध्यापक
2. अपने आस-पास घटित घटनाओं, दिखाई देने वाली समस्याओं व अनुभवों आदि के आधार पर अनुच्छेद लिखने का प्रयास कीजिए।

कहानी-लेखन भी एक कला है। बच्चों को कहानियाँ सुनने और सुनाने में बड़ा आनन्द आता है। इनसे जहाँ मनोरं होता है वहीं ज्ञान भी बढ़ता है। वे कुछ-न-कुछ शिक्षा, सन्देश या प्रेरणा भी प्रदान करती हैं इसलिए कहानी लेखन विषय का एक भाग बन गया है।

कहानी-लेखन में निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए—

- दिए गए चित्रों, संकेतों या अधूरी कहानी को ध्यानपूर्वक देखिए। उनके अनुसार कहानी की रचना कीजिए।
- कहानी सदैव भूतकाल में लिखी जाती है।
- लिखी गई कहानी में घटनाओं की क्रमबद्धता आवश्यक है।
- कहानी के अन्त में उससे मिलने वाली शिक्षा का भी उल्लेख होना चाहिए।

चित्रों की सहायता से कहानी-रचना

नीचे चित्रों में एक कहानी दी गई है। चित्रों को ध्यानपूर्वक देखिए और कहानी को समझिए। इन चित्रों के आधार बनने वाली कहानी भी अलग से दी गई है। इसी प्रकार, स्वयं भी चित्रों के आधार पर कहानी-रचना का अभ्यास कीजिए।

कहानी का वर्णन

किसी जंगल में एक हिरन, कौआ और चूहा रहते थे। तीनों आपस में पक्के मित्र थे। तीनों साथ-साथ रहते खाते-पीते थे। एक दिन जंगल में एक शिकारी आया। उसने अपना ज़ाल फैला दिया। बेचारा हिरन उसके जाल में फँस गया उस समय कौआ और चूहा वहाँ नहीं थे। कौआ अन्य पक्षियों का कोलाहल सुनकर वहाँ आया। जब उसने हिरन को जाल फँसा हुआ देखा, तब वह पेड़ पर बैठकर काँव-काँव करने लगा। कौए की आवाज़ सुनकर चूहा भागा चला आया। चूहे अपने तेज़ दाँतों से जाल काट दिया। इस प्रकार, हिरन की जान बच गई।

संकेतों के आधार पर कहानी-रचना

नीचे एक कहानी के कुछ संकेत दिए गए हैं। साथ ही, इनसे बनने वाली कहानी भी दी गई है। इस उदाहरण से आपको संकेतों आधार पर स्वयं कहानी-रचना में सहायता मिलेगी—

एक बूढ़ा किसान — उसके चार पुत्र — चारों का आपस में झगड़ना — किसान का दु:खी होना — उसका बीमार पड़ना किसान द्वारा अपने पुत्रों को सीख देने की सोचना — लकड़ियों का गट्ठर मँगवाना — एक-एक करके चारों पुत्रों से उसे तोड़ को कहना — किसी के भी द्वारा लकड़ी का गट्ठर न टूटना — गट्ठर को खुलवाना — चारों पुत्रों को एक-एक लकड़ी देना

तोड़ने को कहना — सभी पुत्रों द्वारा आसानी से तोड़ना — उनकी समझ में कुछ न आना — किसान द्वारा एकता का महत्त्व बताना — पुत्रों को अपनी भूल का अहसास हो जाना — शिक्षा — ।

कहानी की रचना

किसी गाँव में एक बूढ़ा किसान रहता था जिसके चार पुत्र थे। वे चारों आपस में झगड़ते रहते थे। किसान को यह देखकर बहुत कष्ट होता था। उसने अपने पुत्रों को समझाने का बहुत प्रयास किया परन्तु उनमें से किसी के कान पर जूँ न रेंगी। एक दिन किसान बीमार पड़ गया। लेटे-लेटे उसके मन में एक विचार आया। उसने अपने पुत्रों को समझाने के लिए एक तरीका खोज लिया था। उसने लकड़ियों का एक गट्ठर मँगवाया और अपने चारों पुत्रों को बुलवाकर एक-एक करके उन सबसे उसे तोड़ने को कहा। चारों में से कोई भी लकड़ियों के उस गट्ठर को तोड़ नहीं पाया। किसान ने उस गट्ठर को खुलवाया। चारों पुत्रों को एक-एक लकड़ी दी और अब उनसे उसे तोड़ने को कहा। किसान के सभी पुत्रों ने उन लकड़ियों को आसानी से तोड़ दिया। किसान के बेटों की समझ में नहीं आ रहा था कि इस प्रकार लकड़ियाँ तुड़वाने के पीछे उनके पिता की क्या मंशा है। तभी किसान बोला, "मेरे पुत्रो! तुमने देखा जब तक ये लकड़ियाँ बँधी थीं, तब तक तुममें से कोई भी इन्हें तोड़ नहीं पाया, पर जैसे ही इन्हें अलग-अलग कर दिया गया; तुम सबने उन्हें आसानी से तोड़ दिया। इसी प्रकार, परिवार के लोग जब मिल-जुलकर रहते हैं, तो उन्हें कोई भी हानि नहीं पहुँचा सकता; पर जब वे आपस में लड़ते-झगड़ते और अलग-अलग रहते हैं, तो उन्हें हानि पहुँचाना बहुत सरल हो जाता है।" बात किसान के पुत्रों की समझ में आ गई। उन्होंने अपने पिता से क्षमा माँगी और हमेशा मिल-जुलकर रहने का वचन दिया।

शिक्षा—एकता में बल है।

1. दिए गए चित्रों के आधार पर संक्षिप्त कहानी लिखिए तथा कहानी का शीर्षक व कहानी से हमें क्या शिक्षा मिलती है, भी लिखिए।

2. दिए गए संकेतों के आधार पर संक्षिप्त कहानी लिखिए—

एक आश्रम में एक ऋषि — चील का एक चूहे को चोंच में लेकर उड़ना — चूहे का गिरना — ऋषि का चूहे को पाल लेना — चूहे का बिल्ली से डरना — ऋषि का उसे बिलाव बना देना — बिलाव का कुत्तों से डरना — बिलाव को कुत्ता बनाना — कुत्ते का शेर से डरना — कुत्ते को शेर बनाना — शेर का ऋषि पर झपटना — ऋषि द्वारा उसे फिर चूहा बना देना।

24

पत्र-लेखन
Letter Writing

'पत्र-लेखन' एक महत्त्वपूर्ण कला है। इस कला के माध्यम से मनुष्य अपने विचारों को स्वतन्त्र रूप से प्रकट कर सकता है। 'पत्र' दूर रहने वाले व्यक्ति से विचारों, समाचारों और सूचनाओं के आदान-प्रदान का एक महत्त्वपूर्ण माध्यम है।

पत्रों के भेद

पत्र के मुख्यत: तीन भेद होते हैं—

1. **व्यक्तिगत पत्र**—ये पत्र अपने सम्बन्धियों, मित्रों को दु:ख, सुख तथा कुशल समाचार, निमन्त्रण, आवेदन आदि के लिए लिखे जाते हैं।

2. **व्यापारिक पत्र**—जो पत्र एक व्यापारी किसी दूसरे व्यापारी को या किसी फर्म या कम्पनी को माल मँगाने के लिए या भुगतान के लिए या किसी भूल-चूक के सम्बन्ध में लिखता है, वह व्यापारिक-पत्र कहलाता है। अत: इन पत्रों में व्यवसाय से सम्बन्धित बातें लिखी जाती हैं।

3. **शासकीय पत्र**—ये सरकारी पत्र होते हैं। ये पत्र राज्य तथा राज्य से मान्यता प्राप्त कार्यालयों अथवा अधिकारियों द्वारा प्रार्थना करने, शिकायतें करने तथा अन्य प्रकार की बातें और सूचनाएँ देने के लिए लिखे जाते हैं।

अच्छे पत्रों की विशेषताएँ

अच्छे पत्र की निम्नलिखित विशेषताएँ होती हैं—

- पत्र सुन्दर शैली में लिखा जाए। उसमें शिष्टता, नम्रता और आत्मीयता होनी चाहिए।
- पत्र में विचारों की स्पष्टता होनी चाहिए। स्वच्छता तथा सुन्दरता का ध्यान रखा जाए।
- सभी वाक्य और बातें एक-दूसरे से सम्बन्धित हों। एक ही बात को बार-बार न दोहराया जाए।

पत्रों के भाग

नवीन प्रथा के अनुसार पत्र के सात भाग होते हैं अर्थात् प्रत्येक पत्र में निम्नलिखित बातें होनी आवश्यक हैं—

1. **स्थान**—पत्र के सबसे ऊपर भेजने वाले के स्थान का नाम होता है।

2. **दिनांक और दिन**—जिस तिथि और दिन को पत्र लिखा गया है, उन्हें स्थान के नीचे लिखा जाता है।

3. **सम्बोधन**—जिसको पत्र लिखते हैं उसका यथा-श्रेणी प्रशस्ति शब्द (सम्बोधन शब्द) दिनांक के नीचे लिखते हैं।

4. **अभिवादन**—अगली पंक्ति में लगभग तिहाई भाग छोड़कर आदर, आशीर्वाद सूचक शब्द लिखते हैं।

5. **विषय**—पत्र का मुख्य भाग विषय होता है। इसमें पत्र भेजने वाला अपने हृदयगत भावों को लिखता है।

6. **शिष्टाचार के शब्द**—जिस पंक्ति में पत्र का विषय समाप्त हो जाता है, उसके नीचे श्रेणी के अनुसार ये शब्द लिखे जाते हैं।

7. **हस्ताक्षर**—शिष्टाचार के शब्दों के ठीक नीचे भेजने वाला अपना नाम-पता लिखता है।

1. पिता जी को पत्र

आपके स्कूल से एक भ्रमण दल ग्रीष्मावकाश में नैनीताल जा रहा है। पिता जी से जाने के लिए अनुमति प्राप्त कीजिए और खर्च के लिए रुपए मँगवाइए।

5, मालवीय छात्रावास,
वाराणसी (उ० प्र०)
दिनांक : 25 अप्रैल, 2019

पूज्य पिता जी,

सादर चरण स्पर्श!

आपका कृपा-पत्र मिला। मेरा स्कूल 15 मई से दो मास के ग्रीष्मावकाश के लिए बन्द हो रहा है। स्कूल की ओर से भ्रमण हेतु विद्यार्थियों को 16 मई से 23 मई तक नैनीताल ले जाया जा रहा है। आधा खर्च विद्यालय वहन करेगा। शेष खर्च के रूप में प्रत्येक विद्यार्थी को एक हज़ार रुपये जमा कराने हैं। मैं भी इसमें भाग लेना चाहता हूँ। आपसे प्रार्थना है कि मुझे अपनी अनुमति प्रदान करें तथा खर्च के लिए एक हज़ार रुपये भिजवाने की कृपा करें। मैं 25 मई तक घर पहुँच जाऊँगा। पूज्य माताजी को सादर प्रणाम एवं निक्की को प्यार।

आपका प्रिय पुत्र
राहुल

2. बधाई-पत्र

5, सुरेखापुरम
मिर्जापुर (उ०प्र०)
5 दिसम्बर, 2019

प्रिय लवली,

कल मम्मी जी का फोन आया था। उन्होंने यह खुशखबरी दी कि जिले की चित्रकला-स्पर्धा में तुम्हें प्रथम पुरस्कार मिला है। इस सफलता के लिए मेरी ओर से तुम्हें बहुत-बहुत बधाइयाँ। यह चित्रकला के प्रति तुम्हारे लगाव और परिश्रम का ही सुन्दर परिणाम है।

तुम्हारी आवाज़ भी बहुत मधुर है। तुम्हें चित्रकला के साथ-साथ संगीत में भी दिलचस्पी लेनी चाहिए। भगवान करे, हर साल तुम्हें इसी प्रकार पुरस्कार मिलते रहें।

तुम्हारा भाई
युवराज

3. अस्वस्थ होने के कारण विद्यालय से अवकाश का प्रार्थना-पत्र

सेवा में,

प्रधानाचार्या
दिल्ली पब्लिक स्कूल,
बागपत रोड, मेरठ।

महोदया,

सविनय निवेदन यह है कि मुझे नेत्र-रोग (आई-फ्लू) हो गया है। मेरी आँखें कल से लाल हैं। इस रोग के फैलने का भय रहता है। इसलिए मैं विद्यालय न आ सकूँगी। कृपया मुझे 12 फरवरी से 15 फरवरी तक अवकाश देने की कृपा करें।

सधन्यवाद।

आपकी आज्ञाकारी शिष्या
मानसी बंसल
कक्षा-6 (ए),
दिनांक : 12 फरवरी, 2019

4. स्थानान्तरण प्रमाण-पत्र के लिए प्रार्थना-पत्र

सेवा में,

श्रीमान् प्रधानाचार्य महोदय,
डी०ए०वी० पब्लिक स्कूल
डी०एल० रोड, देहरादून (उत्तराखण्ड)

महोदय,

निवेदन है कि मैं आपके विद्यालय की छठी कक्षा का छात्र हूँ। मेरे पिता जी का यहाँ से नैनीताल स्थानान्तरण हो गया है। मैं भी परिवार के साथ वहाँ जा रहा हूँ। वहाँ विद्यालय में प्रवेश लेने के लिए स्थानान्तरण प्रमाण-पत्र (टी०सी०) तथा चरित्र प्रमाण-पत्र की आवश्यकता होगी।

मैं कक्षा में सदैव प्रथम आता रहा हूँ। मैंने सांस्कृतिक और खेलकूद प्रतियोगिताओं में भाग लेकर कई पारितोषिक प्राप्त किए हैं। कृपया उनकी प्रविष्टियाँ चरित्र प्रमाण-पत्र में कराने का कष्ट करें।

आपका आज्ञाकारी शिष्य

सुलभ शाह
कक्षा—6 (बी)
दिनांक : 7 जुलाई, 2019

5. शिकायती-पत्र

आपके यहाँ पानी की सप्लाई नियमित नहीं है तथा पानी मटमैला और बहुत खारा आता है। पत्र लिखकर इसकी शिकायत जल-निगम को कीजिए।

सेवा में,

अध्यक्ष

जल निगम,

विकासनगर, लखनऊ।

महोदय,

निवेदन है कि विकासनगर क्षेत्र में पिछले एक सप्ताह से पानी की सप्लाई नियमित रूप से नहीं हो रही है। दिनभर में केवल एक घण्टे के लिए ही पानी आता है और उसका भी कोई निश्चित समय नहीं है। पानी खारा और मटमैला आता है। लगता है कहीं सीवर का पानी इसमें मिल रहा है। इससे त्वचा और पेट सम्बन्धी रोग बढ़ रहे हैं। अत: आपसे प्रार्थना है कि इस क्षेत्र में स्वच्छ पानी की समुचित व्यवस्था कराएँ।

भवदीय,

सुशील सिंघल

(संयोजक)

विकासनगर कल्याण समिति, लखनऊ

दिनांक : ____/_____/_____

1. पत्र-लेखन किसे कहते हैं? पत्र मुख्यत: कितने प्रकार के होते हैं?
2. पत्र के प्रमुख अंग कौन-कौन से हैं?
3. अपने पिताजी को एक पत्र लिखकर बताइए कि आपने जिला स्तर पर हुई खेलकूद प्रतियोगिता में अपने विद्यालय को किस प्रकार विजय दिलाई?
4. अपनी बहन के विवाह के अवसर पर चार दिन के अवकाश के लिए अपने प्रधानाचार्य महोदय को प्रार्थना-पत्र लिखिए।
5. अपने मित्र को उसके जन्मदिन की शुभकामनाएँ भेजते हुए पत्र लिखिए।
6. अपने नगर की विद्युत-व्यवस्था में निरन्तर होने वाली गड़बड़ी की ओर ध्यान आकृष्ट करने तथा उसमें सुधार लाने के लिए मुख्य विद्युत अभियन्ता को शिकायती-पत्र लिखिए।

25

निबन्ध-लेखन
Essay Writing

'निबन्ध' शब्द दो शब्दों के मेल से बना है—'निः + बन्ध'। इसका शाब्दिक अर्थ होता है—अच्छी तरह बँधा हुआ। जब किसी विषय पर विचारों को व्यवस्थित रूप से व्यक्त किया जाता है तो उसे निबन्ध कहते हैं।

अच्छा निबन्ध लिखने के लिए निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए—

- जिस विषय पर निबन्ध लिखना हो, उससे सम्बन्धित सामग्री या जानकारी एकत्र कर लीजिए।
- इस सामग्री को तीन भागों में विभक्त कीजिए—प्रस्तावना, विस्तार और उपसंहार।
  1. प्रस्तावना में निबन्ध की भूमिका लिखी जाती है। इसमें लेखक यह बताता है कि वह विषय के बारे में क्या लिखना चाहता है और उसे कैसे लिखेगा?
  2. विस्तार में लेखक उस विषय पर अपने विचार सविस्तार और मनोरंजक शैली में प्रस्तुत करता है।
  3. उपसंहार में लेखक आरम्भ से अन्त तक के विषय का सार लिखने के उपरान्त अपना मत तथा उसके पक्ष और विपक्ष में विचार व्यक्त करता है।
- निबन्ध की रूपरेखा बनाकर उसे क्रमबद्ध कर लेना चाहिए। इससे निबन्ध की विषय-वस्तु शृंखलाबद्ध और सन्तुलित रहती है।
- निबन्ध का आरम्भ किसी काव्य पंक्ति, उद्धरण, सूक्ति या घटना से किया जाता है या सीधे विषय पर आकर किया जा सकता है। निबन्ध के मध्य भाग में विषय से सम्बन्धित सभी बातों का उल्लेख कीजिए।
- निबन्ध के अन्त में निबन्ध का सार, निष्कर्ष, सन्देश या विषय पर सम्मति प्रकट कीजिए।

1. हमारा राष्ट्रीय पक्षी : मोर

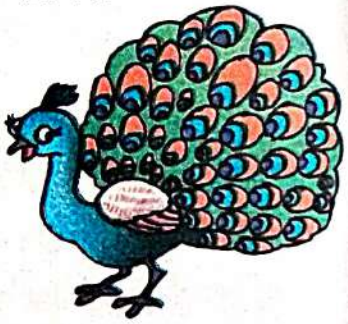

प्रस्तावना—वृक्षों के नवीन कोमल पत्ते, आम्र-मंजरी, रंग-बिरंगे सुगन्धित फूल प्राकृतिक सौन्दर्य के प्रतीक हैं। विविध रंगों के पक्षी, उनकी मधुर ध्वनि सर्वत्र प्रकृति का शृंगार करती दिखाई पड़ती है। प्रकृति की सुन्दरता और पक्षियों के कलरव का यह संयोग बड़ा मनोहर और मन्त्र-मुग्ध करने वाला होता है।

शारीरिक संरचना—मोर पक्षियों में सुन्दरतम पक्षी है। इसकी नीली गर्दन, सिर पर सुन्दर कलगी, पंखों पर चन्द्राकृतियाँ इसके सौन्दर्य को बढ़ाती हैं। जन्तु-जगत में ऐसा सुन्दर पक्षी दूसरा नहीं। इसलिए इसे हमारे देश भारत का राष्ट्रीय पक्षी होने का गौरव प्राप्त हुआ है।

साहित्यिक महत्त्व—जब आकाश में काली घटाएँ मँडराती हैं और बादल गरजते हैं तब मोर की आवाज़ मुखर हो उठती है। वर्षा होने के अनन्तर मोर मस्ती में भरकर पंखों को फैलाकर थिरक-थिरककर नृत्य करता है। इसका नाच मन को मुग्ध कर देता है, चित्त को चुरा लेता है। भारतीय नृत्यकला में मयूर-नृत्य का विशेष स्थान है। साहित्यिक दुनिया में मोर को बहुत सम्मानित स्थान मिला है। कालिदास के प्रसिद्ध ग्रन्थ 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' में मोर विदा होती हुई शकुन्तला के आँचल को खींचकर अपने सहज स्नेह को प्रकट करते हैं। इसके सौन्दर्य को देखकर ही भगवान कार्तिकेय ने इसे अपना वाहन होने का गौरव प्रदान किया है।

किसानों का मित्र—मोर किसानों का परम मित्र है। यह खेत के विषैले हानिकारक कीड़ों को खाकर फसल का संरक्षण करता है। यह महान् विषधर सर्पों को भी मारकर खा जाता है। इसलिए इसे 'अहिभक्षी' भी कहते हैं।

उपसंहार—मोर तथा कुछ अन्य पक्षी प्रकृति में प्रदूषण रोकने और पर्यावरण को सुन्दर बनाए रखने में सहायक होते हैं। आजकल कुछ लोग थोड़े से लाभ के लिए मोर का शिकार करते हैं। कुछ अन्य प्राकृतिक कारणों से भी मोर की संख्या दिनोंदिन कम होती जा रही है। सरकार ने कानून बनाकर राष्ट्रीय पक्षी मोर को संरक्षित घोषित किया है। इसका शिकार करने वाले व्यक्ति को दण्ड दिया जाता है। आइए, हम भी मोर का संरक्षण करने का संकल्प लें।

2. हमारा देश—भारत

प्राकृतिक सौन्दर्य—भारत-भूमि अत्यन्त शस्यश्यामला है। प्रकृति ने अपने हाथों से इसे सँवारा है। हिमालय की ऊँची चोटियाँ, सागर की अनन्त लहरें, हरे-भरे प्राकृतिक दृश्य, सम्पूर्ण भारत की जलवायु की विविधता इसके सुरम्य वैभव की प्रतीक हैं। यहाँ अनेक तीर्थस्थल, ऐतिहासिक स्मारक तथा औद्योगिक केन्द्र विद्यमान हैं।

सांस्कृतिक सम्पन्नता—भारत की संस्कृति अत्यन्त उदार है। प्राचीनतम साहित्य वेदों का लेखन यहीं हुआ। उपनिषदों, पुराणों एवं स्मृतियों की ज्ञानधारा यहीं प्रवाहित हुई। हमारी 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की धारणा तो अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर स्वीकृत हो चुकी है। भारतीय सभ्यता और संस्कृति के कारण ही हमारा देश विश्वगुरु कहलाता है।

अनेकता में एकता—अनेकता में एकता भारत की पहचान है। यहाँ विभिन्न धर्मों, सम्प्रदायों, भाषाओं एवं क्षेत्रों के लोग निवास करते हैं। हिमालय से लेकर अण्डमान तक फैली विविधता के बाद भी भारतीयों में अद्‌भुत समन्वय की भावना विद्यमान है। सभी लोग परस्पर मिल-जुलकर ईद, होली, दीवाली, क्रिसमस आदि त्योहार मनाते हैं।

विभिन्न क्षेत्रों में अभूतपूर्व प्रगति—लगभग दो सौ वर्षों की ब्रिटिश पराधीनता से मुक्ति पाकर भारत 15 अगस्त, 1947 को स्वतन्त्र हुआ। तब से आज तक भारत ने आर्थिक, सामाजिक, वैज्ञानिक, औद्योगिक आदि क्षेत्रों में अभूतपूर्व उपलब्धियाँ प्राप्त की हैं। विश्व के सात बड़े औद्योगिक देशों में भारत की गणना होती है। चिकित्सा, परमाणु तथा अन्तरिक्ष विज्ञान की भारतीय सफलताओं पर प्रत्येक भारतीय गर्व कर सकता है। इक्कीसवीं शताब्दी में भी यह प्रगति जारी है।

उपसंहार—आज भारत में कई समस्याएँ जन्म ले चुकी हैं। यदि हम सब अपने-अपने स्वार्थ त्याग कर देशहित का संकल्प लें तो भारत पुनः विश्व का सिरमौर देश बन सकेगा। भारत निरन्तर प्रगति करता जा रहा है। यह विश्व-शक्ति के रूप में उभर रहा है। ऐसा सुन्दर देश विश्व में और कोई नहीं है।

सचमुच हमारा देश महान् है। इसकी कई विशेषताएँ इसे विश्व-पूज्य देश की उपाधि प्रदान करने में सहायक हैं। कविवर जयशंकर प्रसाद की ये पंक्तियाँ हमारे देश भारत का सजीव चित्र प्रस्तुत करती हैं—

अरुण यह मधुमय देश हमारा
जहाँ पहुँच अनजान क्षितिज को मिलता एक सहारा।

3. मेरा प्रिय खेल (क्रिकेट)

प्रस्तावना—यदि मनुष्य का शरीर स्वस्थ नहीं है तो उसे अन्य सभी प्रकार की सुख-सुविधाएँ होते हुए भी सुखी नहीं कहा जा सकता। किसी ने ठीक ही कहा है—'पहला सुख नीरोगी काया'। शरीर को नीरोग रखने में खेल-कूद का बहुत महत्त्व है इसलिए शिक्षा में खेल-कूद को महत्त्वपूर्ण स्थान दिया गया है। खेल केवल अच्छे स्वास्थ्य प्राप्ति का ही साधन

मात्र नहीं अपितु मनोरंजन का भी साधन है। आज संसार में अनेक प्रकार के खेल प्रचलित हैं। इनमें कबड्डी, हॉकी, फुटबॉल, क्रिकेट, बॉस्केटबॉल, टेनिस, बैडमिंटन आदि प्रमुख हैं। सभी को अपनी-अपनी रुचि के अनुसार इनमें से कोई-न-कोई खेल पसन्द होता है। मुझे क्रिकेट का खेल सर्वाधिक पसन्द है।

क्रिकेट की लोकप्रियता—आधुनिक युग में क्रिकेट को खेलों का राजा माना जाता है। क्रिकेट के खेल की लोकप्रियता का अनुमान इसी बात को देखकर लगाया जा सकता है कि जब भी क्रिकेट का कोई मैच होता है तो जगह-जगह इसकी कमेन्ट्री सुनने या टी०वी० पर इसका सीधा प्रसारण देखने वालों की भीड़ उमड़ पड़ती है।

खेल के नियम—क्रिकेट समूह में खेला जाता है। क्रिकेट के खेल में दो टीमें होती हैं। प्रत्येक टीम में ग्यारह-ग्यारह खिलाड़ी होते हैं। एक विशाल मैदान के बीच में बाईस गज की पिच होती है जिसके दोनों छोरों पर तीन-तीन स्टम्प गाड़े जाते हैं। एक छोर पर खड़े बल्लेबाज़ को दूसरे छोर से गेंदबाजी की जाती है। सबसे पहले टॉस होता है। जो टीम टॉस जीतती है उसका कप्तान यह निर्णय करता है कि उसकी टीम पहले गेंदबाज़ी करेगी या बल्लेबाज़ी। एक पारी में दस बल्लेबाज़ आउट होने से पहले जितने रन बनाते हैं, वह टीम का स्कोर कहा जाता है। ज्यादा स्कोर बनाने वाली टीम विजेता घोषित होती है।

क्रिकेट के विविध रूप—पाँच दिवसीय टेस्ट-मैच के स्थान पर अब एक दिवसीय मैच अधिक लोकप्रिय हो गए हैं जो रात में विद्युत के तीव्र प्रकाश में भी खेले जाते हैं। आज तो 20-20 मैचों ने क्रिकेट को और भी रोमांचक बना दिया है। क्रिकेट के मैच देखने के लिए लोगों की भीड़ उमड़ पड़ती है। 'बल्ले' और 'गेंद' का संघर्ष अत्यन्त रोचक होता है। कहा जाता है कि क्रिकेट अनिश्चितताओं का खेल है, इसमें कभी-भी कुछ भी हो सकता है। एक जीतती हुई टीम अचानक हार के कगार पर पहुँच जाती है तो हारने वाली टीम मैच जीत जाती है।

बल्लेबाज़ द्वारा चौका-छक्का लगाते ही पूरा स्टेडियम तालियों की गड़गड़ाहट से गूँज उठता है। इसी तरह, सुन्दर कैच लेने पर या किसी खिलाड़ी को आउट कर देने पर क्षेत्ररक्षक/गेंदबाज का स्वागत भी तालियों से किया जाता है।

उपसंहार—उतार-चढ़ाव का यह खेल अन्य खेलों से अलग है। इसीलिए मुझे बहुत प्रिय है। मेरी इच्छा है कि बड़ा होकर मैं क्रिकेट का खिलाड़ी बनूँ, भारतीय टीम में खेलूँ और देश का नाम रोशन करूँ।

4. रंग-बिरंगी होली

प्रस्तावना—रंगों का त्योहार होली मस्ती और उमंग से भरा हुआ है। यह त्योहार सारे भारत में प्रसन्नता, उल्लास और आनन्द के साथ मनाया जाता है।

मनाने का कारण—इस त्योहार के साथ एक पौराणिक कथा जुड़ी हुई है। प्राचीनकाल में हिरण्यकशिपु नाम का एक राजा था। वह परम नास्तिक और ईश्वर द्रोही था। उसने अपनी प्रजा को आज्ञा दे रखी थी कि उसके राज्य में कोई भी व्यक्ति ईश्वर का नाम नहीं लेगा। अगर कोई ऐसा करेगा तो उसे कठोर दण्ड दिया जाएगा। हिरण्यकशिपु का एक पुत्र था—प्रह्लाद। वह परम ईश्वर-भक्त था। हिरण्यकशिपु ने उसे अनेक उपायों द्वारा ईश्वर से विमुख करने की कोशिश की लेकिन प्रह्लाद न माना। तब हिरण्यकशिपु ने उसे कठोर दण्ड दिया, लेकिन प्रह्लाद का कुछ नहीं बिगड़ा। हिरण्यकशिपु की बहन होलिका को यह वरदान प्राप्त था कि उसे आग नहीं जला सकती। हिरण्यकशिपु ने होलिका की मदद से प्रह्लाद का अन्त करने की सोच ली। भाई की आज्ञा पाकर होलिका प्रह्लाद को गोद में लेकर चिता में बैठ गई। आग लगते

ही चिता धू-धू कर जल उठी। आग में प्रह्लाद का तो कुछ नहीं बिगड़ा, लेकिन होलिका जलकर भस्म हो गई। तभी से लोग होली के त्योहार को मनाते आ रहे हैं।

मनाने का समय तथा ढंग—होली का त्योहार फाल्गुन मास की पूर्णिमा को मनाया जाता है। उस समय तक शरद ऋतु का प्रकोप समाप्त हो जाता है। ऋतुराज वसन्त के आगमन से दिशाएँ महक उठती हैं। खेतों में सरसों के पीले-पीले फूल खिल उठते हैं। लोगों के तन-मन मस्ती में झूम उठते हैं।

पूर्णिमा के दिन स्त्रियाँ होली की पूजा करती हैं। रात को लोग होली को जलाते हैं। जलती हुई आग के चारों ओर खड़े होकर लोग हर्ष में मग्न होकर नाचते-गाते हैं। इस आग में नए अनाज की बालों को भूनकर खाना शुभ माना जाता है।

अगले दिन रंगों का त्योहार मनाया जाता है। लोग सुबह से ही एक-दूसरे पर रंग डालना, गुलाल मलना और गले मिलना शुरू कर देते हैं। दिनभर होली मनाने वालों की टोलियाँ गलियों में घूमती रहती हैं। लोग अमीर-गरीब का भेदभाव भुलाकर एक-दूसरे के गले मिलते हैं और होली की बधाई देते हैं। वे एक-दूसरे को मिठाई खिलाते हैं। 'गुझिया' होली की प्रसिद्ध मिठाई है। दोपहर के बाद रंगों की वर्षा थम जाती है और लोग मल-मलकर रंगों को छुड़ाने का प्रयास करते हैं। स्नान करने के बाद साफ़ कपड़े पहनकर वे अपने मित्रों और परिचितों से मिलने निकल जाते हैं।

उपसंहार—होली प्रेम, मस्ती और उल्लास का त्योहार है। यह पाप पर पुण्य की विजय का प्रतीक है। हमें इसे एक स्वच्छ, पवित्र और सामाजिक एकता के पर्व के रूप में मनाना चाहिए।

5. विद्यार्थी और अनुशासन

प्रस्तावना—विद्यार्थी और अनुशासन का गहरा सम्बन्ध है। अनुशासन का पालन किए बिना विद्या ग्रहण करने का काम नहीं हो सकता। अनुशासित व्यक्ति ही सच्चा विद्यार्थी हो सकता है।

लगभग पाँच वर्ष की अवस्था से विद्यार्थी जीवन आरम्भ हो जाता है और बीस-इक्कीस वर्ष की अवस्था तक चलता है। इस अवधि में बालक के कोमल मन पर जो प्रभाव अंकित हो जाते हैं, वे जीवनभर बने रहते हैं। वास्तव में यही वह समय है जो भावी जीवन का मार्ग निर्धारित करता है। जो बालक अनुशासन का पालन करते हुए विद्या ग्रहण करता है, वह अपना जीवन लक्ष्य पाने में सफल रहता है।

अनुशासन का अर्थ और महत्त्व—अनुशासन का अर्थ है—नियमों का पालन करना। अनुशासन दो प्रकार का होता है—आन्तरिक और बाहरी। जब हम अपने आप पर नियन्त्रण रखते हुए अपनी इच्छा से नियमों का पालन करते हैं तो उसे आन्तरिक अनुशासन कहते हैं। लेकिन जब दण्ड के भय के कारण हमें जबरदस्ती अनुशासन में रहना पड़ता है तो इसे बाहरी अनुशासन कहते हैं। आन्तरिक अनुशासन ही सच्चा अनुशासन होता है। बाहरी अनुशासन तो दण्ड का भय दूर होते ही रेत की दीवार की तरह भरभराकर गिर पड़ता है लेकिन आन्तरिक अनुशासन मजबूत चट्टान की तरह अडिग रहता है। आन्तरिक अनुशासन को आत्म-अनुशासन भी कहते हैं। आत्म-अनुशासन ही श्रेष्ठ है।

विद्यार्थी और अनुशासन—विद्यार्थी को अपने अन्दर आत्म-अनुशासन को ही विकसित करना चाहिए। जिस विद्यार्थी में आत्म-अनुशासन का विकास हो जाता है, वह एक सफल जीवन व्यतीत करता है। सभी लोग उसका आदर करते हैं और वह सबका विश्वासपात्र होता है। विद्यार्थी को अनुशासन की शिक्षा देने के लिए यह आवश्यक है कि माता-पिता और गुरुजन स्वयं अनुशासित हों। वे बालक से ऐसा व्यवहार करें कि वह यह समझे कि उससे जो कहा जाता है, वह उसके हित में है। इससे वह उस कार्य को चाव से करेगा तथा उसके अन्दर बड़ों की आज्ञा-पालन का भाव जागेगा। यही अनुशासन की पहली सीढ़ी है।

उपसंहार—गांधीजी ने कहा है—"अनुशासन अव्यवस्था के लिए वही काम करता है जो तूफान और बाढ़ के समय

किला और जहाज।'' वास्तव में अनुशासित विद्यार्थी व्यवस्था बनाता भी है और उसका पालन भी करता है। वह लड़ाई-झगड़ों, शर्मनाक बातों और बुरे लोगों से दूर रहता है। वह अपने लक्ष्य प्राप्ति के लिए सदैव सजग रहता है। वह अपना समय नष्ट नहीं करता। वह अपने परिवार की प्रतिष्ठा का ध्यान रखता है और कभी कोई ऐसा काम नहीं करता जिससे उसके माता-पिता को लज्जित होना पड़े।

6. मेरे जीवन की अभिलाषा

प्रत्येक मनुष्य के मन में अनेक इच्छाएँ उमड़ती रहती हैं। इन्हीं इच्छाओं के कारण प्रत्येक व्यक्ति जीवन में अपने लक्ष्य के बारे में कुछ-न-कुछ निर्णय करता है। हर व्यक्ति चाहता है कि वह अपने जीवन में कुछ-न-कुछ ऐसा कार्य करे या ऐसा बने जिससे उसका सम्मान हो, उसके परिवार का नाम हो तथा उसके जीवन के लक्ष्य की प्राप्ति भी हो। मैंने जब भी अपने जीवन के लक्ष्य के बारे में सोचा, अनेक प्रकार के विकल्प मेरे मन में आए। इन सब विकल्पों पर विचार करने के बाद मैंने अध्यापक बनने का ही निश्चय किया है।

मैं यह भली-भाँति जानता हूँ कि अध्यापन कार्य में धन की अधिक प्राप्ति नहीं होती, परन्तु मुझे लगा कि अध्यापक ही राष्ट्र का निर्माता होता है। अध्यापक का कार्य पवित्र कार्य है, इसमें राजनीतिज्ञों की भाँति छल-कपट, व्यापारियों की भाँति धन का लोभ-लालच आदि नहीं है। आज देश में जिस प्रकार की अनुशासनहीनता, भ्रष्टाचार, बेईमानी तथा भेदभाव का बोलबाला है, उसका एकमात्र कारण उत्तम शिक्षा का अभाव ही है।

यदि मैं अपने उद्देश्य में सफल हो गया, तो मैं अपने जीवन को धन्य समझूँगा। मैं यदि अध्यापक बनने में सफल हुआ, तो मैं गुरु-शिष्य के पवित्र सम्बन्धों को पुन: व्यवहार में लाने का प्रयास करूँगा। मेरे विचार में गुरु के बिना ईश्वर के दर्शन भी नहीं हो सकते। गुरु ही अज्ञान से ज्ञान की ओर तथा अन्धकार से प्रकाश की ओर ले जाता है।

मेरे माता-पिता चाहेंगे कि मैं कोई ऐसा व्यवसाय चुनूँ, जिससे वर्तमान आर्थिक चुनौतियों का सामना कर पाऊँ तथा समाज में अधिक प्रतिष्ठा प्राप्त हो। परन्तु मेरी ऐसी कोई अभिलाषा नहीं है। मैं तो जीवन में ऐसा अध्यापक बनना चाहता हूँ जो समाज-सेवी हो, कर्त्तव्यनिष्ठ हो तथा जो राष्ट्र के कर्णधारों को सही दिशा प्रदान करे।

अध्यापक ही छात्र-छात्राओं में उत्तम चरित्र का निर्माण कर सकते हैं, वे ही उनमें कर्त्तव्य की भावना भर सकते हैं। केवल अध्यापक ही छात्र-छात्राओं में भाईचारे और प्रेम के बीज अंकुरित कर सकते हैं। इन्हीं कारणों से मैंने जीवन में एक अध्यापक बनने का सपना देखा है। मेरी भगवान से यही प्रार्थना है कि मैं अपने लक्ष्य में सफल होऊँ। हे प्रभु! मुझे इतना साहस दो कि मैं धन आदि के लोभ को तिलांजलि देकर सेवा-भाव से अध्यापक के रूप में राष्ट्र के लिए अपना जीवन समर्पित कर सकूँ।

कुछ करके सीखें

निम्नलिखित विषयों पर निबन्ध-लेखन का अभ्यास कीजिए—

(क) किसी सामाजिक त्योहार का वर्णन
(ख) चिड़ियाघर
(ग) किसी पर्वतीय प्रदेश की यात्रा
(घ) कम्प्यूटर का महत्त्व
(ङ) मैं बड़ा होकर क्या बनूँगा / बनूँ
(च) विद्यार्थी जीवन में खेल का महत्त्व
(छ) ताजमहल

अपठित बोध
Unseen Passages

'अपठित' शब्द दो शब्दों के मेल से बना है—अ + पठित, जिसका सीधा-सादा अर्थ है—जो पढ़ा हुआ न हो अर्थात् जो निर्धारित पाठ्य-पुस्तकों में न आया हो। अपठित गद्यांश/पद्यांश को समझना और उन पर आधारित प्रश्नों के उत्तर देने से बुद्धि का विकास होता है। अपठित पर आधारित प्रश्न लघु उत्तरीय अथवा बहुविकल्पीय हो सकते हैं।

अपठित गद्यांश

परीक्षा में अपठित गद्यांश दिए जाते हैं जिनके नीचे कुछ प्रश्न दिए होते हैं। विद्यार्थियों को इन प्रश्नों के उत्तर गद्यांश को पढ़कर देने होते हैं। कई बार अपठित गद्यांश का शीर्षक भी पूछा जाता है।

अपठित गद्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर देते समय निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए—

- दिए गए गद्यांश को दो-तीन बार ध्यानपूर्वक पढ़ना चाहिए।
- पूछे गए प्रश्नों के उत्तर गद्यांश में ढूँढ़ने का प्रयास करना चाहिए।
- प्रश्नों के उत्तर सरल भाषा में तथा संक्षिप्त होने चाहिए।
- उत्तरों में मुहावरे, लोकोक्तियों आदि का प्रयोग नहीं करना चाहिए।
- यदि 'शीर्षक' भी पूछा गया हो, तो वह कम-से-कम शब्दों का तथा गद्यांश की विषय-वस्तु तथा गद्यांश के मूलभाव के अनुरूप होना चाहिए। शीर्षक गद्यांश की विषय-वस्तु की ओर संकेत करने वाला होना चाहिए।

नीचे अपठित गद्यांश उत्तर सहित दिए गए हैं। इन्हें ध्यानपूर्वक पढ़िए—

1. सफलता के मन्दिर में जाने के लिए कोई खुला द्वार नहीं है। जो उस मन्दिर में प्रवेश करना चाहता है, वह स्वयं ही अपने लिए द्वार बनाता है। जब वह अन्दर प्रवेश कर लेता है तो द्वार स्वयं बन्द हो जाता है। जीवन का यह भेद है, जिसे सृष्टिकर्ता के सिवा कोई नहीं जानता। कुशाग्र बुद्धि सदा दीनता में उत्पन्न होती है और कष्टों का उसे सामना करना पड़ता है। संसार का अनुभव यह कहता है कि कुशाग्र बुद्धि वाले तड़कते-भड़कते चमकीले प्रासादों में, जहाँ कोई कष्ट न हो, पैदा नहीं होते। यदि कहीं ऐसा हुआ भी है तो उन्हें ये सारी सुख-सुविधाएँ त्यागनी पड़ी हैं। भगवान श्री राम और महात्मा बुद्ध का जीवन इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है। जितने धर्माचार्य, साहित्यकार, विद्वान, वैज्ञानिक, आविष्कारक, महान व्यक्ति हुए हैं, उन्होंने अपने जीवन में बहुत संघर्ष किया है।

सही विकल्प के सामने सही (✓) का चिह्न लगाइए—

(क) सफलता के मन्दिर में जाने के लिए द्वार कौन बनाता है?

(i) मनुष्य स्वयं (✓) (ii) मित्र ( ) (iii) साथी ( ) (iv) घर के बुजुर्ग ( )

(ख) निम्नलिखित में कौन-सा शब्द विशेषण नहीं है?

(i) कुशाग्र ( ) (ii) चमकीले ( ) (iii) बुद्धि (✓) (iv) सफल ( )

(ग) इनमें से कौन-सा शब्द 'प्रति' उपसर्ग का नहीं है?

(i) प्रमाण ✓ (ii) प्रत्यक्ष (iii) प्रतिदिन (iv) प्रत्येक

(घ) 'नई-नई खोज करने वाला' के लिए क्या शब्द आएगा?

(i) वैज्ञानिक (ii) सामाजिक (iii) आविष्कारक ✓ (iv) विद्याविशारद

2. मनुष्य सामाजिक प्राणी है, क्योंकि समाज के बिना उसका जीवन अधूरा है। समाज में रहते हुए उसे अपने सुख-दु:ख को कहने-सुनने तथा विचारों का आदान-प्रदान करने एवं कार्यों में सहयोग लेने के लिए दूसरों की आवश्यकता पड़ती है। इसलिए उसे एक ऐसे व्यक्ति की आवश्यकता पड़ती है जिससे वह दिल खोलकर अपनी सब बातें कर सके। ऐसा व्यक्ति ही 'मित्र' कहलाता है। मित्र का चुनाव सोच-समझकर करना चाहिए। कुछ लोग किसी की बाहरी चमक-दमक, बोल-चाल तथा आर्थिक स्थिति आदि को देखकर उससे मित्रता कर लेते हैं। इस प्रकार की मित्रता अधिक दिनों तक नहीं चलती। सच्चे मित्र का चयन करने के लिए उसके व्यवहार, आचरण तथा चरित्र पर ध्यान देना आवश्यक होता है। सच्चा मित्र विश्वासपात्र, दूसरों की भावनाओं को समझने वाला, विनम्र, सदाचारी तथा चरित्रवान होना चाहिए।

(क) मनुष्य को सामाजिक प्राणी क्यों कहा गया है?

(ख) व्यक्ति को 'मित्र' की आवश्यकता क्यों पड़ती है?

(ग) किस प्रकार की मित्रता अधिक दिनों तक नहीं चलती?

(घ) सच्चे मित्र में कौन-कौन से गुण होने चाहिए?

उत्तर—(क) समाज के बिना व्यक्ति का काम नहीं चल सकता, क्योंकि प्रत्येक कार्य में उसे दूसरों की सहायता की आवश्यकता पड़ती है।

(ख) समाज में रहते हुए व्यक्ति को एक ऐसे मित्र की आवश्यकता पड़ती है जिससे वह अपनी हर बात दिल खोल कर कह सके।

(ग) जो मित्रता बाहरी चमक-दमक, बोल-चाल या आर्थिक स्थिति को ध्यान में रखकर की जाती है, वह प्राय: अधिक दिनों तक नहीं चलती।

(घ) सच्चा मित्र विश्वासपात्र, चरित्रवान, विनम्र तथा दूसरों की भावनाओं को समझने वाला होना चाहिए।

अपठित पद्यांश

अपठित गद्यांशों की तरह अपठित पद्यांश भी परीक्षा में पूछे जाते हैं। कोई काव्यांश देकर परीक्षार्थियों से उस पर आधारित प्रश्नों के उत्तर लिखने को कहा जाता है।

काव्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर लिखने के लिए निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए—

- दिए गए काव्यांश को एक-दो बार ध्यानपूर्वक पढ़ना चाहिए।
- पूछे गए प्रश्नों के उत्तर काव्यांश में ढूँढ़ने का प्रयास करना चाहिए।
- प्रश्नों के उत्तर काव्यांश में प्रयुक्त शब्दावली की जगह अपनी भाषा में देने चाहिए।
- प्रश्नों के उत्तर केवल काव्यांश पर आधारित हों। उनमें अपनी ओर से कोई नई बात नहीं जोड़नी चाहिए।

नीचे अपठित पद्यांश उत्तर सहित दिए गए हैं। इन्हें ध्यानपूर्वक पढ़िए—

1. हारा हूँ सौ बार
गुनाहों से लड़-लड़ कर,
लेकिन बारम्बार लड़ा हूँ,
मैं उठ-उठ कर।
इससे मेरा हर गुनाह भी मुझसे हारा,
मैंने अपने जीवन को इस तरह उबारा।
डूबा हूँ हर रोज,
किनारे तक आ-आ कर,
लेकिन मैं हर रोज,
उगा हूँ जैसे दिनकर,
इससे मेरी असफलता भी मुझसे हारी,
मैंने अपनी सुन्दरता इस तरह सँवारी।

उपर्युक्त पद्यांश के आधार पर निम्न प्रश्नों के उत्तर के लिए सही विकल्प छाँटिए—

(क) 'दिनकर' शब्द का क्या अर्थ है?
(i) चन्द्रमा (ii) सूर्य ✓ (iii) रात (iv) असफलता

(ख) गुनाह किससे हारा है?
(i) कवि से (ii) संघर्ष से ✓ (iii) जीवन से (iv) निराशा से

(ग) 'सुन्दरता' शब्द में प्रत्यय है—
(i) ता (ii) सु ✓ (iii) सुन्दर (iv) रता

2. मेरे देश ने सब देशों को, दिया ज्ञान का था उपदेश।
जियो और जीने दो सबको, सब धर्मों का यह सन्देश।
कभी किसी का जी न दुखाओ, देखो सबमें वह अखिलेश।
इस धरती को स्वर्ग बनाओ, मिट जाएँगे सभी कलेश।
सभी सुखी हों, सब निरोग हों, है यह अपनी बात विशेष।
मेल-जोल बढ़ता ही जाए, दु:ख-दरिद्रता रहे न शेष।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए—

(क) उपर्युक्त पंक्तियों में कवि कौन-से देश के बारे में चर्चा कर रहा है?
(ख) सब धर्मों का क्या सन्देश है?
(ग) इस धरती को कैसे स्वर्ग बनाया जा सकता है?
(घ) अपनी कौन-सी बात विशेष है?

उत्तर— (क) उपर्युक्त पंक्तियों में कवि भारतवर्ष की चर्चा कर रहा है।
(ख) सब धर्मों का सन्देश है कि जियो और जीने दो।
(ग) यदि सभी प्रकार के दु:ख और क्लेश मिट जाएँ तो इस धरती को स्वर्ग बनाया जा सकता है।
(घ) सभी सुखी हों तथा स्वस्थ हों, किसी को किसी प्रकार का कष्ट न हो—अपनी यही बात विशेष है।

1. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर उस पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए—

आधुनिक युग में धन को अधिक महत्त्व दिया जाने लगा है। व्यक्ति उचित-अनुचित की चिन्ता न करके धन कमाने की दौड़ में लिप्त हो गया है। धन जीवन के लिए आवश्यक होता है। खान-पान, रहन-सहन, वस्त्र, मकान आदि के लिए धन की आवश्यकता होती है। इनके लिए धन को उतना ही महत्त्व देना चाहिए जितना आवश्यक है।

यह जीवन केवल धन कमाने और उसका संग्रह करने के लिए नहीं बना है। जीवन में सबसे महत्त्वपूर्ण होता है, सम्मानपूर्वक जीना। छल-कपट, झूठ, भ्रष्टाचार, रिश्वतखोरी और बेईमानी से धन का अम्बार लगाने वालों का सम्मान नहीं होता। ऐसे व्यक्ति मान-सम्मान की चिन्ता नहीं करते। उनकी आँखों पर धन की पट्टी बँधी रहती है। ईमानदारी से कार्य करके जीवनयापन करने वाले का सभी सम्मान करते हैं। बेईमानी से कमाया गया धन बुरा परिणाम देता है। ईमानदार व्यक्ति समाज के गौरव होते हैं। ईमानदार व्यक्ति का यश सूर्य के समान चमकता है। धन के प्रति मोह त्यागकर, लालच में न फँसकर ही सम्मानपूर्वक जिया जा सकता है। ऐसा जीवन जीने वाले ही सच्चा जीवन जीते हैं।

नीचे दिए गए प्रश्नों के सही विकल्प पर सही (✓) का चिह्न लगाइए—

(क) आधुनिक युग में किसे अधिक महत्त्व दिया जाने लगा है?
(i) धन को (ii) बल को (iii) विद्या को (iv) ईमानदारी को

(ख) धन की आवश्यकता किसलिए होती है?
(i) खान-पान के लिए (ii) रहन-सहन के लिए
(iii) वस्त्र-मकान के लिए (iv) तीनों विकल्प सही हैं

(ग) जीवन में सबसे महत्त्वपूर्ण क्या है?
(i) सम्मानपूर्वक जीना (ii) धनी बनकर जीना
(iii) बेईमानी से जीना (iv) निश्चिन्त होकर जीना

(घ) निम्नलिखित शब्दों में से कौन-सा शब्द भाववाचक संज्ञा है?
(i) ईमानदार (ii) ईमानदारी (iii) भ्रष्टाचार (iv) भ्रष्टाचारी

2. निम्नलिखित पद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर उस पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए—

समय बहुत ही मूल्यवान है, व्यर्थ कभी मत खोना,
चला गया तो समय लौटकर, कभी नहीं फिर आता।
धन खो जाता, श्रम करने से फिर मनुष्य है पाता,
स्वास्थ्य बिगड़ जाने पर, उपचारों से है बन जाता।
विद्या खो जाती, फिर भी पढ़ने से है आ जाती,
लेकिन खो जाने से मिलती नहीं समय की थाती।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए—

(क) कवि किसे मूल्यवान कह रहे हैं?

(ख) दूसरी पंक्ति में समय के बारे में क्या विशेष रूप से कहा गया है?

(ग) उपर्युक्त पंक्तियों के अनुसार धन, स्वास्थ्य तथा विद्या खो जाने पर भी कैसे मिल जाते हैं?

(घ) काव्यांश का उपयुक्त शीर्षक दीजिए।

PERIODIC TEST : Term 1

(अध्याय 1 से 7 पर आधारित)

नोट–सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

समय : .....

पूर्णांक : .....

(क) सही विकल्प पर सही (✓) का चिह्न लगाइए—

1. भावों तथा विचारों के आदान-प्रदान के साधन को क्या कहते हैं?
   (i) व्याकरण ☐ (ii) भाषा ☐ (iii) लिपि ☐
2. भाषा की सबसे छोटी इकाई है—
   (i) वर्ण ☐ (ii) व्यंजन ☐ (iii) शब्द ☐
3. वाक्य में प्रयुक्त होने पर शब्द कहलाता है—
   (i) पदबन्ध ☐ (ii) पद ☐ (iii) योगरूढ़ ☐
4. गुण, दोष, भाव, दशा, स्वभाव आदि का बोध कराने वाले शब्द होते हैं—
   (i) जातिवाचक संज्ञा ☐ (ii) व्यक्तिवाचक संज्ञा ☐ (iii) भाववाचक संज्ञा ☐

(ख) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—

1. भाषा को लिखने का ढंग ..... कहलाता है।
2. श, ष, स, ह ..... व्यंजन हैं।
3. जिन शब्दों के एक से अधिक अर्थ होते हैं, उन्हें ..... शब्द कहते हैं।
4. पुरुष जाति का बोध कराने वाले शब्द ..... कहलाते हैं।
5. संख्या के आधार पर हिन्दी में ..... वचन होते हैं।

(ग) सही वाक्य के सामने सही (✓) तथा गलत वाक्य के सामने पर गलत (✗) का चिह्न लगाइए—

1. भारत की राजभाषा हिन्दी है। ☐
2. दीर्घ स्वर सात हैं। ☐
3. प्रयोग के आधार पर शब्दों के चार भेद होते हैं। ☐
4. किसी व्यक्ति/प्राणी, स्थान, वस्तु या भाव के नाम को संज्ञा कहते हैं। ☐
5. कारक के आठ भेद होते हैं। ☐

(घ) निम्नलिखित शब्दों के स्त्रीलिंग रूप लिखिए—

1. मोर ..... 2. शिष्य .....
3. शिक्षक ..... 4. नौकर .....

(ङ) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए—

1. कारक की परिभाषा दीजिए।
2. वचन किसे कहते हैं?
3. व्यक्तिवाचक संज्ञा किसे कहते हैं?

HALF-YEARLY Test Paper

(अध्याय 1 से 14 पर आधारित)

समय : .....

पूर्णांक : .....

नोट–सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

(क) सही विकल्प पर सही (✓) का चिह्न लगाइए—

1. 'बाहर कोई खड़ा है।' वाक्य में 'कोई' सर्वनाम का कौन-सा भेद है?

   (i) अनिश्चयवाचक ☐ (ii) पुरुषवाचक ☐ (iii) प्रश्नवाचक ☐

2. प्रविशेषण किसकी विशेषता बतलाता है?

   (i) विशेषण ☐ (ii) संज्ञा ☐ (iii) सर्वनाम ☐

3. किसी काम के करने या होने की सूचना देने वाले शब्द कहलाते हैं—

   (i) क्रिया ☐ (ii) काल ☐ (iii) वाच्य ☐

4. 'गुणवान' शब्द में प्रयुक्त प्रत्यय है—

   (i) इन ☐ (ii) वान ☐ (iii) आन ☐

5. संविधान में हिन्दी को किस रूप में मान्यता दी गई है?

   (i) सम्पर्क भाषा के ☐ (ii) राजभाषा के ☐ (iii) राष्ट्रभाषा के ☐

(ख) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—

1. क्रिया के होने के समय की जानकारी हमें ..... से मिलती है।
2. संज्ञा के स्थान पर प्रयोग किया जाने वाला शब्द ..... कहलाता है।
3. शुद्ध बोलना और लिखना सीखने में ..... हमारी सहायता करता है।
4. ..... का उच्चारण नाक से होता है।
5. जिस पद से अलग होने का भाव प्रकट होता है, उसमें ..... कारक होता है।

(ग) निम्नलिखित तत्सम शब्दों का तद्भव शब्दों से मिलान कीजिए—

1. मयूर	(i) गाय
2. अग्नि	(ii) सूरज
3. सूर्य	(iii) मोर
4. गौ	(iv) आग

(घ) निम्नलिखित शब्दों को बहुवचन रूप में बदलिए—

1. बस्ता ..... 2. पतंग .....
3. पंखा ..... 4. दिन .....

5. माला ..... 6. गुरु .....

7. कवि ..... 8. राखी .....

(ङ) निम्नलिखित वाक्यों के लिए 'अकर्मक' या 'सकर्मक' लिखिए—

1. सौम्या खिलौनों से खेल रही है। .....
2. सब रातभर जागते रहे। .....
3. वृक्ष झुका हुआ खड़ा था। .....
4. सूर्य संसार को प्रकाश देता है। .....
5. विदिशा लता को कहानी सुना रही है। .....

(च) संकेत के अनुसार क्रिया का काल बदलिए—

1. रोहित दिल्ली गया था। (वर्तमान काल) .....
2. मजदूर सड़क पर काम कर रहे हैं। (भविष्यत्काल) .....
3. अध्यापिका कक्षा में पढ़ा रही हैं। (भूतकाल) .....
4. संयोग पढ़ने के लिए विदेश जाएगा। (वर्तमान काल) .....
5. मैं अपना गृहकार्य करूँगा। (भूतकाल) .....

(छ) निम्नलिखित वाक्यों के वाच्य लिखिए—

1. संजय चाय बना रहा है। .....
2. पिताजी अखबार पढ़ते हैं। .....
3. महिलाएँ गीत गा रही हैं। .....
4. छात्र पुस्तक पढ़ते हैं। .....
5. मोहित से खेला नहीं जाता। .....

(ज) निम्नलिखित शब्दों में उपयुक्त उपसर्ग लगाकर दो-दो नये शब्द बनाइए—

1. गुण .... 2. ज्ञान ....
3. तन्त्र .... 4. जीवन ....
5. डर .... 6. कर्म ....

(झ) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए—

1. व्याकरण हमें क्या सिखाता है?
2. विकारी और अविकारी शब्दों के नाम लिखिए।
3. समास किसे कहते हैं।
4. काल का क्या अर्थ है? इसके कितने भेद होते हैं?
5. विशेषण किसे कहते हैं? इसके कितने भेद होते हैं?

PERIODIC TEST Term 2

(अध्याय 1 से 21 पर आधारित)

समय : .....

पूर्णांक : .....

नोट–सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

(क) सही विकल्प पर सही (✓) का चिह्न लगाइए—

1. किसी वस्तु की नाप-तौल बताने वाला विशेषण कहलाता है—
   (i) गुणवाचक ☐ (ii) परिमाणवाचक ☐ (iii) संख्यावाचक ☐
2. 'महेश्वर' में कौन-सी सन्धि है?
   (i) दीर्घ सन्धि ☐ (ii) गुण सन्धि ☐ (iii) व्यंजन सन्धि ☐
3. रचना के आधार पर वाक्य के भेद हैं—
   (i) तीन ☐ (ii) चार ☐ (iii) आठ ☐
4. समश्रुत भिन्नार्थक शब्द का सही उदाहरण है—
   (i) अनिल-अमल ☐ (ii) अनल-अनिल ☐ (iii) अनल-अमल ☐

(ख) भाववाचक संज्ञा से रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए—

1. गणतन्त्र-दिवस पर वायुयानों की ..... देखने योग्य थी। (उड़ना)
2. कुतुबमीनार की ..... देखकर आश्चर्य होता है। (ऊँचा)
3. सुनयना को भीड़ में ..... होने लगती है। (घबराना)
4. श्रीकृष्ण और सुदामा की ..... पर सभी को गर्व है। (मित्र)
5. रामू की ..... देखकर तरस आ गया। (गरीब)

(ग) निम्नलिखित शब्द-समूहों के लिए समस्त पद लिखकर समास का नाम भी लिखिए—

1. पेट भरकर ....
2. कबीर द्वारा रचित ....
3. भवानी और शंकर ....
4. गुण से युक्त ....
5. माता का भक्त ....

(घ) निम्नलिखित प्रत्ययों का प्रयोग करके दो-दो शब्द बनाइए—

1. इका ....
2. इमा ....
3. ईय ....
4. मय ....
5. आई ....
6. ईला ....

(ङ) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए—

1. 'सकर्मक क्रिया' से आप क्या समझते हैं।
2. विराम-चिह्न किसे कहते हैं? प्रमुख विराम-चिह्नों के नाम लिखिए।
3. पर्यायवाची शब्द किन्हें कहते हैं?

ANNUAL Test Paper

समय : .....

पूर्णांक : .....

नोट-सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

(क) सही विकल्प पर सही (✓) का चिह्न लगाइए—

1. 'रावण' के लिए पर्यायवाची शब्द है—

   (i) देवराज ☐ (ii) दशावतार ☐ (iii) दशानन ☐

2. 'सेब बहुत मीठा होता है।' यहाँ 'बहुत' शब्द ..... है।

   (i) विशेषण ☐ (ii) विशेष्य ☐ (iii) प्रविशेषण ☐

3. द्वन्द्व समास वाले शब्दों और शब्द-युग्मों के बीच प्रयुक्त चिह्न है—

   (i) विस्मयसूचक चिह्न ☐ (ii) अल्पविराम ☐ (iii) योजक-चिह्न ☐

4. सदा बहुवचन के रूप में प्रयोग किया जाने वाला शब्द है—

   (i) आकाश ☐ (ii) प्राण ☐ (iii) हवा ☐

5. शब्द के अन्त में लगने वाला शब्दांश कहलाता है—

   (i) उपसर्ग ☐ (ii) मूलशब्द ☐ (iii) प्रत्यय ☐

(ख) सही वाक्य के सामने सही (✓) तथा गलत वाक्य के सामने गलत (✗) का चिह्न लगाइए—

1. वाक्य में क्रिया काम के होने की या करने की सूचना देती है। ☐
2. जिन वाक्यों में दो कर्म होते हैं उन्हें एककर्मक कहते हैं। ☐
3. अंग्रेजी भाषा की लिपि फ़ारसी है। ☐
4. शब्द के पहले लगने वाले शब्दांश उपसर्ग कहलाते हैं। ☐
5. दो वर्णों के मेल को सन्धि कहते हैं। ☐

(ग) कोष्ठक में से उचित शब्द चुनकर रिक्त स्थान भरिए—

1. पक्षी अपने ..... में बैठे हैं। (*नीर, नीड़*)
2. सुदामा ..... ब्राह्मण थे। (*दिन, दीन*)
3. मैं मन्दिर से ..... लेकर आया। (*प्रसाद, प्रासाद*)
4. राघव का व्यवहार ..... है। (*निश्चल, निश्छल*)
5. तुलसीदास ने 'श्रीरामचरितमानस' ..... भाषा में लिखी। (*अवधी, अवधि*)

(घ) निम्नलिखित शब्दों के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखिए—

पर्वत	.....	.....	अग्नि	.....	.....
आकाश	.....	.....	धरती	.....	.....
सूर्य	.....	.....	कमल	.....	.....

(ङ) निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए—

अपना	.....	आदान	.....
गुण	.....	आदर	.....
उपकार	.....	सुख	.....

(च) निम्नलिखित मुहावरों के अर्थ लिखिए—

1. अँगूठा दिखाना .....
2. आँखों का तारा .....
3. कमर कसना .....
4. पेट में चूहे कूदना .....

(छ) निम्नलिखित वाक्यों में से क्रियाएँ छाँटकर लिखिए—

1. अब हम खेलेंगे। .....
2. देखो, डाकिया आ रहा है। .....
3. तुम ठीक कहते हो। .....
4. नेहा विद्यालय जाती है। .....
5. मैं देशसेवा की प्रतिज्ञा करता हूँ। .....

(ज) निम्नलिखित शब्दों में से मूल शब्द, प्रत्यय तथा उपसर्ग अलग-अलग कीजिए—

	उपसर्ग	मूल शब्द	प्रत्यय
दुस्साहसी	.....	.....	.....
सफलता	.....	.....	.....
निडरता	.....	.....	.....
अधार्मिक	.....	.....	.....
स्वकर्मी	.....	.....	.....

(झ) अपने मित्र को उसके जन्मदिन की शुभकामनाएँ भेजते हुए पत्र लिखिए।

या

निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर निबन्ध लिखिए–

1. दीपावली 2. मेरा प्रिय मित्र 3. विद्यार्थी और अनुशासन

An imprint of Vidya Prakashan Mandir (P) Ltd.

व्याकरण सुमन

पुस्तक-शृंखला के सन्दर्भ में...

भाषा विचार-विनिमय व अभिव्यक्ति का माध्यम है। हिन्दी जनसंपर्क की एक सशक्त भाषा के रूप में उभरी है। उसी भाषा को प्रभावी माना जाता है जो व्याकरण के नियमों का पालन करती हो। अत: प्रारम्भिक स्तर पर व्याकरण की एक ऐसी पुस्तक की आवश्यकता है, जो हिन्दी व्याकरण के जटिल नियमों को सरल, सरस व आकलन योग्य बना सके तथा उसकी बारीकियों का समुचित ज्ञान करा सके। इस चुनौती को ध्यान में रखकर इस शृंखला की रचना की गयी है।

शृंखला की मुख्य विशेषताएँ निम्नवत् हैं—

- स्तरानुकूल सरल से कठिन की ओर बढ़ता ज्ञान।
- सरल भाषा, आकर्षक चित्र तथा दैनिक जीवन से जुड़े उद्धरण।
- खेल-खेल में व्यावहारिक भाषा के माध्यम से व्याकरण के नियमों का सहज ज्ञान।
- स्वयं प्रयोग से सीखने पर बल।

प्रत्येक प्रकरण से बच्चे जो कुछ सीख पाए, उसका आकलन करने के लिए 'अभ्यास' शीर्षक के अन्तर्गत विविध प्रश्नों का समावेश किया गया है। यह शृंखला अब तक चली आ रही व्याकरण-नियम की रटंत-विद्या से मुक्ति दिलाने में अवश्य ही मील का पत्थर सिद्ध होगी। हमें आशा है कि यह पुस्तक-शृंखला विद्यार्थियों के लिए अत्यन्त उपयोगी व अध्यापकगणों के लिए सहज स्वीकार्य होगी।

BRILLIANT BOOKS

ISBN 9789389606690

₹275